भारतीय रेल

अक्टूबर 2022

मूल्य ₹ 20

नेक्स्ट जेनरेशन सेमी हाई स्पीड

वंदे भारत एक्सप्रेस





180 किमी/घंटे की अधिकतम ट्रायल स्पीड



आपातकालीन टॉक बैक बटन



सभी श्रेणियों में साइड रिक्लाइनर सीट

AAL®

Autometers Alliance Ltd

Energy & Efficiency / Safety & Reliability



POWERING THE **RAIL TRANSPORT** EFFICIENTLY AND INTELLIGENTLY

POWER ELECTRONICS & PROPULSION SYSTEM



IGBT based Hotel Load Converter
2×500 kVA for Electric Locomotives
(AC propulsion)



IGBT based Auxiliary Converter
3×130 kVA for Electric Locomotives
(AC propulsion)



IGBT based Static Converter
180 kVA for Electric Locomotives
(AC propulsion)



GTO based Auxilliary Converter
300 kVA 1Φ to 3Φ for Electric
Locomotives (AC propulsion)



IGBT based Underslung Converter
25 kVA SGC for Railway Passenger
Coaches



IGBT based Underslung Converter
25 kVA HOG for Railway Passenger
Coaches



IGBT based Underslung
Converter 50 kVA
for Metro Railways



IGBT based - Underslung
Converter 5 kW
for Metro Railways



IGBT based Battery Charger
30 kW Pre-cooling
for SGAC Coaches



IGBT based SMPS Battery
Charger 4.5 kW + 2.5 kW
for LHB Coaches



IGBT based SMPS Battery
Charger 6.5 kW
for LHB Coaches



IGBT based Underslung
Converter 100 kVA
for Metro Railways

mktre@autometers.com | C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India

ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

आरंभ : 1960 | वर्ष : 63 | अंक : 03 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | अक्टूबर-2022 | मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री विनय कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री मोहित सिन्हा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री आर. एन. सिंह
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री अमिताभ शर्मा
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

संपादन सहयोग
रणमत सिंह

आवरण
नेक्स्ट जेनरेशन सेमी हाई स्पीड
वंदेभारत एक्सप्रेस-2.0

फॉलो करें
Twitter : @bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क
(ऑफलाइन)
सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200
विदेश में
सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500
एक प्रति-₹20
वार्षिक विशेषांक-₹70

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

5 **प्रधानमंत्री द्वारा गांधीनगर से मुंबई के बीच**
नई वंदेभारत एक्सप्रेस का शुभारंभ

9 **प्रधानमंत्री ने तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड नई ब्रॉड**
गेज लाइन की आधारशिला रखी

10 **प्रधानमंत्री ने कोच्चि में भारतीय रेल की विभिन्न**
परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया

11 **प्रधानमंत्री ने केएसआर बेंगलुरु स्टेशन पर प्लास्टिक की**
व्यर्थ बोतलों से बनी मूर्तिकला के लिए रेलवे की सराहना की

12 **कैबिनेट ने दी छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, नई दिल्ली,**
तथा अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास को मंजूरी

14 **केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'पीएम गति शक्ति' ढांचे को लागू करने हेतु**
रेलवे भूमि को दीर्घकालिक पट्टे पर देने की नीति को मंजूरी दी

16 **रेल मंत्री द्वारा साबरमती एवं अहमदाबाद में हाई स्पीड रेल**
स्टेशनों का निरीक्षण और कार्य की प्रगति की समीक्षा

17 **भारतीय रेल में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन**

18 **नागालैंड के मुख्यमंत्री ने डोनी पोलो एक्सप्रेस की**
विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

19 **केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री द्वारा सीताफलमंडी**
रेलवे स्टेशन पर तीन लिफ्ट का लोकार्पण व निरीक्षण

20 **महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री व रेल राज्यमंत्री द्वारा**
न्यू आष्टी-अहमदनगर नई लाइन का उद्घाटन

21 **रेलवे सुरक्षा बल ने उत्साहपूर्वक मनाया अपना**
38वां स्थापना दिवस

23 **विविध मंत्रियों, सांसदों द्वारा की गई समीक्षा बैठकें तथा उद्घाटन**

29 **अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा**
कटरा-बनिहाल खंड पर चल रहे कार्य का निरीक्षण

31 **मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर**
परिवहन का नया चेहरा साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब

33 **उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना**
ने लोगों को रोजगार, समृद्धि और संपर्क प्रदान किया

37 **डिजिटल इंडिया पहल को बढ़ावा देती भारतीय रेल**

40 **भारतीय रेल की अगस्त, 2022 तक पिछले वर्ष की इसी**
अवधि की तुलना में कुल राजस्व में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई

43 **रेलवे ट्रैक परियोजनाओं को जल्द पूरा करने को**
प्राथमिकता दे रही है भारतीय रेल

44 **भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयों की 2022-23 में**
रिकॉर्ड उत्पादन हासिल करने की प्रक्रिया में तेजी

45 **रेलों के अंचल से**

52 **खेलों में भारतीय रेल**

59 **जब महारानी सडिका में आईं ...** — श्री जी. वी. वेंक्टेसन

60 **नागपुर के रेल डायमंड क्रॉसिंग का रहस्य** — श्री विमलेश चन्द्र

62 **कुरुक्षेत्र** — श्री मनीष बाजपेई

64 **राष्ट्रीय विकास और भारतीय भाषाएं** — श्री प्रेमपाल शर्मा

66 **बाजीगर** — श्री संदीप शर्मा

69 **एक शाम अकेली-सी** — सुश्री कल्पना मनोरमा

सम्पादकीय



अमृतकाल में आगे बढ़ती आत्मनिर्भर भारतीय रेल

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय रेल सही मायनों में 'नेक्स्ट जेनरेशन' दौर की ओर तेज गति से दौड़ रही है। इसके उत्तम उदाहरण हाल ही में नेक्स्ट जेनरेशन सेमी हाई स्पीड वंदे भारत एक्सप्रेस का ट्रैक पर उतरना तथा विश्व स्तरीय रेलवे स्टेशनों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए नई दिल्ली, अहमदाबाद तथा छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस रेलवे स्टेशन का रि-डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को मंजूरी देना है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितम्बर, 2022 को गांधीनगर कैपिटल से मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह देश की तीसरी तथा वर्जन-2 वंदे भारत एक्सप्रेस है। विशेष बात यह है कि उन्होंने गांधीनगर कैपिटल से अहमदाबाद रेलवे स्टेशन तक इसी ट्रेन में सफर भी किया।

प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण करने पश्चात् शायद यह पहला मौका था जब आप ने ट्रेन यात्रा की। यह यात्रा भले ही 34 किमी की ही रही हो, परंतु यह भारतीय रेल तथा देशवासियों के लिए काफी उत्साहवर्धक रही। अमृतकाल में आत्मनिर्भर भारतीय रेल आगे बढ़ रही है। 'मेक इन इंडिया' के तहत वंदे भारत ट्रेनों का सफल निर्माण कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रथम वंदे भारत एक्सप्रेस का उद्घाटन 15 फरवरी, 2019 को नई दिल्ली-वाराणसी वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर किया था।

15 अगस्त, 2021 को लालकिले से राष्ट्र को दिए अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा था कि देश ने संकल्प लिया है कि 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' के 75 सप्ताह में 75 वंदे भारत ट्रेनें देश के हर कोने को आपस में जोड़ रही होंगी। भारतीय रेल की टीम पूरी निष्ठा से 15 अगस्त, 2023 तक इस संकल्प को पूर्ण करने पर कार्य रही है, जिसका उत्तम उदाहरण तीसरी वंदे भारत एक्सप्रेस है।

श्री मोदी ने पुनर्विकसित गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन का 16 जुलाई, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उद्घाटन किया था। तीसरी वंदे भारत एक्सप्रेस के उद्घाटन से पहले प्रधानमंत्री जी ने इस स्टेशन की सुविधाओं का भी जायजा लिया।

भारतीय रेल अपने यात्रियों को स्टेशनों पर भी अत्याधुनिक विश्वस्तरीय सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए प्रयासरत् है। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने नई दिल्ली, अहमदाबाद तथा छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस रेलवे स्टेशन के रि-डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के लिए रुपये 10 हजार करोड़ की मंजूरी दी है। वर्तमान में 199 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास का काम चल रहा है। इनमें से 47 स्टेशनों के लिए टेंडर जारी कर दिए गए हैं। बाकी स्टेशनों के लिए मास्टर प्लानिंग और डिजाइन का काम चल रहा है। 32 स्टेशनों पर तेजी से काम हो रहा है।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। आपके सुझाव हमारे लिए हमेशा मार्गदर्शक बनते हैं। यह पत्रिका आप भी पढ़ें तथा अन्य लोगों को पढ़ने के लिए दें जिससे अधिक से अधिक लोग भारतीय रेल के विकास कार्यों से अवगत हो सकें।



प्रधानमंत्री द्वारा गांधीनगर से मुंबई के बीच नई वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ



गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन से गांधीनगर-मुंबई वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, साथ में हैं गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत तथा केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 30 सितम्बर, 2022 को गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन से गांधीनगर-मुंबई वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इससे पहले प्रधानमंत्री ने वंदे भारत एक्सप्रेस 2.0 के ट्रेन के डिब्बों, लोकोमोटिव इंजन के कंट्रोल सेंटर तथा ऑनबोर्ड सुविधाओं का जायजा लिया। यह देश की तीसरी तथा गुजरात में चलने वाली पहली वंदे भारत एक्सप्रेस है।

श्री मोदी ने इसी ट्रेन से गांधीनगर से अहमदाबाद रेलवे स्टेशन तक की यात्रा की। इस यात्रा में प्रधानमंत्री के साथ गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी भी साथ थे। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने अन्य लोगों के साथ-साथ उन्होंने वंदे भारत ट्रेनों के निर्माण कार्य में कड़ी मेहनत करने वाले रेल कर्मचारियों के साथ भी बातचीत कर उनका उत्साह बढाया।

अहमदाबाद पहुँचने के पश्चात् जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा आज 21वीं सदी के भारत के लिए, अर्बन कनेक्टिविटी के लिए और आत्मनिर्भर होते भारत के लिए एक बहुत बड़ा दिन है। थोड़ी देर पहले मैंने गांधीनगर-मुंबई, वंदे भारत एक्सप्रेस की तेज रफ्तार सफर का अनुभव किया है। यह सफर था तो कुछ मिनटों का ही, लेकिन ये मेरे लिए बहुत गौरव के क्षण थे। यह देश की तीसरी और गुजरात की पहली वंदेभारत ट्रेन है। कालुपुर स्टेशन से कालुपुर मेट्रो स्टेशन और फिर वहां से अहमदाबाद मेट्रो की सवारी करते हुए मैं थलतेज पहुंचा यानि कोई बाहर से वंदेभारत से आ रहा हो तो उसके बाद सीधे मेट्रो से अपने घर जा सकता है।

डिपार्टमेंट के लोग कई खूबियाँ बताते रहते हैं, एडवर्टाइजमेंट भी करते हैं। कितनी स्पीड है, क्या व्यवस्था है सब। लेकिन एक पहलू जिसकी ओर शायद उनका ध्यान नहीं गया, जो मुझे अच्छा लगा कि यह जो वंदे भारत ट्रेन है, मैं कोई गणितज्ञ या वैज्ञानिक नहीं हूं, लेकिन मैं अंदाजा लगा सकता हूं कि हवाई जहाज में यात्रा करते समय अंदर जितनी आवाज आती है, वंदे भारत में वो आवाज शायद सौंवे हिस्से की हो जाती है। विमान में बातचीत करने में दिक्कत होती है, लेकिन वंदे भारत में मैं लोगों से आराम से बातचीत कर रहा था। इसका मतलब जो लोग हवाई जहाज के आदी हैं, उनको अगर इस विषय में ज्ञान हो जाएगा, तो मैं पक्का मानता हूं कि वो हवाई जहाज से नहीं वंदे भारत ट्रेन पसंद करेंगे।

21वीं सदी के भारत के शहरों को नई गति मिलने वाली है। हमें बदलते समय और जरूरतों के साथ अपने शहरों को भी आधुनिक बनाना जरूरी है। ट्रांसपोर्ट सिस्टम आधुनिक हो, सीमलेस कनेक्टिविटी हो, यातायात का एक साधन दूसरे को सपोर्ट करे, यह बहुत आवश्यक है। आज गांधीनगर रेलवे स्टेशन दुनिया के किसी भी एयरपोर्ट से कम नहीं है और भारत सरकार ने अहमदाबाद रेलवे स्टेशन को भी आधुनिक बनाने की स्वीकृति दे दी है।



वंदे भारत से गांधीनगर से अहमदाबाद तक की यात्रा का आनंद लेते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी साथ में हैं राज्यपाल, गुजरात श्री आचार्य देवव्रत, मुख्यमंत्री, गुजरात श्री भूपेंद्र पटेल, केन्द्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी एवं रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

सामान्य एक्सप्रेस ट्रेन अहमदाबाद से मुंबई पहुंचने में करीब-करीब सात-साढ़े सात, आठ-साढ़े आठ घंटे लगा देती है। शताब्दी ट्रेन भी कभी छह-साढ़े छह, सात-साढ़े सात घंटे तक समय ले लेती है। लेकिन वंदेभारत ट्रेन ज्यादा से ज्यादा साढ़े पांच घंटे में ही अहमदाबाद से मुंबई पहुंचा देगी। इसमें और सुधार होने वाला है। आज जब मैं चेन्नई में बन रही वंदे भारत ट्रेन को बनाने वाले इंजीनियर्स, इलेक्ट्रिशियन वॉयरमैन, फिटर आदि से मिला और मैंने उनसे पूछा, तो वे बोले साहब, आप हमें काम दीजिए, हम इससे भी अच्छा बनाएंगे, इससे भी तेज बनाएंगे और जल्दी से बनाएंगे। मेरे देश के इंजीनियर्स, टेक्नीशियंस, इनका ये आत्मविश्वास, ये भरोसा मुझे इस बात पर विश्वास से कहने के लिए प्रेरित करता है कि देश इससे भी तेज गति से बढ़ने वाला है। यही नहीं, बाकी ट्रेनों की तुलना में इसमें ज्यादा यात्री सफर कर पाएंगे। मैं एक बार काशी के स्टेशन पर पूछ रहा था कि भई, वंदे भारत ट्रेन का क्या एक्सपीरियंस है? बोले, सबसे ज्यादा टिकटे वंदे भारत की बिक रही हैं। मैंने कहा, वो कैसे संभव है? बोले, साहब, गरीब-मजदूर लोग इससे जाना पसंद करते हैं। मैंने कहा, क्यों? बोले, साहब, दो लॉजिक है। एक-लगेज, अंदर काफी जगह है ले जाने के लिए और दूसरा, इतना जल्दी पहुंच जाते हैं कि जाकर के काम करते हैं तो उतने घंटे में टिकट का जो पैसा है, वो भी निकल जाता है।

गति को लेकर ये आग्रह आज गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान में भी दिखता है, नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी में भी दिखता है, और रेलवे की गति को बढ़ाने के अभियान में भी स्पष्ट होता है। आज देश का रेल नेटवर्क आज मेड इन इंडिया, वंदे भारत ट्रेन को चलाने के लिए तेजी से तैयार हो रहा है। 180 किलोमीटर प्रतिघंटा तक की रफ्तार पकड़ने वाली ये ट्रेनें भारतीय रेल की दिशा भी बदलेंगी, ये मेरा पूरा विश्वास है। अगले साल अगस्त महीने तक 75 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें चलाने के लक्ष्य पर हम तेजी से काम कर रहे हैं।

भारत की वंदे भारत ट्रेन की खूबी यह है कि ये मात्र 52 सेकेंड में 100 किमी प्रति घंटे की गति पकड़ लेती है। आज देश के रेल नेटवर्क का बहुत बड़ा हिस्सा मानव रहित फाटकों से मुक्त हो चुका है। ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर जब तैयार हो जाएगा तो मालगाड़ी की स्पीड भी बढ़ेगी और पैसेंजर ट्रेनों में होने वाली देरी भी कम होगी। और जब मालगाड़ियों की स्पीड बढ़ेगी तो गुजरात के जो बंदरगाह वो इससे कई गुणा ज्यादा तेजी से काम करना शुरू करेंगे। हिन्दुस्तान दुनियाभर में पहुंचने लग जाएगा।



वंदे भारत की शानदार सफलता को साकार करने वाले सवारी डिब्बा कारखाना, चेन्नई के इंजीनियरों एवं अन्य कर्मियों के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

वंदेभारत एक्सप्रेस के पहले रैक और वर्तमान रैक में अंतर



- गति को तुरंत बढ़ाने/घटाने हेतु ईएमयू रैक की तरह इस रैक में भी बीच में नॉन-ड्राइविंग ट्रेलर कोच का इंडिविजुअल यूनिट लगाकर फॉर्मेशन में बदलाव किया गया है।
- 160 किमी प्रति घंटे की गति तक पहुँचने में पहले ट्रेन को 145 सेकंड का समय लगता था। अब यह 140 सेकंड में पहुँच जाएगी।
- बिजली के सारे कनेक्शन विफल होने की स्थिति में लाइटिंग की व्यवस्था हेतु प्रत्येक कोच में चार इमर्जेंसी लाइट लगाई गई है। पहले रैक में एक भी नहीं थी।
- कोच के बाहर पहले के 2 की तुलना में 4 प्लेटफॉर्म साइड कैमरे लगाए गए हैं, जिनमें रियर व्यू कैमरे भी शामिल हैं।
- रोगाणु मुक्त हवा की आपूर्ति के लिए यूवी लैंप युक्त उच्च दक्षता वाले कंप्रेसर का उपयोग करके हीट वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग का बेहतर नियंत्रण किया जाता है। यह व्यवस्था पहले के रैक में नहीं थी।
- वर्तमान कोचों को बेहतर ट्रेन नियंत्रण प्रबंधन का लेवल- II सुरक्षा इंटीग्रेशन प्रमाणन प्राप्त है।
- साइड वॉल पर वेंटिलेशन डक्ट अलग से है। यह पहले ट्रैक्शन मोटर का एक भाग था।
- वे-साइड स्टेशनों के साथ सिग्नल के आदान-प्रदान हेतु कोच में 2 सिग्नल एक्सचेंज लाइट हैं।
- सभी कोचों में एरोसोल फायर सप्रेशन सिस्टम पर आधारित फायर डिटेक्शन सिस्टम है। इससे अग्नि संरक्षा प्रणाली में बेहतर सुधार हुआ। पहले के कोचों में केवल स्मोक डिटेक्शन सिस्टम था।
- प्रत्येक कोच में पहले के 24 इंच के बजाय अब 32 इंच का बड़ा यात्री सूचना और इंफोटेनमेंट सिस्टम है।
- जीएसएम/जीपीआरएस के माध्यम से एयर कंडीशनिंग, संचार, नियंत्रण केंद्र/रखरखाव कर्मचारियों को फीडबैक आदि की निगरानी करने हेतु बेहतर कोच नियंत्रण प्रबंधन प्रणाली है।
- यात्रियों के लिए 3.5 राइडिंग इंडेक्स की बेहतर, आरामदायक और सुविधापूर्ण यात्रा।
- प्रत्येक कोच में 4 आपातकालीन खिड़कियां जोड़ी गई हैं।
- 160 किमी प्रति घंटे पर रेसिडुअल एक्सिलरेशन पहले 0.1 मीटर/सेकंड था, अब 0.05 मीटर/सेकंड है।
- अंडर-स्लंग बिजली के उपकरणों की फ्लड प्रूफिंग में काफी सुधार किया गया है। इससे पहले की 400 मिमी की तुलना में अब 650 मिमी की ऊंचाई तक की बाढ़ में भी ये उपकरण चालू रहेंगे।
- इलेक्ट्रिकल सेफ्टी हेतु पहले के क्लॉस 2 और 3 सर्ज अरेस्टर्स के बदले क्लॉस 3 और 4 सर्ज अरेस्टर्स लगाए गए हैं।
- इस रैक में वॉयस रिकॉर्डिंग सुविधा युक्त ड्राइवर-गार्ड संचार प्रणाली है।
- इस रैक में 'कवच' (ट्रेन टक्कर बचाव प्रणाली) लगाया गया है।
- दृष्टिबाधित यात्रियों के सहायतार्थ सीटों के हैंडल में ब्रेल अक्षरों में सीट संख्या अंकित की गई है।



वंदे भारत एक्सप्रेस 2.0 की मुख्य विशेषताएं



बेहतरीन दृश्य और यात्रियों के आवागमन में सुविधा के लिए गैंगवे

स्लाइडिंग पायदान के साथ ऑटोमैटिक प्लग डोर्स



आपातकालीन निकास के साथ सतत् सील्ड खिड़कियां





सौंदर्य में वृद्धि के लिए छतों पर लहरदार पैनल



विशेष वातानुकूलन डक्ट, ताकि वातानुकूलन समान रूप से हो। तापमान अनुकूलन के लिए ऑटोमेटिक सेंसर

पार्टीशन के लिए विद्युत आधारित स्पर्श रहित दरवाजे



दीवार में लग जाने वाली मुड़ने वाली सीट





कंपार्टमेंट के अंदर अलार्म बटन



बैठने के स्थान के अंदर एवं बाहर आपातकालीन टॉक बैक बटन

वायुयान जैसी शांत एम्बियंस वाली एलइडी प्रकाश व्यवस्था



प्रत्येक सीट के लिए चार्जिंग प्वाइंट





एग्जीक्यूटिव क्लास के लिए रिवाल्विंग सीट



प्रत्येक डिब्बे में मिनी पैंट्री

दिव्यांग रेल यात्रियों के लिए विशेष शौचालय



प्रधानमंत्री ने तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड नई ब्रॉड गेज लाइन की आधारशिला रखी

प्रधानमंत्री ने वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के 62 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू महेसाणा खण्ड और 13 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू चटोदर खण्ड को राष्ट्र को समर्पित किया



तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड न्यू ब्रॉड गेज लाइन की आधारशिला तथा पालनपुर-न्यू महेसाना खंड एवं न्यू पालनपुर-न्यू चटोदर खंड को राष्ट्र को समर्पित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी साथ में हैं रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव एवं रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितम्बर, 2022 को अंबाजी में ₹7,200 करोड़ से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की आधारशिला रखी और उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने 'प्रसाद योजना' के तहत तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड न्यू ब्रॉड गेज लाइन और अंबाजी मंदिर में तीर्थ सुविधाओं के विकास की भी आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री ने वेस्टर्न फ्रेट डेडिकेटेड कॉरिडोर के 62 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू महेसाणा सेक्शन और 13 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू चटोदर सेक्शन (पालनपुर बाईपास लाइन) को भी राष्ट्र को समर्पित किया।

प्रधानमंत्री ने जानकारी देते हुए बताया कि तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड लाइन की परिकल्पना सन् 1930 में ब्रिटिश शासन के दौरान की गई थी। इसकी आवश्यकता 100 साल पहले पहचानी गई थी, लेकिन दुर्भाग्य से इतने लंबे समय में ऐसा नहीं किया जा सका। यह हमारा सौभाग्य है कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के वर्ष में हमें इसे अम्बा माता के चरणों में समर्पित करने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने बताया कि इस रेल लाइन और बाइपास से इलाके को ट्रैफिक जाम से मुक्ति और मार्बल उद्योग को भी मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर से क्षेत्र को काफी मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि किसानों को फायदा होगा क्योंकि अब संभव है कि यहां से किसान रेल शुरू हो सके।

इस अवसर पर, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शन विक्रम जरदोश, सांसद श्री सी आर पाटिल, श्री प्रभातभाई पटेल, श्री भरसिंह धाबी और श्री दिनेशभाई अनवैद्य उपस्थित थे।

पृष्ठभूमि

तरंगाहिल-अंबाजी-आबू रोड न्यू ब्रॉड गेज लाइन से 51 शक्तिपीठों में से एक अंबाजी जाने वाले लाखों भक्तों को लाभ होगा।

वेस्टर्न फ्रेट डेडिकेटेड कॉरिडोर के 62 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू महेसाणा खण्ड और 13 किमी लंबे न्यू पालनपुर-न्यू चटोदर खण्ड (पालनपुर बाईपास लाइन) यह नई लाइन पिपावाव, दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी (कांडला), मुंद्रा और गुजरात के अन्य बंदरगाहों से कनेक्टिविटी बढ़ाएगी। इन खण्ड के खुलने से 734 किमी का वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर चालू हो जाएगा। इस खंड के खुलने से गुजरात के मेहसाणा-पालनपुर, राजस्थान के स्वरूपगंज, केशवगंज, किशनगढ़ और हरियाणा में रेवाड़ी-मानेसर और नारनौल में उद्योगों को लाभ होगा।

प्रधानमंत्री ने कोच्चि में भारतीय रेल की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया

- *"हम भारतीय रेल को पूरी तरह से बदल रहे हैं। आज देश में रेलवे स्टेशनों को भी एयरपोर्ट की तरह विकसित किया जा रहा है" - प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी*



केरल में लगभग ₹1,050 करोड़ की लागत से एर्नाकुलम जंक्शन, एर्नाकुलम टाउन और कोल्लम स्टेशन के पुनर्विकास कार्य की आधारशिला रखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी। साथ में हैं केरल के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान एवं मुख्यमंत्री श्री पिनाराई विजयन तथा अन्य गणमान्य अतिथि

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 01 सितम्बर, 2022 को कोच्चि में कोच्चि मेट्रो और भारतीय रेल की ₹4,500 करोड़ से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, हम भारतीय रेल को पूरी तरह से ट्रांसफॉर्म कर रहे हैं। आज देश में रेलवे स्टेशनों को भी एयरपोर्ट्स की तरह विकसित किया जा रहा है। आज केरल को जिन प्रोजेक्ट्स का उपहार मिला है, उनमें केरल के 3 बड़े रेलवे स्टेशंस को विकसित कर उनको अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने की भी योजना है। अब एर्नाकुलम टाउन स्टेशन, एर्नाकुलम जंक्शन और कोल्लम स्टेशन में भी आधुनिक सुविधाओं का निर्माण होगा।

केरल की रेल कनेक्टिविटी आज एक नए स्तर पर पहुंच रही है। तिरुवनंतपुरम से लेकर मेंगलुरु तक पूरे रेल रूट का



दोहरीकरण हो चुका है। ये केरल के सामान्य यात्रियों के साथ-साथ श्रद्धालुओं के लिए भी बहुत बड़ी सुविधा है। एट्टुमनुर-चिंगावनम-कोट्टायम ट्रैक के दोहरीकरण से भगवान अयप्पा के दर्शन में बहुत सुविधा होगी। लाखों श्रद्धालुओं की ये लंबे समय से मांग थी, जो अब पूरी हुई है। सबरीमाला आने के इच्छुक देश और दुनिया भर के भक्तों के लिए यह खुशी का अवसर है। कोल्लम-पुनलुर सेक्शन के बिजलीकरण से इस पूरे क्षेत्र में प्रदूषण रहित, तेज रेल यात्रा की सुविधा मिल पाएगी। इससे स्थानीय लोगों की सुविधा के साथ-साथ इस पॉपुलर टूरिस्ट डेस्टिनेशन का आकर्षण और बढ़ेगा।

प्रधानमंत्री ने 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मूल मंत्र पर जोर देते हुए कहा कि सरकार इन सिद्धांतों के आधार पर देश का विकास कर रही है। प्रधानमंत्री ने अमृतकाल में विकसित भारत की राह को मजबूत करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर केरल के मुख्यमंत्री श्री पिनाराई विजयन, केरल के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान, केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन, केरल राज्य के मंत्री श्री पी. राजीव और अधिवक्ता एंथनी राजू, संसद सदस्य, श्री हिबी ईडन और कोच्चि निगम के महापौर अधिवक्ता एम अनिलकुमार उपस्थित थे।

परियोजनाओं का विवरण

प्रधानमंत्री ने लगभग ₹750 करोड़ की लागत से निर्मित कुरुप्पंथरा-कोट्टायम-चिंगवनम रेल खंड के दोहरीकरण को भी राष्ट्र को समर्पित किया। इसके साथ तिरुवनंतपुरम से मंगलुरु तक का पूरा खंड पूरी तरह से दो लाइनों का हो गया है। गौरतलब है कि सबरीमाला भगवान अयप्पा तीर्थ के लिए जाने वाले लाखों श्रद्धालु दोहरे लाइन खंड में कोट्टायम या चेंगन्नूर रेलवे स्टेशन पर आसानी से उतर सकते हैं और आगे जा सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कोल्लम-पुणालूर के बीच के रेल खंड का, जिसका विद्युतीकरण कार्य पूरा किया गया है, भी लोकार्पण किया। प्रधानमंत्री ने केरल में तीन रेलवे स्टेशनों-एर्नाकुलम जं., एर्नाकुलम टाउन और कोल्लम के पुनर्विकास की आधारशिला भी रखी। इन पुनर्विकास परियोजनाओं की लागत लगभग ₹1,050 करोड़ है। ये रेलवे स्टेशन अत्याधुनिक और विश्वस्तरीय सुविधाओं, जैसे समर्पित आगमन/प्रस्थान कॉरिडोर, स्काईवॉक, सौर पैनल, सीवेज उपचार संयंत्र, ऊर्जा कुशल प्रकाश व्यवस्था, वर्षा जल संचयन और इंटरमॉडल परिवहन सुविधा आदि से परिपूर्ण होंगी।

प्रधानमंत्री ने केएसआर बेंगलरु स्टेशन पर प्लास्टिक की व्यर्थ बोतलों से बनी मूर्तिकला के लिए रेलवे की सराहना की



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केएसआर बेंगलुरु स्टेशन पर प्लास्टिक और व्यर्थ बोतलों से बनी मूर्तिकला के लिए दक्षिण पश्चिम रेलवे की सराहना की है।

उनके ट्वीट का उद्धरण देते हुए प्रधानमंत्री ने अपने ट्वीट में कहा: "इस तरह के प्रयास न केवल अभिनव और प्रशंसनीय हैं, बल्कि यह हमें अपने आसपास और सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखने के हमारे बुनियादी नागरिक कर्तव्य का स्मरण कराते हैं।"


South Western Railway
@SWRRLY · Follow

Sculpture made from plastic & pet bottles at KSR Bengaluru Station to create awareness on proper disposal of plastic waste.
@DARPG_GoI @PMOIndia @DrJitendraSingh @RailMinIndia


नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का प्रस्तावित डिजाइन

कैबिनेट ने दी छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, नई दिल्ली, तथा अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने लगभग ₹10,000 करोड़ के कुल निवेश के साथ तीन प्रमुख रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के भारतीय रेलवे के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। रेलवे स्टेशन किसी भी शहर के लिए एक महत्वपूर्ण और केंद्रीय स्थान होता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रेलवे के बदलाव में स्टेशनों के विकास को महत्व दिया है। आज का कैबिनेट का फैसला स्टेशन विकास को नई दिशा देता है। 199 स्टेशनों के पुनर्विकास का काम चल रहा है। इनमें से 47 स्टेशनों के लिए टेंडर जारी कर दिए गए हैं। बाकी स्टेशनों के लिए मास्टर प्लानिंग और डिजाइन का काम चल रहा है। 32 स्टेशनों पर तेजी से काम हो रहा है। आज कैबिनेट ने 3 बड़े स्टेशनों अर्थात् नई दिल्ली, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी), मुंबई और अहमदाबाद रेलवे स्टेशनों के लिए, ₹10,000 करोड़ के निवेश को मंजूरी दी है।

स्टेशन डिजाइन के मानक तत्व इस प्रकार होंगे

- प्रत्येक स्टेशन में एक ही स्थान पर सभी यात्री सुविधाओं के साथ खुदरा, कैफेटेरिया, मनोरंजन सुविधाओं के लिए एक विशाल रूफ प्लाजा (36/72/108 मीटर) होगा।
- रेलवे ट्रैक के दोनों ओर स्टेशन भवन के साथ शहर के दोनों किनारों को स्टेशन से जोड़ा जाएगा।
- फूड कोर्ट, वेटिंग लाउंज, बच्चों के खेलने की जगह, स्थानीय उत्पादों के लिए जगह आदि सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी।
- शहर के भीतर स्थित स्टेशनों में सिटी सेंटर जैसी जगह होगी।
- स्टेशनों को आरामदेह बनाने के लिए पर्याप्त रोशनी, वे फाइंडिंग/संकेत, ध्वनिकी, लिफ्ट/एस्कलेटर/ट्रेवलेटर्स होंगे।
- पर्याप्त पार्किंग सुविधाओं के साथ यातायात के सहज संचालन के लिए मास्टर प्लान तैयार किया गया है।
- परिवहन के अन्य साधनों, जैसे मेट्रो, बस आदि के साथ एकीकरण होगा।
- सौर ऊर्जा, जल संरक्षण/रिसाइकिलिंग और बेहतर ट्री कवर के साथ ग्रीन बिल्डिंग तकनीक का उपयोग किया जाएगा।
- दिव्यांगजनों के अनुकूल सुविधाएं उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।
- इन स्टेशनों को इंटेलिजेंट बिल्डिंग की अवधारणा पर विकसित किया जाएगा।
- आगमन/प्रस्थान का पृथक्करण, अव्यवस्था मुक्त प्लेटफॉर्म, बेहतर सतह, पूरी तरह से ढके हुए प्लेटफॉर्मों का निर्माण किया जाएगा।
- सीसीटीवी और एक्सेस कंट्रोल लगाने से रेलवे स्टेशन सुरक्षित रहेंगे।
- ये प्रतिष्ठित स्टेशन भवन होंगे।



अहमदाबाद रेलवे स्टेशन का प्रस्तावित डिजाइन





दक्षिणी प्रस्थान प्लाजा



छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस का प्रस्तावित डिजाइन



छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'पीएम गति शक्ति' ढांचे को लागू करने हेतु रेलवे भूमि को दीर्घकालिक पट्टे पर देने की नीति को मंजूरी दी

- *रेलवे को इससे ज्यादा राजस्व प्राप्त होगा और लगभग 1.2 लाख नौकरियों की रोजगार सृजन क्षमता पैदा होगी*
- *300 पीएम गति शक्ति कार्गो टर्मिनल अगले पांच वर्षों में विकसित किए जाएंगे*

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'पीएम गति शक्ति' ढांचे को लागू करने के लिए (कार्गो संबंधी गतिविधियों, जन उपयोगिताओं और रेलवे के विशेष इस्तेमाल हेतु) रेलवे की भूमि नीति को संशोधित करने के रेल मंत्रालय के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।



इसका प्रभाव

- इससे रेलवे को और ज्यादा कार्गो आकर्षित करने में मदद मिलेगी, माल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी बढ़ेगी और इससे इस उद्योग की लॉजिस्टिक्स लागत कम होगी।
- इससे रेलवे को अधिक राजस्व मिलेगा।
- यह 'पीएम गति शक्ति कार्यक्रम' में सोची गई जन उपयोगिताओं के लिए मंजूरियों का सरलीकृत करेगा। इससे बिजली, गैस, पानी की आपूर्ति, दूरसंचार केबल, सीवेज निपटान, नालियां, ऑप्टिकल फाइबर केबल (ओएफसी), पाइपलाइन, सड़क, फ्लाईओवर, बस टर्मिनल, क्षेत्रीय रेल परिवहन, शहरी परिवहन जैसी जन उपयोगिताओं के एकीकृत तरीके से विकास में मदद मिलेगी।
- इस नीतिगत संशोधन से लगभग 1.2 लाख रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

वित्तीय नतीजे

इसका कोई अतिरिक्त खर्च नहीं होगा। भूमि पट्टे पर देने की नीति को उदार बनाने से सभी हितधारकों/सेवा प्रदाताओं/ऑपरेटरों के लिए ज्यादा कार्गो संबंधी सुविधाएं स्थापित करने के रास्ते खुलेंगे और रेलवे के लिए अतिरिक्त कार्गो यातायात एवं माल ढुलाई राजस्व पैदा करने में उनकी भागीदारी की राह भी प्रशस्त होगी।

लाभ

इस नीतिगत संशोधन से रोजगार के लगभग 1.2 लाख अवसर पैदा होंगे।

विवरण

- रेलवे की यह संशोधित भूमि नीति बुनियादी ढांचे और ज्यादा कार्गो टर्मिनलों के एकीकृत विकास को सक्षम करेगी।
- यह नीति भूमि के प्रति वर्ष बाजार मूल्य के 1.5% की दर से 35 वर्ष तक की अवधि के लिए, कार्गो से संबंधित गतिविधियों के लिए रेलवे की भूमि को लंबी अवधि के पट्टे पर प्रदान करती है।
- कार्गो टर्मिनलों के लिए रेलवे भूमि का उपयोग कर रही मौजूदा संस्थाओं के पास, पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के बाद नई नीति व्यवस्था अपनाने का विकल्प होगा।
- अगले पांच वर्षों में 300 पीएम गति शक्ति कार्गो टर्मिनल विकसित किए जाएंगे और लगभग 1.2 लाख रोजगार सृजित होंगे।
- इससे माल ढुलाई में रेल की हिस्सेदारी बढ़ेगी और देश में कुल लॉजिस्टिक्स लागत में कमी आएगी।
- यह नीति भूमि के प्रति वर्ष बाजार मूल्य के 1.5% की दर से रेलवे भूमि प्रदान करके बिजली, गैस, पानी की आपूर्ति, सीवेज निपटान, शहरी परिवहन जैसी जन सुविधाओं के एकीकृत विकास के जरिए रेलवे की भूमि उपयोग को और रास्ते के अधिकार (आरओडब्ल्यू) को सरलीकृत करती है।
- ऑप्टिकल फाइबर केबल्स (ओएफसी) और अन्य छोटे व्यास वाली भूमिगत उपयोगिताओं के लिए, रेलवे ट्रैक पार



करने के लिए ₹1,000 का एकमुश्त शुल्क लिया जाएगा।

- इस नीति में रेलवे की जमीन पर सोलर प्लांट लगाने के लिए नाममात्र की लागत पर रेलवे की जमीन के इस्तेमाल का प्रावधान है।
- ये नीति प्रति वर्ष ₹1 प्रति वर्गमीटर के मामूली वार्षिक शुल्क पर रेलवे भूमि पर सामाजिक बुनियादी ढांचे (जैसे पीपीपी के जरिए अस्पताल और केंद्रीय विद्यालय संगठन के जरिए स्कूल) के विकास को भी प्रोत्साहित करती है।

कार्यान्वयन रणनीति और लक्ष्य

- कैबिनेट की मंजूरी के 90 दिनों के भीतर व्यापक नीतिगत दस्तावेज तैयार और लागू किया जाएगा।
- 'पीएम गति शक्ति' कार्यक्रम के तहत सोची गई जन उपयोगिताओं की स्थापना के लिए मंजूरियों को सरल किया जाएगा।
- अगले पांच वर्षों में 300 पीएम गति शक्ति कार्गो टर्मिनल विकसित किए जाएंगे।

पृष्ठभूमि

रेलवे का संगठन और नेटवर्क पूरे देश में फैला हुआ है। हालांकि रेलवे अपनी मौजूदा भूमि नीतियों के साथ बुनियादी ढांचे के अन्य माध्यमों के साथ अच्छी तरह से एकीकृत नहीं हो सकी है। इसलिए 'पीएम गति शक्ति' ढांचे के तहत देश भर में तेज एकीकृत प्लानिंग और बुनियादी ढांचे के विकास को संभव करने के लिए रेलवे की भूमि पट्टा नीति को सुव्यवस्थित और सरल बनाने की आवश्यकता महसूस की गई।

मौजूदा नीति रेलवे से संबंधित किसी भी गतिविधि के लिए पांच साल तक की छोटी अवधि के लिए रेलवे भूमि के लाइसेंस की अनुमति देती है। इस तरह की अल्पकालिक लाइसेंस अवधि मल्टी-मॉडल कार्गो हब बनाने के लिए किसी भी प्रतिबद्ध निवेशक को आकर्षित नहीं करती है। मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) को ही सरकारी भूमि पट्टे पर देने के लिए 35 साल तक की लंबी अवधि तक रेलवे भूमि के पट्टे देने की अनुमति है। इससे कार्गो टर्मिनलों में निवेश का दायरा सीमित हो जाता है। चूंकि रेल परिवहन का एक कुशल साधन है, इसलिए रेल द्वारा ज्यादा माल ढुलाई करना आवश्यक है ताकि उद्योग की लॉजिस्टिक्स लागत को कम किया जा सके। माल ढुलाई में रेल के सामान्य हिस्से को बढ़ाने के लिए और ज्यादा कार्गो टर्मिनलों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए भूमि पट्टे की नीति को संशोधित करने की आवश्यकता महसूस की गई है।

भारत और बांग्लादेश ने अंतर-सरकारी रेल संबंधों को मजबूत करने हेतु दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए

भारत और बांग्लादेश के बीच मैत्रीपूर्ण सहयोग को बढ़ावा देने और अंतर-सरकारी रेलवे संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत और बांग्लादेश के बीच दो समझौता ज्ञापन (एमओयू) तैयार किए गए हैं। बांग्लादेश की माननीय प्रधानमंत्री शेख हसीना की भारत यात्रा के दौरान 06 सितंबर, 2022 को इन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए और उनका आदान- प्रदान किया गया।

'भारतीय रेल के प्रशिक्षण संस्थान में बांग्लादेश रेलवे कर्मचारियों के प्रशिक्षण' से संबंधित समझौता ज्ञापन का उद्देश्य आपसी सहयोग की रूपरेखा तैयार करना और विभिन्न स्थलों के दौरों सहित भारतीय रेल के प्रशिक्षण संस्थानों में बांग्लादेश रेल के कर्मचारियों के प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना है। इसमें डिजाइनिंग, समन्वय, सेमिनार आयोजन, कार्यशालाएं, कक्षा एवं स्थल आधारित प्रशिक्षण शामिल होंगे।

'बांग्लादेश रेल के लिए एफओआईएस जैसी आईटी प्रणाली और अन्य आईटी अनुप्रयोगों में सहयोग' से संबंधित समझौता ज्ञापन में भारत का रेल मंत्रालय बांग्लादेश रेल में यात्री टिकटिंग, माल ढुलाई एवं नियंत्रण कार्यालय, परिसंपत्ति प्रबंधन का डिजिटलीकरण एवं वित्तीय बुनियादी ढांचे जैसे कंप्यूटरीकरण के सभी पहलुओं के लिए क्रिस के माध्यम से बांग्लादेश रेलवे को आईटी से जुड़े समाधानों की पेशकश करेगा।

रेल मंत्री द्वारा साबरमती एवं अहमदाबाद में हाई स्पीड रेल स्टेशनों का निरीक्षण और कार्य की प्रगति की समीक्षा

केंद्रीय रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 13 सितंबर, 2022 को साबरमती और अहमदाबाद हाई स्पीड रेल (एचएसआर) स्टेशनों की साइटों का दौरा किया और मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना की प्रगति की समीक्षा की। श्री वैष्णव ने गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन का भी दौरा किया और स्टेशन पर विभिन्न सुविधाओं का निरीक्षण किया। रेल मंत्री के साथ पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रकाश बुटानी, मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री तरुण जैन, पश्चिम रेलवे एवं नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) के वरिष्ठ अधिकारी भी थे।



पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री प्रकाश बुटानी एवं नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ गांधीनगर कैपिटल स्टेशन का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

रेल मंत्री श्री वैष्णव ने गांधीनगर कैपिटल रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं के विभिन्न पहलुओं का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् रेल मंत्री ने गांधीनगर कैपिटल स्टेशन से साबरमती स्टेशन तक निरीक्षण कार में यात्रा करके ट्रैक निरीक्षण किया। साबरमती स्टेशन पर रेल मंत्री ने विभिन्न सुविधाओं का निरीक्षण किया और 'वन स्टेशन वन प्रोडक्ट' स्टॉल का भी दौरा किया। इसके बाद श्री वैष्णव साबरमती हाई स्पीड रेल स्टेशन के निर्माण स्थल पर पहुंचे और कार्य की प्रगति का जायजा लिया और भावी साबरमती एचएसआर स्टेशन के लघु मॉडल को भी देखा। उन्हें परियोजना में किए गए विभिन्न विकास और प्रगति के बारे में एनएचएसआरसीएल के अधिकारियों द्वारा अवगत कराया गया। रेल मंत्री ने कामगारों के साथ बातचीत की और राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में उनके प्रयासों की सराहना करके उनका मनोबल बढ़ाया। बाद में, वह आगे निरीक्षण कार में अहमदाबाद के लिए रवाना हुए और रास्ते में साबरमती और अहमदाबाद स्टेशनों के बीच ट्रैक निरीक्षण किया। अहमदाबाद से श्री वैष्णव अहमदाबाद हाई स्पीड रेल (एचएसआर) स्टेशन के निर्माण स्थल पर पहुंचे और वहाँ किए जा रहे पाइलिंग कार्य का निरीक्षण किया। श्री वैष्णव ने अहमदाबाद में झूलती मीनार का भी दौरा किया और संरचना के शीर्ष पर जाकर विस्तृत निरीक्षण करने के साथ ही मीनारों के बीच पुल का भी निरीक्षण किया। इस विरासत संरचना के जीर्णोद्धार की योजना आईआईटी रुड़की के सहयोग से और अन्य विशेषज्ञ एजेंसियों से समन्वय कर बनाई जा रही है।

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना की अधिक जानकारी के लिए देखें पेज-31



रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली स्थित उत्तर रेलवे केंद्रीय अस्पताल में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा आयोजित महा रक्तदान अभियान में रक्तदान कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की एवं सभी देशवासियों से महा रक्तदान अभियान से जुड़ने के लिए अपील भी की।

भारतीय रेल में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन

- *श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा भारतीय रेल, संचार मंत्रालय और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में 'स्वच्छता पखवाड़े' की शुरुआत की*
- *'स्वच्छता पखवाड़ा' 16 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2022 तक मनाया गया*
- *श्री अश्विनी वैष्णव ने पर्यावरण की निरन्तरता पर वार्षिक रिपोर्ट जारी की*
- *'स्वच्छता पखवाड़े' के दौरान स्टेशनों पर पटरियों की सफाई, प्रमुख स्टेशनों तक पहुंच और रेलवे परिसरों में प्लास्टिक कचरे के उन्मूलन पर विशेष ध्यान दिया गया*
- *मुख्यालय, संभागीय कार्यालयों एवं अन्य संबंधित प्रतिष्ठानों में कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाई गई*



रेल मंत्रालय में रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाते हुए रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव साथ में रेल अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री विनय कुमार त्रिपाठी एवं उच्च अधिकारीगण

रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 16 सितंबर, 2022 को नई दिल्ली में भारतीय रेल, संचार मंत्रालय और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में 'स्वच्छता पखवाड़े' की शुरुआत की। उद्घाटन समारोह के दौरान रेलवे, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

इस अवसर पर श्री वैष्णव ने कहा, ''प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छता मिशन और जीवन का हिस्सा बन गया है। विशेष ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्रों में सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण हैं। माननीय प्रधानमंत्री ने राजनीति को समाज की सेवा के माध्यम के रुप में बदल दिया है।'' उन्होंने कहा कि तीव्र स्वच्छता अभियान के अलावा स्वच्छता पखवाड़े के दौरान रेलवे, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय का ध्यान टीबी रोगियों और मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव सेवा पर होगा।

पखवाड़े के उद्घाटन दिवस के दौरान श्री वैष्णव ने मुख्यालय, मंडल कार्यालयों और अन्य संबंधित प्रतिष्ठानों में रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी कर्मचारियों को स्वच्छता शपथ दिलाई गई।

स्वच्छता पखवाड़े के शुभारंभ के अलावा, रेल मंत्री ने पर्यावरण निरन्तरता पर वार्षिक रिपोर्ट भी जारी की। यह एक व्यापक रेफरल दस्तावेज है जो भारतीय रेल द्वारा हरित पर्यावरण और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों को उजागर करता है। यह रिपोर्ट शुद्ध शून्य उत्सर्जन, जैसे ऊर्जा संरक्षण उपायों, वैकल्पिक ईंधन, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, जल संरक्षण, वनीकरण, स्टेशनों और प्रतिष्ठानों का हरित प्रमाणीकरण, जैव शौचालयों, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन आदि की दिशा में रेलवे के प्रयासों को सामने लाती है।

स्वच्छता पखवाड़े का समापन 2 अक्टूबर, 2022 को महात्मा गांधी की जयंती के साथ हुआ। इस वर्ष स्टेशनों पर पटरियों की सफाई, प्रमुख स्टेशनों तक पहुंच और रेलवे परिसर में प्लास्टिक कचरे के उन्मूलन पर विशेष ध्यान दिया गया। पखवाड़े के दौरान स्टेशनों, ट्रेनों, पटरियों, कॉलोनियों और अन्य रेलवे प्रतिष्ठानों की तेजी से सफाई की गई और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया।

रेलवे बड़ी संख्या में लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का एक पर्यावरण अनुकूल साधन है और स्वच्छ और हरित पर्यावरण में यह अग्रणी है। रेलवे ने अपने स्टेशनों और उसके आसपास और ट्रेनों के कोचों में बायो टॉयलेट लगाकर स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए अनेक पहल की है, जिससे साफ पटरियों, बायो-डिग्रेडेबल/नॉन बायो-डिग्रेडेबल कचरे को अलग करने, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन आदि में मदद मिली है।

लोगों को बायो-टॉयलेट के उपयोग, सिंगल यूज प्लास्टिक से बचने और स्वच्छता की आदतों का पालन करने के बारे में शिक्षित करने के लिए जन उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से डिजिटल मीडिया/सार्वजनिक घोषणा के जरिये व्यापक जागरुकता अभियान चलाने की योजना तैयार की गई है।

नागालैंड के मुख्यमंत्री ने डोनी पोलो एक्सप्रेस की विस्तारित सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया



नागालैंड के शोखुवी रेलवे स्टेशन से अरुणाचल प्रदेश के नाहरलागुन रेलवे स्टेशन तक पैसेंजर ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए मुख्यमंत्री नागालैंड, श्री नीफिउ रियो

दिनांक 26 अगस्त, 2022 को पूर्वोत्तर क्षेत्र में कनेक्टिविटी और परिवहन की दिशा में ऐतिहासिक कदम के तहत पहली बार नागालैंड के शोखुवी रेलवे स्टेशन से अरुणाचल प्रदेश के नाहरलागुन रेलवे स्टेशन तक पैसेंजर ट्रेन सेवा को श्री नीफिउ रियो, मुख्यमंत्री नागालैंड ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर श्री पाइवांग कोन्याक, परिवहन, नागरिक उड्डयन और रेलवे, भू-संसाधन और श्री एन. जैकब झिमोमी, जन स्वास्थ्य इंजीनियरी विभाग, नागालैंड के मंत्री, पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता और लामडिंग मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री जे.एस. लाकड़ा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

नागालैंड के मुख्यमंत्री ने कहा कि 1903 में डिमापुर स्टेशन खोले जाने के बाद 100 से अधिक वर्षों के अंतराल के बाद नगालैंड को धनसारी-शोखुवी रेलवे लाइन पर दूसरा रेलवे स्टेशन मिल रहा है। इस नई सेवा से नागालैंड और मणिपुर के यात्रियों के लिए गुवाहाटी से आने-जाने के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्राप्त होगा। 15817/15818 डोनी पोलो एक्सप्रेस, जो गुवाहाटी और नाहरलगुन के बीच चलती थी, अब शोखुवी तक विस्तारित कर दी गई है और अब से यह शोखुवी और नाहरलागुन के बीच एक दैनिक ट्रेन सेवा के रूप में चलेगी।





केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री द्वारा सीताफलमंडी रेलवे स्टेशन पर तीन लिफ्ट का लोकार्पण व निरक्षण

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री, उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने 13 सितंबर, 2022 को सीताफलमंडी रेलवे स्टेशन पर तीन लिफ्ट का लोकार्पण किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक हैदराबाद श्री शरत चंद्रायन एवं अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारी भी मौजूद थे।

इस अवसर पर श्री रेड्डी ने कहा कि सीताफल मंडल रेलवे स्टेशन एक महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। यहां कई प्लेटफार्म हैं और लिफ्ट की सुविधा होने से लोगों को विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगों एवं महिलाओं को एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म तक जाने में आसानी होगी।

श्री रेड्डी ने यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए रेलवे को धन्यवाद दिया। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य में जारी रेलवे के अन्य विकास कार्य जिनमें ₹600 करोड़ की लागत से सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास और चर्लापल्ली में चौथा रेलवे टर्मिनल भी शामिल है, का कार्य तेजी से किया जाएगा।



सीताफलमंडी रेलवे स्टेशन पर तीन लिफ्ट का लोकार्पण करते हुए उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, पूर्वोत्तर क्षेत्र श्री जी. किशन रेड्डी

केंद्रीय मंत्री द्वारा चेर्लापल्ली रेलवे स्टेशन पर सैटेलाइट टर्मिनल कार्यों की प्रगति का निरीक्षण

श्री जी. किशन रेड्डी, केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन और उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, ने 10 सितंबर, 2022 को चेर्लापल्ली रेलवे स्टेशन पर सैटेलाइट टर्मिनल कार्यों की प्रगति का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक (प्रभारी), दक्षिण मध्य रेल, श्री नीरज अग्रवाल, मुप्रशाधि, निर्माण, श्री जे. के. जैन, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, श्री ए.के. गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक, सिकंदराबाद मंडल और अन्य वरिष्ठ रेलवे पदाधिकारी भी उपस्थित थे।



चेर्लापल्ली रेलवे स्टेशन पर सैटेलाइट टर्मिनल कार्यों की प्रगति का निरीक्षण करते हुए संस्कृति, पर्यटन और उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी

श्री रेड्डी ने कोच अनुरक्षण सुविधाओं तथा अन्य अवसंरचना कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि चेर्लापल्ली रेलवे स्टेशन नगरद्वय में चौथा प्रमुख यात्री टर्मिनल बन जाएगा। इस नए टर्मिनल को हवाई अड्डों के समान आधुनिक सुविधाओं के साथ विकसित किया जा रहा है। मंत्री ने कहा कि विकास कार्य दिसंबर, 2023 तक पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने चरणबद्ध तरीके से परियोजना शुरू करने के लिए रेलवे की सराहना की। इसके अलावा, उन्होंने यह भी बताया कि सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास ₹600 करोड़ से अधिक की लागत से किया जा रहा है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री व रेल राज्यमंत्री द्वारा न्यू आष्टी-अहमदनगर नई लाइन का उद्घाटन



न्यू आष्टी-अहमदनगर नई लाइन के उद्घाटन के बाद न्यू आष्टी-अहमदनगर डेमू को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, श्री एकनाथ शिंदे, (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से) उपमुख्यमंत्री, श्री देवेंद्र फडणवीस तथा रेल, कोयला और खान, राज्य मंत्री श्री रावसाहेब दादाराव पाटिल दानवे एवं अन्य अतिथि

23 सितंबर, 2022 को न्यू आष्टी रेलवे स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में श्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री, महाराष्ट्र श्री रावसाहेब दादाराव पाटिल दानवे, केंद्रीय रेल, कोयला और खान, राज्य मंत्री की उपस्थिति में न्यू आष्टी- अहमदनगर उद्घाटन डेमू सेवा को श्री एकनाथ शिंदे, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र ने (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से) हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इससे पूर्व न्यू आष्टी-अहमदनगर नई लाइन (66 किमी) का उद्घाटन पट्टिका का अनावरण किया गया।

इस अवसर पर श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल, राजस्व मंत्री, पशुपालन और डेयरी विकास, महाराष्ट्र सरकार, श्रीमती पंकजा मुंडे, पूर्व महाराष्ट्र मंत्री, सांसद डॉ. प्रीतम मुंडे, डॉ. सुजय विखे पाटिल, विधान परिषद सदस्य श्री सुरेश धस, श्री राम शिंदे, विधायक श्री बालासाहेब आजबे, श्री लक्ष्मण पवार, पूर्व विधायक श्री शिवाजी कारडिले और श्रीमती पल्लवी ढोंडे, नगराध्यक्ष उपस्थित थे।

श्री अनिल कुमार लाहोटी, महाप्रबंधक, मध्य रेल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा जनता बड़ी संख्या में इस अवसर पर उपस्थित थे। 66 किमी की न्यू आष्टी-अहमदनगर ब्रॉड गेज लाइन 261 किमी अहमदनगर-बीड- परली वैजनाथ नई ब्रॉड गेज लाइन परियोजना का एक हिस्सा है जो भारत सरकार और राज्य सरकार के बीच 50-50 लागत साझा करने वाली परियोजना है। डेमू सेवा न्यू आष्टी-अहमदनगर और आसपास के क्षेत्रों के निवासियों के लिए बेहतर कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगी तथा यह स्थानीय व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा देगी।

रेल राज्य मंत्री का आरडीएसओ दौरा

रेल एवं वस्त्र राज्य मंत्री, श्रीमती दर्शना जरदोश ने 20 सितम्बर, 2022 को आरडीएसओ का दौरा किया। इस अवसर पर आरडीएसओ एक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। महानिदेशक श्री संजीव भुटानी ने आरडीएसओ के रेलवे बोर्ड के अनुरूप पुनर्गठन की जानकारी दी साथ ही साथ आरडीएसओ के संगठन ढांचे में बदलाव और आरडीएसओ द्वारा निरीक्षण की प्रक्रिया और भारतीय रेल में आरडीएसओ की भूमिका के बारे में बताया।

इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक/रिसर्च, श्री अमित श्रीवास्तव ने आरडीएसओ की हाल की उपलब्धियों और वर्तमान में चल रही परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए विस्तृत प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति के दौरान रेल राज्य मंत्री ने सभी प्रमुख परियोजनाओं



आरडीएसओ में आयोजित बैठक को संबोधित करती हुईं रेल एवं वस्त्र राज्य मंत्री, श्रीमती दर्शना जरदोश

एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों की गहन समीक्षा करते हुए इनसे सम्बंधित डिजाइन और डेवलपमेंट पर और अधिक बल देने के निर्देश दिये। उन्होंने स्वदेशी वेंडर्स को तेजी से डेवलप करने की दिशा में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। साथ ही साथ उन्होंने आर.डी.एस.ओ को उन्नत प्रोपलशन सिस्टम एवं कुशल ऊर्जा वाली वन्दे भारत ट्रेन का 180 KMPH की गति पर सफलतापूर्वक परीक्षण केवल 30 दिनों के रिकॉर्ड समय में पूरा करने पर बधाई दी।

श्रीमती दर्शना जरदोश ने आरडीएसओ के सिग्नल, एयर ब्रेक एवं फटीग लैब का दौरा किया एवं आरडीएसओ में परीक्षण के लिए मौजूद बुनियादी ढांचे का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने सिग्नल प्रयोगशाला में वृक्षारोपण भी किया।

रेलवे सुरक्षा बल ने उत्साहपूर्वक मनाया अपना 38वां स्थापना दिवस

- *रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने महिला यात्रियों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने में आरपीएफ की अहम भूमिका की सराहना की*
- *श्रीमती दर्शना जरदोश ने आरपीएफ कर्मियों के पारिवारिक सदस्यों के लिए कौशल उन्नयन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की घोषणा की*

रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने अपना 38वां स्थापना दिवस 20 सितंबर, 2022 को जगजीवन राम आरपीएफ अकादमी, लखनऊ में केंद्रीय स्तर पर पहली बार परेड आयोजित कर मनाया। यह पहली बार हुआ है जब नई दिल्ली से बाहर आरपीएफ की राष्ट्रीय स्तर की परेड का आयोजन किया गया। लखनऊ स्थित जगजीवन राम आरपीएफ अकादमी, जोकि आरपीएफ का केंद्रीकृत प्रशिक्षण संस्थान है और सिविल सेवा परीक्षा के माध्यम से भर्ती किए गए रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारियों का अल्मा मेटर (मातृ संस्था) है, में परेड स्थल का चयन किया जाना उल्लेखनीय महत्त्व रखता है।

केंद्रीय रेल और वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में परेड की सलामी ली। इस कार्यक्रम में श्री बृजलाल, सांसद, राज्य सभा; केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल, राज्य पुलिस, विभिन्न सरकारी विभागों एवं रेलवे के वरिष्ठ अधिकारीगण और अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

रेल राज्य मंत्री ने 23 आरपीएफ कर्मियों को 'विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक', 'सराहनीय सेवा के लिए भारतीय पुलिस पदक', 'सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक', 'उत्तम जीवन रक्षा पदक' और 'जीवन रक्षा पदक' प्रदान किए। इसके तहत आरपीएफ एनसीआर के हेड कांस्टेबल स्वर्गीय श्री ज्ञान चंद को भी मरणोपरांत 'सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक' से सम्मानित किया गया जिन्होंने आत्महत्या करने के इरादे से चलती ट्रेन के सामने कूदने वाली एक महिला को बचाते हुए कर्तव्य की वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। रेलवे सुरक्षा बल ने अश्रुपूर्ण नेत्रों और बड़े गर्व से श्री ज्ञान चंद को स्मरण किया।



रेलवे सुरक्षा बल के 38वें स्थापना दिवस के अवसर पर रेलवे सुरक्षा बल द्वारा आयोजित परेड की सलामी लेती हुईं रेल और वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

रेल राज्य मंत्री ने अकादमी परिसर में 100 फीट ऊंचे स्मारकीय राष्ट्रीय ध्वज का अनावरण किया एवं फहराया और ट्रेन युक्त प्रशिक्षण के लिए इंजन के साथ एक रेलवे कोच का अनावरण किया और उसे राष्ट्र को समर्पित किया। रेल राज्य मंत्री ने अकादमी के पुनर्निर्मित मुख्य हॉल, जो अब वातानुकूलित हो गया है, का भी उद्घाटन किया। इस अवसर पर आरपीएफ की त्रैमासिक ई-पत्रिका 'रेल सैनिक' के एक विशेष 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' संस्करण का विमोचन किया गया।

रेल राज्य मंत्री ने इस टुकड़ी के आत्मविश्वासपूर्ण आचरण, भागीदारी और कदम से कदम मिलाते हुए चलने की सराहना की। अपने भाषण में उन्होंने महिला यात्रियों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने में आरपीएफ की भूमिका की सराहना की। उन्होंने लंबी दूरी की ट्रेनों में अकेले यात्रा करने वाली महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए 'मेरी सहेली' टीमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने किसी भी संगठन के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में प्रशिक्षण एवं कौशल उन्नयन की प्रमुख भूमिका की रूपरेखा तैयार की और आरपीएफ में प्रशिक्षण सुविधाओं को बढ़ाने के लिए ₹55 करोड़ मंजूर करने की घोषणा की।

श्रीमती जरदोश ने ₹3 करोड़ की लागत से आरपीएफ कर्मियों के पारिवारिक सदस्यों, विशेषकर महिलाओं के कौशल के उन्नयन के लिए तीसरी बटालियन आरपीएसएफ, लखनऊ के परिसर में एक कौशल उन्नयन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की भी घोषणा की। इसके अलावा उन्होंने देश भर में 75 स्थानों पर महिला आरपीएफ ट्रेन अनुरक्षण



आरपीएफ कर्मियों के पारिवारिक सदस्यों के कौशल उन्नयन के लिए प्रशिक्षण केंद्र की घोषणा के बाद रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश के साथ सेल्फी लेतीं उत्साहित महिलाएं

कर्मियों के लिए विश्राम आश्रय सह जुटाव हॉल के निर्माण की घोषणा की।

आरपीएफ के महानिदेशक श्री संजय चंदर ने यात्रियों की सुरक्षित ट्रेन यात्रा सुनिश्चित करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल द्वारा की गई विभिन्न नई पहलों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आरपीएफ अपने कामकाज के विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है, ताकि श्रमबल का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। जरूरतमंद यात्रियों, बुजुर्गों और बच्चों को सहायता प्रदान करने में रेलवे सुरक्षा बल सबसे आगे रहा है। ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर मानव तस्करी; नशीले पदार्थों, हवाला मनी, प्रतिबंधित वन्य जीवों की तस्करी और अन्य अवैध गतिविधियों को रोकने में आरपीएफ की निरंतर सराहनीय भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि हम अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं, जो वर्ष 2047 तक जारी रहेगा, जिस दौरान हमें भारत को उस गौरव के शिखर पर ले जाने के लिए पूरी लगन से काम करना होगा, जिसकी वह हकदार है। विजन 2047 इस तरह के उदात्त आदर्श की दिशा में रोडमैप है। उन्होंने रेलवे सुरक्षा बल के विजन 2047 का उल्लेख किया जिसमें रेलवे सुरक्षा बल की त्वरित कार्रवाई, पहुंच और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए नवाचार, प्रौद्योगिकी का उपयोग, संसाधन का इष्टतम उपयोग शामिल होगा। उन्होंने रेखांकित किया कि रेलवे सुरक्षा बल का लक्ष्य सेवा ही संकल्प है और कांस्टेबल से लेकर डीजी तक रेलवे सुरक्षा बल के सभी सदस्यों को अपनी सेवा प्रतिबद्धता को मजबूत करने की दिशा में काम करना होगा।

रेल सुरक्षा बल का गठन

रेलवे की संपत्ति को सुरक्षा प्रदान करने के लिए वर्ष 1957 में संसद में पारित एक अधिनियम के जरिए रेलवे सुरक्षा बल का गठन किया गया था। इसके बाद वर्ष 1966 में रेलवे सुरक्षा बल को रेलवे की संपत्ति के अवैध कब्जे में शामिल अपराधियों से पूछताछ, गिरफ्तारी और उन पर मुकदमा चलाने का अधिकार दिया गया था। कई वर्षों से यह महसूस किया जा रहा था कि रेलवे सुरक्षा बल को 'संघ के एक सशस्त्र बल' का दर्जा देने की आवश्यकता है और अंत में संसद द्वारा आरपीएफ अधिनियम में संशोधन करके 20 सितंबर, 1985 को रेलवे सुरक्षा बल को यह दर्जा दिया गया। इसलिए रेलवे सुरक्षा बल के सदस्यों और उनके परिवारों द्वारा हर साल 20 सितंबर को आरपीएफ के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।



उल्लेखनीय योगदान के लिए विभिन्न पदक अर्जित करने वाले रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों के साथ रेल और वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश

केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री द्वारा विविध ट्रेनों के नए ठहरावों का उद्घाटन



केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री, श्री पंकज चौधरी, ने 03 सितम्बर, 2022 को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मण्डल के लक्ष्मीपुर स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में 18206 नौतनवा-दुर्ग एक्सप्रेस के लक्ष्मीपुर स्टेशन पर नये ठहराव का शुभारम्भ ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर किया। उन्होंने लखनऊ मण्डल के बृजमनगंज स्टेशन पर 04 सितम्बर, 2022 को आयोजित समारोह में 15070 ऐशबाग-गोरखपुर एक्सप्रेस तथा 15009 गोरखपुर-मैलानी एक्सप्रेस के बृजमनगंज स्टेशन पर नए ठहरावों का शुभारम्भ भी ट्रेनों को हरी झण्डी दिखाकर किया। इसी क्रम में वाराणसी मण्डल के सिसवा बाजार स्टेशन पर 05 सितम्बर, 2022 को आयोजित एक समारोह में 12538 बनारस-मुजफ्फरपुर बापूधाम एक्सप्रेस के सिसवा बाजार स्टेशन पर नए ठहराव का शुभारम्भ ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर किया। इन समारोहों में श्री चौधरी ने कहा कि प्रमुख ट्रेनों के ये नए ठहराव स्थानीय जनता के लिए बहुत ही लाभप्रद होंगे।

जनशताब्दी ट्रेन में विस्टाडोम कोच की शुरुआत

रेल प्रशासन द्वारा यात्री सुविधाओं में विस्तार करते हुए ट्रेन संख्या 12061/12062 रानी कमलापति-जबलपुर- रानी कमलापति जनशताब्दी एक्सप्रेस में 16 अगस्त, 2022 से वातानुकूलित चेयरकार विस्टाडोम कोच का संचालन प्रारंभ किया गया है। पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री मध्य प्रदेश शासन सुश्री ऊषा ठाकुर द्वारा दिनांक 16 अगस्त 2022 को रानी कमलापति स्टेशन से विस्टाडोम कोच युक्त जनशताब्दी एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर गंतव्य के लिए रवाना किया गया।



इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि चिकित्सा शिक्षा और भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री, मध्य प्रदेश शासन श्री विश्वास सारंग मण्डल रेल प्रबन्धक भोपाल, श्री सौरभ बंदोपाध्याय सहित अन्य रेल अधिकारी तथा मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम के वरिष्ठ अधिकारी, अन्य गणमान्य नागरिक, जनसामान्य उपस्थित थे।

जामताड़ा में नए रोड ओवरब्रिज का लोकार्पण



श्री सुनील सोरेन, सांसद ने 27 अगस्त, 2022 को समपार गेट संख्या 9/बी/टी की जगह जामताड़ा में एक नया रोड ओवरब्रिज राष्ट्र को समर्पित किया। पूर्व रेलवे के आसनसोल मंडल के मेन लाइन खंड में जामताड़ा और बोडमा स्टेशनों के बीच निर्मित यह नया रोड ओवरब्रिज झारखंड राज्य में परिवहन बुनियादी ढाँचे में एक नया पृष्ठ जोड़ेगा। इस अवसर पर जामताड़ा में श्री परमानंद शर्मा, मंडल रेल प्रबंधक, आसनसोल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

खड़गपुर एवं आद्रा मंडल के सांसदों की मंडलीय समिति द्वारा दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक के साथ बैठक



दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर और आद्रा मंडल के संसद सदस्यों की मंडलीय समिति की बैठक सांसद श्री दिलीप घोष की अध्यक्षता में 09 सितंबर, 2022 को कोलकाता में सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे के साथ आयोजित की गई। बैठक में पश्चिम बंगाल, ओडिशा और झारखंड के कुल 16 सांसदों ने भाग लिया। बैठक में संसद सदस्य डॉ. सुभाष सरकार, शिक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री पशुपति नाथ सिंह, श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, श्री प्रसून बनर्जी, श्री सौमित्र खान, दिब्येंदु अधिकारी, श्री विद्युत बरन महतो, श्री सुनील कुमार मंडल, श्री प्रताप चंद्र सारंगी, श्री ज्योतिर्मय सिंह महतो, श्रीमती मंजुलता मंडल, श्रीमती ममता मोहंता, श्री कुनार हेम्ब्रम, श्री चंद्र प्रकाश चौधरी और श्रीमती सजदा अहमद उपस्थित थे।

सांसदों ने रेलवे के बुनियादी ढांचे और यात्री सुविधाओं के विकास के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक ने उनके बहुमूल्य सुझावों के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

अंतागढ़-दुर्ग-रायपुर डेमू पैसेंजर ट्रेन सेवा का शुभारंभ



दल्लीराझरा–रावघाट–जगदलपुर परियोजना के अंतर्गत अंतागढ़ से दुर्ग एवं रायपुर से अंतागढ़ तक डेमू पैसेंजर स्पेशल ट्रेन की सुविधा का अंतागढ़ तक विस्तार किया गया। डेमू पैसेंजर स्पेशल ट्रेन की सुविधा के अंतागढ़ तक के विस्तार का शुभारंभ सांसद लोकसभा कांकेर श्री मोहन मंडावी द्वारा 13 अगस्त, 2022 को किया गया। इस अवसर पर विधायक अंतागढ़ श्री अनूप नाग, पूर्व सांसद कांकेर श्री विक्रम उसेंडी, मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता, सहित रायपुर रेल मंडल के अन्य अधिकारी गण एवं बड़ी संख्या मे कांकेर, भानुप्रतापपुर, अंतागढ़ क्षेत्र के नागरिक गण उपस्थित रहे।

रेलवे पर संसद की स्टैंडिंग कमेटी का दक्षिण पश्चिम रेलवे का दौरा

रेलवे पर संसद की स्टैंडिंग कमेटी के सदस्यों ने अध्यक्ष श्री राधा मोहन सिंह के नेतृत्व में 22 अगस्त, 2022 को दक्षिण पश्चिम रेलवे का दौरा का किया। इस दौरान वे बेंगलुरु एवं मैसूरु मंडल का दौरा किया और दक्षिण पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में महाप्रबंधक श्री संजीव किशोर ने दक्षिण पश्चिम रेलवे पर चल रही रेलवे की परियोजनाओं की जानकारी दी । समिति के सदस्यों ने केएसआर बेंगलुरु एवं सर एम. विश्वेश्वरैया रेलवे टर्मिनल



का भी निरीक्षण किया। इस दौरान मंडल रेल प्रबंधक, बेंगलुरु श्री श्याम सिंह एवं मंडल रेल प्रबंधक, मैसुरू श्री राहुल अग्रवाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री रांगे लाल मीना, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, निर्माण श्री हरि शंकर वर्मा, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री आशीष पांडे, अपर महाप्रबंधक भी उपस्थित थे।

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक की वाराणसी मण्डल क्षेत्र के सांसदों के साथ बैठक



पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री अशोक कुमार मिश्र की वाराणसी मण्डल के सांसदों के साथ 03 सितम्बर, 2022 को एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें प्रमुख रूप से श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, सांसद, महाराजगंज (बिहार), श्री विजय कुमार दूबे, सांसद, कुशीनगर, श्री रमेश चन्द बिंद, सांसद, भदोही, श्री वीरेन्द्र सिंह, सांसद, बलिया, श्री अफजाल अंसारी, सांसद, गाजीपुर, श्रीमती सीमा द्विवेदी, सांसद (राज्य सभा), श्री राजीव प्रताप रूडी, सांसद, छपरा, श्री श्याम सिंह यादव, सांसद, जौनपुर, प्रमुख विभागाध्यक्ष, श्री रामाश्रय पाण्डेय, मण्डल रेल प्रबन्धक, वाराणसी एवं अन्य वरिष्ठ मण्डलीय रेल अधिकारी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री रवींद्र श्याम नारायण शुक्ल (रवि किशन), सांसद, गोरखपुर, श्रीमती अनुप्रिया पटेल, सांसद, मिर्जापुर, श्री रविन्दर कुशवाहा, सांसद, सलेमपुर, श्री बी.पी. सरोज, सांसद, मछलीशहर, श्री सकलदीप राजभर, सांसद (राज्य सभा), श्री अतुल कुमार सिंह, सांसद, घोसी, डॉ. आलोक कुमार सुमन, सांसद, गोपालगंज एवं श्री रमापति राम त्रिपाठी, सांसद, देवरिया के प्रतिनिधिगण भी बैठक में शामिल हुए।

बैठक के दौरान रेल से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों एवं माँगों को उठाया गया तथा सुझाव भी दिए गए, जिनका यथासंभव समाधान का आश्वासन महाप्रबंधक द्वारा दिया गया। बैठक का संचालन श्री कृष्ण चंद्र सिंह, उप महाप्रबन्धक सामान्य ने किया।

सांसद द्वारा आजमगढ़ स्टेशन का निरीक्षण

श्री दिनेश लाल यादव (निरहुआ), सांसद, आजमगढ़ ने 27 अगस्त, 2022 को पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मण्डल के आजमगढ़ स्टेशन का वाराणसी मण्डल के मण्डलीय रेलवे अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं, साफ-सफाई तथा स्टेशन पर अन्य सुविधाओं में सुधार एवं विस्तार के लिए चल रही निर्माण परियोजनाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान प्रमुख रूप से श्री राहुल श्रीवास्तव, अपर मण्डल रेल प्रबन्धक, वाराणसी, श्री विकास चन्द्रा, मुख्य परियोजना प्रबन्धक, रेल विकास निगम लिमिटेड एवं अन्य वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे।



बलिया स्टेशन पर एस्केलेटर एवं वाशिंग पिट का लोकार्पण

श्री वीरेन्द्र सिंह, सांसद, बलिया ने 20 अगस्त, 2022 को पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मण्डल के बलिया स्टेशन पर आयोजित समारोह में बलिया स्टेशन पर नव स्थापित एस्केलेटर एवं वॉशिंग पिट का लोकार्पण किया। समारोह में प्रमुख रूप से श्री दयाशंकर सिंह, परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उत्तर प्रदेश, श्री उपेन्द्र तिवारी, पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश, जन-प्रतिनिधि गण, श्री रामाश्रय पाण्डेय, मण्डल रेल प्रबन्धक, वाराणसी, वरिष्ठ रेल अधिकारी एवं स्थानीय जनता उपस्थित थी।



सांसद द्वारा ट्रेन के मार्ग विस्तार का शुभारम्भ



श्री अक्षरबर लाल, सांसद, बहराइच ने 22 अगस्त, 2022 को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मण्डल के बहराइच स्टेशन पर आयोजित समारोह में 14214 बहराइच- वाराणसी इण्टरसिटी को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उल्लेखनीय है कि इस इण्टरसिटी का मार्ग विस्तार गोंडा से बहराइच तक किया गया है। समारोह में प्रमुख रूप से श्री रामनिवास वर्मा, सदस्य विधानसभा, नानपारा, श्री सुभाष त्रिपाठी, सदस्य विधानसभा, पयागपुर एवं श्रीमती प्रज्ञा त्रिपाठी, सदस्य विधान परिषद उपस्थित थीं।

सांसद, नर्मदापुरम द्वारा होशंगाबाद स्टेशन पर नवनिर्मित फुट ओवर

ब्रिज, लिफ्ट का लोकार्पण एवं नए स्वीकृत फुट ओवर ब्रिज का भूमि पूजन

सांसद नर्मदापुरम (होशंगाबाद) श्री उदय प्रताप सिंह द्वारा 16 अगस्त, 2022 को होशंगाबाद स्टेशन पर नवनिर्मित फुट ओवर ब्रिज और लिफ्ट का लोकार्पण किया गया तथा एक नए स्वीकृत फुट ओवर ब्रिज का भूमि पूजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक नर्मदापुरम डॉ. सीतासरन शर्मा एवं विधायक सोहागपुर श्री विजयपाल सिंह तथा अन्य गणमान्य जन भी उपस्थित थे। इस समारोह में अपर मण्डल रेल प्रबंधक श्री योगेश कुमार सक्सेना, वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक श्रीमती प्रियंका दीक्षित, वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर श्री महेंद्र सिंह सहित अन्य रेल अधिकारी तथा नर्मदापुरम के गणमान्य नागरिक एवं बड़ी संख्या में जन सामान्य उपस्थित था।



सांसद द्वारा ट्रेनों के नए ठहरावों का उद्घाटन



बभनान स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में श्री हरीश द्विवेदी, सांसद, बस्ती ने 02 सितम्बर, 2022 को पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मण्डल के बभनान स्टेशन पर 11123 ग्वालियर-बरौनी एक्सप्रेस के नये ठहराव का उद्घाटन ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर किया। उन्होंने 08 सितम्बर, 2022 को बभनान स्टेशन पर आयोजित एक अन्य समारोह में 15653 गुवाहाटी-जम्मूतवी अमरनाथ एक्सप्रेस के नए ठहराव का उद्घाटन ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर किया।

रेल यात्री सेवा समिति के अध्यक्ष के साथ महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेल की बैठक

दिनांक 25 अगस्त, 2022 को रेलवे बोर्ड द्वारा गठित 'रेल यात्री सेवा समिति' के अध्यक्ष श्री रमेश चंद्र रतन तथा अन्य सदस्यों के साथ पश्चिम मध्य रेल के महाप्रबंधक, श्री सुधीर कुमार गुप्ता द्वारा यात्री सुविधाओं के विकास एवं रेल सेवाओं के विस्तार के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। समिति अध्यक्ष के नेतृत्व में तीन अन्य सदस्यों श्री राम किशन, श्री गंगाधर तालपुले, श्री यतीन्द्र सिंह ने बैठक में महाप्रबंधक के साथ चर्चा की।



महाप्रबंधक कार्यालय के सभागृह में आयोजित इस बैठक में पमरे महाप्रबंधक के अतिरिक्त अपर महाप्रबंधक श्री शोभन चौधुरी एवं पमरे के प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष, मंडल रेल प्रबंधक जबलपुर एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थिति थे।

सांसदों के साथ महाप्रबंधक, पू. सी. रेल की बैठक



पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने 09 सितंबर, 2022 को तिनसुकिया मंडल के क्षेत्राधिकार में वाले संसद सदस्यों के साथ एक बैठक की। बैठक में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के केंद्रीय राज्यमंत्री श्री रामेश्वर तेली, असम से राज्य सभा के सांसद श्री कामाख्या प्रसाद तासा, लखीमपुर लोकसभा केंद्र के सांसद श्री प्रदान बरुआ, केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग एवं आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल के प्रतिनिधि तथा असम से राज्यसभा के सांसद श्री अजीत कुमार भुइयां के प्रतिनिधि शामिल थे। तिनसुकिया के मंडल रेल प्रबंधक श्री बिजय कुमार मिश्रा के साथ पू. सी. रेल मुख्यालय के वरिष्ठ रेल अधिकारी भी उपस्थित थे।

सांसदों के साथ महाप्रबंधक, पू. सी. रेल की समीक्षा बैठक



2 सितंबर, 2022 को गुवाहाटी में पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने रंगिया और लामडिंग मंडलों द्वारा सेवा प्रदत्त किये जाने वाले संसदीय क्षेत्रों के सांसदों के साथ एक बैठक की, जिसमें असम से राज्य सभा के सांसद श्री भुबनेश्वर कलिता, श्री बीरेंद्र प्रसाद वैश्य, श्री रवंगवरा नारजारी, श्री पबित्र मार्गेरिटा, मेघालय से डॉ. वानवीरॉय खार्लुखि; लोकसभा सांसदों में श्रीमती क्वीन ओजा, श्री सी. लालरोसांगा, श्री लोरहो एस. फोज, श्री होरेन सिंग बे, डॉ राजकुमार रंजन सिंह, श्री दिलीप सैकिया के प्रतिनिधि, केंद्रीय विधि और न्याय मंत्री के प्रतिनिधि, श्री अब्दुल खालेक के प्रतिनिधि शामिल थे। बैठक में मंडल रेल प्रबंधक रंगिया श्री वी. के. श्रीवास्तव और मंडल रेल प्रबंधक लामडिंग श्री जे. एस. लकड़ा व वरिष्ठ रेल अधिकारी भी उपस्थित थे। सांसदों को पू. सी. रेल पर की जा रही विकासात्मक गतिविधियों की जानकारी दी गई।

इज्जतनगर मण्डल क्षेत्र के सांसदों के साथ पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक की बैठक



पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री अशोक कुमार मिश्र की इज्जतनगर मण्डल के क्षेत्र के संसद सदस्यों के साथ एक बैठक यांत्रिक कारखाना, इज्जतनगर के सभा कक्ष में 09 सितम्बर, 2022 को आयोजित की गई।

बैठक में श्री संतोष कुमार गंगवार, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सांसद, बरेली, श्री बी.एल. वर्मा, केंद्रीय राज्य मंत्री, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय एवं सहकारिता मंत्रालय तथा सांसद (राज्य सभा), डॉ. (श्रीमती) संघमित्रा मौर्या, सांसद, बदायूँ, प्रमुख विभागाध्यक्ष, श्री आशुतोष पंत, मण्डल रेल प्रबन्धक, इज्जतनगर एवं अन्य वरिष्ठ मंडलीय रेल अधिकारी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री फिरोज़ वरुण गांधी, सांसद, पीलीभीत, श्री घनश्याम सिंह लोधी, सांसद, रामपुर, श्री मुकेश राजपूत, सांसद, फर्रुखाबाद, श्रीमती हेमामालिनी, सांसद, मथुरा, श्री धर्मेंद्र कुमार कश्यप, सांसद, आंवला, डॉ. एस.टी. हसन, सांसद, मुरादाबाद, श्री सत्यदेव पचौरी, सांसद, कानपुर, श्री अजय टम्टा, सांसद, अल्मोड़ा एवं श्री अरुण कुमार सागर, सांसद, शाहजहांपुर के प्रतिनिधिगण आदि भी बैठक में शामिल हुए।

महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे संग क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

74वीं क्षेत्रीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति (जेडआरयूसीसी) की बैठक श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक दक्षिण मध्य रेलवे की अध्यक्षता में 26 अगस्त, 2022 को सिकंदराबाद में संपन्न हुई। बैठक में, सांसद श्री नमा नागेश्वर राव, ने भाग लिया। जेडआरयूसीसी के सदस्य जिसमें राज्य सरकारों द्वारा 6 मंडलों से चुने गये मंडलीय रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति (डीआरयूसीसी) के 41 सदस्य, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, प्रिंसिपल चेंबर्स आफ कामर्स एवं ट्रेड एसोसियेशन, पंजीकृत यात्री एसोसियेशन और रेल मंत्रालय द्वारा नामित विशेष रूचि वाले सदस्य भी बैठक में उपस्थित थे। बैठक में विभिन्न यात्री सुविधा से संबंधित विषयों पर चर्चा हुई।



अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा कटरा-बनिहाल खंड पर चल रहे कार्यों का निरीक्षण



जम्मू-कश्मीर में यूएसबीआरएल परियोजना के कटरा-बनिहाल खंड पर चल रहे कार्यों का जायजा लेते हुए अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड, श्री विनय कुमार त्रिपाठी

श्री विनय कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष एवं कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने 09 सितंबर, 2022 से 10 सितंबर, 2022 तक जम्मू-कश्मीर में यूएसबीआरएल परियोजना के कटरा- बनिहाल (111 किमी) खंड पर चल रहे विभिन्न कार्यों का जायजा लिया। निरीक्षण का कार्य सुरंग टी-1 (3,159 मीटर) से आरंभ किया गया। पोर्टल पी1 छोर से 1,860 मीटर और पी2 छोर से 1,039 मीटर सुरंग खोदने का कार्य पूरा कर लिया गया है। अब केवल 260 मीटर खुदाई का कार्य शेष है। महत्त्वपूर्ण मुख्य सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण कार्य की प्रगति धीमी है। सुरंग की खुदाई के लिए कई प्री-सपोर्ट संसाधनों और खुदाई के उपरांत भी सहायक प्रणालियों की आवश्यकता होती है। कार्यकारी एजेंसी को संसाधनों को बढ़ाकर शेष 260 मीटर की खुदाई के कार्य को तेजी से पूरा करने की सलाह दी गई। उत्तर रेलवे/कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड को कार्य प्रगति की बारीकी से निगरानी करने के निर्देश दिये गये।

सुरंग टी-1 के निरीक्षण पश्चात्, पहले से ही पूर्ण हो चुकी 5,090 मीटर लंबी मुख्य सुरंग एवं इसके समानांतर 5,072 मीटर लंबी एस्केप टनल के कार्य का निरीक्षण किया गया। इस सुरंग में बीएलटी का कार्य प्रगति पर है और करीब 2.5 किमी लंबी एचबीएल (हाइड्रोलिकली बाउंडेड लेयर) पहले ही बिछाई जा चुकी है।

सुरंग टी-2 के निरीक्षण के बाद भारतीय रेल के पहले केबल स्टे ब्रिज, अंजी ब्रिज (कटरा छोर) का निरीक्षण किया गया, जिसकी कुल लंबाई 725 मीटर है। अंजी ब्रिज में नींव के ऊपर से 193 मीटर और नदी के तल से 331 मीटर की ऊंचाई का एक सिंगल मेन पायलॉन है। इस पुल के कटरा छोर पर, एमए1 एबटमेंट सबस्ट्रक्चर का निर्माण कार्य प्रगति पर है और 22.3 मीटर ऊंचाई में से 9 मीटर का निर्माण हो चुका है। परियोजना से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि कटरा छोर पर केवल एमए1 और सीए2 के 38 मीटर स्पैन का शेष कार्य निर्माणाधीन है और इसे दिसंबर 2022 तक पूर्ण कर लिया जाएगा।

इसके उपरांत, अंजी ब्रिज के रियासी छोर का निरीक्षण किया गया। सब-स्ट्रक्चर का कार्य पूरा हो चुका है और सुपर स्ट्रक्चर की लॉन्चिंग/निर्माण का कार्य जारी है। 473 मीटर डेक में से 249 मीटर का निर्माण हो चुका है, जिसमें डेरिक (सेग्मेंट लॉन्चर) का उपयोग करके 6 सेगमेंट लॉन्च करना शामिल है। परियोजना के अधिकारियों ने बताया कि एक महीने में 3 सेग्मेंट (अर्थात् 30 मीटर) का कार्य किया जा रहा है और इसमें तेजी लाने के लिए सभी प्रयास किए जा रहे हैं। सीआरबी ने किए जा रहे कार्य की सराहना की और परियोजना अधिकारियों को कार्य की प्रगति में और सुधार करने की सलाह दी ताकि कार्य को तेजी से पूरा किया जा सके।

अंजी ब्रिज का मुआयना करने के बाद उन्होंने मुख्य पुल संख्या 39 का निरीक्षण किया, जो 490 मीटर लंबाई का एक निरंतर कम्पोसाइट गर्डर है तथा इसका कार्य पूरा होने के अंतिम चरण में है। इस पुल के सबसे ऊंचे पियर पी5 की ऊंचाई नींव के स्तर से 105 मीटर है और रियासी यार्ड इस पुल के ऊपर स्थित होगा और इसमें दो लाइनें और दो प्लेटफॉर्म भी होंगे। मुख्य गर्डर के लिए डेक स्लैब का कार्य पूरा कर लिया गया है और प्लेटफार्म गर्डर का कार्य प्रगति पर है। परियोजना से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि शेष कार्य नवम्बर, 2022 तक पूर्ण कर लिए जाएंगे।

रियासी स्टेशन के निर्माण कार्य का भी मुआयना किया गया। ग्राउंड फ्लोर स्लैब डाली जा चुकी है और पहली मंजिल के कॉलम के लिए शटरिंग का काम चालू है। बताया गया कि सर्कुलेटिंग एरिया के नीचे बेसमेंट के रूप में जीआरपी और आरपीएफ बैरक का निर्माण किया जा रहा है और इसका काम जोरों पर है।

तत्पश्चात्, रियासी से बक्कल छोर तक 20 किमी की यात्रा करते हुए निरीक्षण कार्य जारी रहा और निरीक्षण की यह यात्रा इस परियोजना के दूसरे सबसे लंबे पुल ब्रिज-43 तक पहुंची, जिसकी कुल लंबाई 777 मीटर है। पुल की वक्रता 1.4 डिग्री है और गर्डर की लॉन्चिंग दोनों छोरों से ऐंड लॉन्चिंग के द्वारा सटीकता के साथ कर्व पर की गई है जो पूरा हो गया है। डेक स्लैब की कास्टिंग प्रगति पर है।

ब्रिज -39 के पश्चात् उन्होंने चिनाब ब्रिज का निरीक्षण किया, जोकि विश्व में सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज है। इस पुल के लिए डेक के गोल्डन ज्वाइंट का कार्य 13 अगस्त, 2022 को सफलतापूर्वक पूरा किया गया था। चिनाब ब्रिज से लेकर टनल टी-14 तक सभी सुरंगों, पुलों और ट्रैक लिंकिंग कार्यों का निरीक्षण किया गया। सीआरबी ने कार्यों की गति और प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और परियोजना से जुड़े अधिकारियों को विशेष रूप से टी-14 और बीएलटी कार्यों की प्रगति को और आगे बढ़ाने का निर्देश दिया। उन्होंने आगे इस बात पर बल देते हुए कहा कि ईएंडएम और एसएंडटी कार्यों को भी समानांतर में किया जाना चाहिए ताकि परियोजना को निर्धारित समय पर पूरा किया जा सके।

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा सिग्नलिंग डिजाइन हेतु ऑटोमेशन टूल भारतीय रेल को समर्पित

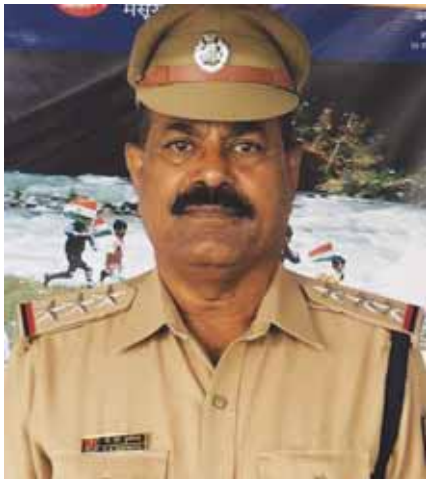
अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन, लखनऊ और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ने इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम के लिए रूट कंट्रोल चार्ट बनाने हेतु स्वदेशी रूप से विकसित ऑटोमेशन टूल (सिग्डेट) तैयार किया है। यह स्वचालन उपकरण आरडीएसओ के सिग्नल निदेशालय द्वारा विकसित किया गया है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं कार्यकारी अधिकारी, श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने 23 अगस्त, 2022 को इस ऑटोमेशन टूल को भारतीय रेल को समर्पित किया। रेलवे बोर्ड और आरडीएसओ के अधिकारियों ने रेलवे बोर्ड के कार्यालय में हुए इस कार्यक्रम में भाग लिया एवं सभी क्षेत्रीय रेलवे के पीसीएसटीई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस ऑटोमेशन टूल की मदद से स्टेशन यार्ड



इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम हेतु रूट कंट्रोल चार्ट बनाने हेतु स्वदेशी रूप से विकसित ऑटोमेशन टूल का शुभारंभ करते हुए रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं कार्यकारी अधिकारी, श्री विनय कुमार त्रिपाठी

के सिग्नल इंटरलॉकिंग प्लान को कैप्चर करके इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम को चालू करने के लिए रूट कंट्रोल चार्ट स्वचालित रूप से तैयार किया जा सकता है। इस ऑटोमेशन टूल के इस्तेमाल से रूट कंट्रोल चार्ट तैयार करने में लगने वाला समय काफी कम हो जाएगा। इससे भारतीय रेल पर नए बुनियादी ढांचे के कामों को शुरू करने में तेजी लाने में मदद मिलेगी।

रेल सुरक्षा बल निरीक्षक ने बचाई महिला की जान



श्री बी.एन. कुबेरप्पा



श्री आशुतोष कुमार

दिनांक 08 सितंबर, 2022 को रेल सुरक्षा बल निरीक्षक श्री. बी.एन. कुबेरप्पा एवं रेलवे सुरक्षा बल, शिवमोग्गा के सिपाही श्री आशुतोष कुमार ने शिवमोग्गा टाउन रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 1 पर निरीक्षण के दौरान एक महिला को ट्रैक पर माल ट्रेन के विपरीत दिशा में चलते हुए देखा। आनन-फानन में इंस्पेक्टर और स्टाफ ने उसे रोका और प्लेटफॉर्म पर ले आए। इसी बीच उनके पति श्री रमैया मौके पर पहुंचे और उन्होंने बताया कि वह उनकी पत्नी श्रीमती मंगलगौरम्मा हैं। वे तुमकुरु शहर के कोराटागेरे के निवासी हैं। उसने यह भी बताया कि वह क्रोनिक माइग्रेन से पीड़ित थीं। परिणाम स्वरूप, वह मानसिक रूप से बीमार होने के कारण अपना जीवन समाप्त करना चाहती थीं। रेलवे सुरक्षा बल और थाना के कर्मचारियों ने उनकी बात सुनकर दंपत्ति से सहानुभूति जताते हुए उन्हें भोजन दिया। महिला को समझा-बुझाकर पति के साथ तुमकुरु स्थित उसके घर भेज दिया। इन रेलवे कर्मचारियों ने न केवल अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पण का उदाहरण दिया है बल्कि महिला को बचाने और उसे अपने परिवार के साथ जोड़ने में सराहनीय मानवीय गुण भी प्रदर्शित किया है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि वे न केवल जनता की सेवा करते हैं बल्कि उनकी परवाह भी करते हैं। महाप्रबंधक श्री संजीव किशोर ने श्री बी.एन. कुबेरप्पा और श्री आशुतोष कुमार के नेक कार्य की सराहना की है।

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर

परिवहन का नया चेहरा साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब



साबरमती एचएसआर स्टेशन साबरमती (एसबीआई और एसबीटी) के दो भारतीय रेल स्टेशनों के बीच एक रेलवे यार्ड में स्थित है और दो मेट्रो स्टेशनों और एक बीआरटीएस स्टॉप के करीब है।

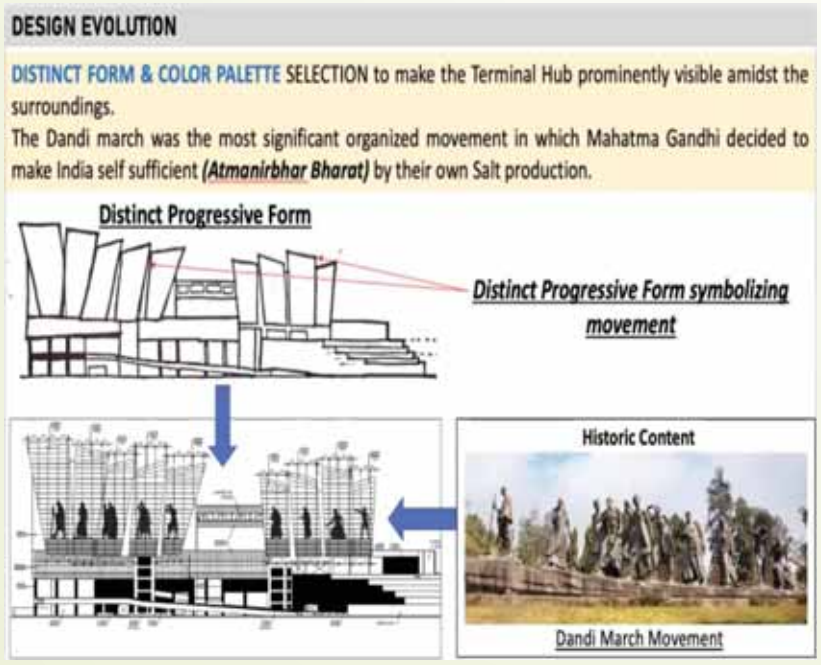
मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर का टर्मिनल स्टेशन होने के नाते, एनएचएसआरसीएल ने इसे क्षेत्र में एक मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है जो एचएसआर लाइन को भारतीय रेल, मेट्रो स्टेशन और बस रैपिड ट्रांजिट (बीआरटी) प्रणाली से जोड़ेगा।

एचएसआर स्टेशन के आसपास विभिन्न परिवहन साधनों के बीच निर्बाध कनेक्टिविटी और एकीकरण प्रदान करने के लिए साबरमती एचएसआर स्टेशन के पूर्व की ओर एक मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब भवन की योजना बनाई गई है, जिसमें तीन फुट ओवरब्रिज (एफओबी) हैं, जो ट्रैवलेटर से सुसज्जित हैं। ये एफओबी हब बिल्डिंग को साबरमती एचएसआर स्टेशन, साबरमती रेलवे स्टेशन, मेट्रो स्टेशन और बीआरटीएस स्टैंड दोनों से जोड़ेंगे।

सभी हितधारकों के परामर्श से साबरमती एचएसआर स्टेशन के लिए एक बहु-मॉडल एकीकरण योजना विकसित की गई थी और आवश्यक डिजाइन प्रस्तावित किए गए थे जैसे सड़क चौड़ीकरण, सड़क ज्यामिति और जंक्शनों का नया स्वरूप, टेबल टॉप पैदल यात्री क्रॉसिंग आदि।

साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब बिल्डिंग की विशेषताएं

- हब बिल्डिंग का निर्माण जी+7 और जी+9 मंजिलों वाली जुड़वां संरचना के रूप में किया जा रहा है, जिसमें कार्यालयों, वाणिज्यिक विकास और यात्रियों के लिए खुदरा दुकानों के लिए जगह निर्धारित की गई है।
- प्रस्तावित हब बिल्डिंग एचएसआर स्टेशन, पश्चिमी रेलवे स्टेशनों के दोनों ओर मेट्रो स्टेशन और बीआरटीएस को एफओबी के माध्यम से कनेक्टिविटी प्रदान करती है। एफओबी का विवरण इस प्रकार है:
- एफओबी 1 हब बिल्डिंग को साबरमती (मीटर गेज) रेलवे स्टेशन और एचएसआर स्टेशनों से जोड़ता है। यात्रियों की सुविधा के लिए एफओबी में ट्रैवलेटर लगाए जाएंगे।
- एफओबी 2 हब बिल्डिंग के अभुक्त कॉनकोर्स और मेट्रो स्टेशन के अभुक्त कॉनकोर्स और बीआरटीएस स्टैंड के बीच कनेक्टिविटी प्रदान करता है।
- एफओबी 3 एचएसआर स्टेशनों के अभुक्त



कॉनकोर्स को साबरमती ब्रॉड गेज रेलवे स्टेशन के रेलवे प्लेटफॉर्म से जोड़ता है।

- हब बिल्डिंग तक आसान पहुंच के लिए, निजी कारों, टैक्सियों, बसों, ऑटो, दोपहिया वाहनों के लिए पर्याप्त पार्किंग स्थान के साथ समर्पित पिकअप और ड्रॉप ऑफ बे बनाए गए हैं। यह एचएसआर स्टेशन के प्रभावकारी क्षेत्र में यात्रियों और यातायात की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करेगा।
- हब बिल्डिंग में यात्रियों के लिए एक समर्पित कॉनकोर्स फ्लोर (तीसरी मंजिल के स्तर पर) है, जिसमें प्रतीक्षा क्षेत्र, खुदरा दुकानें और रेस्तरां जैसी अन्य सुविधाएं हैं।
- कॉनकोर्स फ्लोर के ऊपर के बिल्डिंग ब्लॉक्स को 2 स्तरों पर इंटरकनेक्टिंग टैरेस के साथ दो अलग-अलग ब्लॉक ए और बी में विभाजित किया गया है। ब्लॉक-ए में भविष्य के कार्यालय स्थान के लिए आरक्षित कॉनकोर्स के ऊपर 6 मंजिलें हैं। 4 मंजिल वाले ब्लॉक बी की योजना बनाई गई है, जिसमें कमरे, बैंक्वेट हॉल, सम्मेलन कक्ष, स्विमिंग पूल, रेस्तरां आदि वाले होटल की सुविधा है।
- भारतीय रेल और एचएसआर के बीच यात्रियों के आदान-प्रदान के लिए हब कॉन्कोर्स में भारतीय रेल के लिए टिकट काउंटर की सुविधा प्रदान की जाएगी।
- दांडी मार्च म्युरल-साबरमती के ऐतिहासिक संदर्भ का सम्मान करने के लिए, इमारत के दक्षिणी अग्रभाग में प्रसिद्ध दांडी मार्च आंदोलन को दर्शाने वाला एक बड़ा स्टेनलेस स्टील का म्यूरल बनाया गया है।
- ग्रीन बिल्डिंग की विशेषताएं-हब को विभिन्न ग्रीन बिल्डिंग सुविधाओं के साथ डिजाइन किया गया है। इनमें छतों पर सौर पैनलों का प्रावधान, व्यापक लैंडस्केप टेरेस और उद्यान, सक्षम जल फिक्स्चर, ऊर्जा सक्षम एयर कंडीशनिंग और प्रकाश फिक्स्चर शामिल हैं। पूरी इमारत के अधिकांश कब्जे वाले क्षेत्रों में पर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश है और आसपास के दृश्य दिखते हैं।

अतिरिक्त जानकारी:

- एनएचएसआरसीएल ने 24 अगस्त, 2022 को साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब के वैकल्पिक वाणिज्यिक उपयोग का सुझाव देने के लिए प्रबंध सलाहकार के चयन के लिए एक निविदा जारी की है। बोली 10 अक्टूबर, 2022 को खोली जाएगी।

विशेषताएं	
1	आईजीबीसी (इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल) द्वारा ग्रीन बिल्डिंग आईजीबीसी गोल्ड रैंक
2	मेट्रो के साथ दोनों साबरमती रेलवे स्टेशन, एचएसआर स्टेशन और बीआरटी स्टेशन के साथ मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी
3	पुनर्चक्रण के माध्यम से पानी का इष्टतम उपयोग
4	सोलर सेलों का उपयोग कर विद्युत उत्पादन
5	वृक्ष प्रत्यारोपण
6	भूकंप प्रतिरोध आरसीसी फ्रेम संरचना

साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब की मुख्य विशेषताएं		
लागत	₹332 करोड़	
शुरू होने की तारीख	07 मई, 2019	
भूमि का कुल क्षेत्रफल	3.54 हेक्टेयर (35,448.00 वर्गमीटर)	
कुल कवर क्षेत्र	1,33,598.91 वर्गमीटर	
संरचना का विवरण	साबरमती मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब बिल्डिंग (ब्लॉक-ए और ब्लॉक-बी)	
टिप्पणी	दोनों इमारतें तीसरी मंजिल / कॉनकोर्स स्तर पर निर्बाध प्रवेश के साथ जुड़ रही हैं। भवन-ए कार्यालय उपयोग के लिए और भवन-बी होटल उपयोग के लिए।	
ब्लॉक ए	बिल्डिंग जी+9	
ब्लॉक बी	बिल्डिंग जी+7	
एफओबी-1	फुट ओवर ब्रिज 1 (हब बिल्डिंग तीसरी मंजिल के स्तर से एचएसआर स्टेशन तक) 10 मीटर चौड़ा। भारतीय रेल प्लेटफॉर्म पर लैंडिंग/लिफ्ट/एस्कलेटर/ट्रैवेलेटर।	
एफओबी-2	फुट ओवर ब्रिज 2 (हब बिल्डिंग दूसरी मंजिल के स्तर से मेट्रो स्टेशन और बीआरटीएस तक) अधिकतम 8.0 मीटर और न्यूनतम 5.0 मीटर चौड़ा।	
एफओबी-3	फुट ओवर ब्रिज 3 (एचएसआर स्टेशन से एसबीटी (एसबीआई बीजी) स्टेशन तक) 8 मीटर चौड़ा। भारतीय रेल प्लेटफॉर्म पर लैंडिंग/लिफ्ट/एस्कलेटर।	
पार्किंग की सुविधा	1512 संख्या (दिव्यांगों के लिए पार्किंग सुविधाओं सहित)	
सुरक्षा	सीसीटीवी सुविधा	
जनोपयोगी सेवाएं	लिफ्ट (11 यात्रियों की न्यूनतम क्षमता के साथ 16 यात्री) एस्केलेटर (8 नंबर)	
निकटतम स्टेशन	एचएसआर स्टेशन	150 मी
	मेट्रो	300 मी
	बीआरटी स्टेशन	150 मी
	न्यू रानिप बस स्टेशन	2 किमी
	आरटीओ सर्किल	1.50 किमी
	एसजी हाईवे	7 किमी
	एयरपोर्ट	7 किमी

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर

सितंबर 2022 तक

परियोजना की मुख्य विशेषताएं

- कॉरिडोर की कुल लंबाई: 508 किमी (348-गुजरात + 4-डीएनएच + 156-महाराष्ट्र)
- अधिकतम परिचालन गति: 320 किमी/घंटा
- निर्माण में लगा कुल समय:
- 2.07 घंटे (सीमित पड़ाव के साथ)
- 2.58 घंटे (सभी पड़ाव के साथ)
- स्टेशनों की कुल संख्या: 12
- गुजरात: 8 संख्या-वापी, बिलिमोरा, सूरत, भरूच, वडोदरा, आनंद / नडियाद, अहमदाबाद और साबरमती
- महाराष्ट्र: 4 संख्या-मुंबई (बीकेसी), ठाणे, विरार और बोईसर

भूमि अधिग्रहण की स्थिति:

- कुल:- 97.54%
- गुजरात:-98.87%
- डीएनएच :-100%
- महाराष्ट्र:-94.55%
- महाराष्ट्र में भूमि के कब्जे की स्थिति 64.23% है (वन भूमि भी सम्मिलित है)
- महाराष्ट्र में भूमि के कब्जे की स्थिति 42% है (वन भूमि को छोड़कर)

गुजरात में निविदा की स्थिति

- गुजरात और दादरा और नगर हवेली-वायडक्ट, पुलों, स्टेशनों और ट्रैक के निर्माण हेतु पूरे सरेखण यानी 352 किमी के लिए सिविल, ब्रिज और ट्रैक का 100% अनुबंध सौंपा गया है।

महाराष्ट्र में निविदा की स्थिति

- बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) स्टेशन [एम.ए.एच.एस. आर. पैकेज सी-1]- 21 जुलाई, 2022 को निविदा आमंत्रित की गई, 20 अक्टूबर, 2022 को निविदा खोलना निर्धारित है।
- बीकेसी स्टेशन और शिलफाटा के बीच डबल लाइन हेतु सुरंग का निर्माण (लगभग 21 किमी)-निविदा आमंत्रित की जानी है।
- वायाडक्ट, पुल, सुरंग, अनुरक्षण डिपो सहित सिविल एवं भवन निर्माण कार्य, जिसमें 3 स्टेशन ठाणे, विरार, बोईसर और गुजरात-महाराष्ट्र सीमा (135 किमी) पर स्थित शिलपाटा और जरोली गांव के बीच ठाणे डिपो के लिए कुछ कनेक्टिंग कार्य-निविदा आमंत्रित की जानी है।

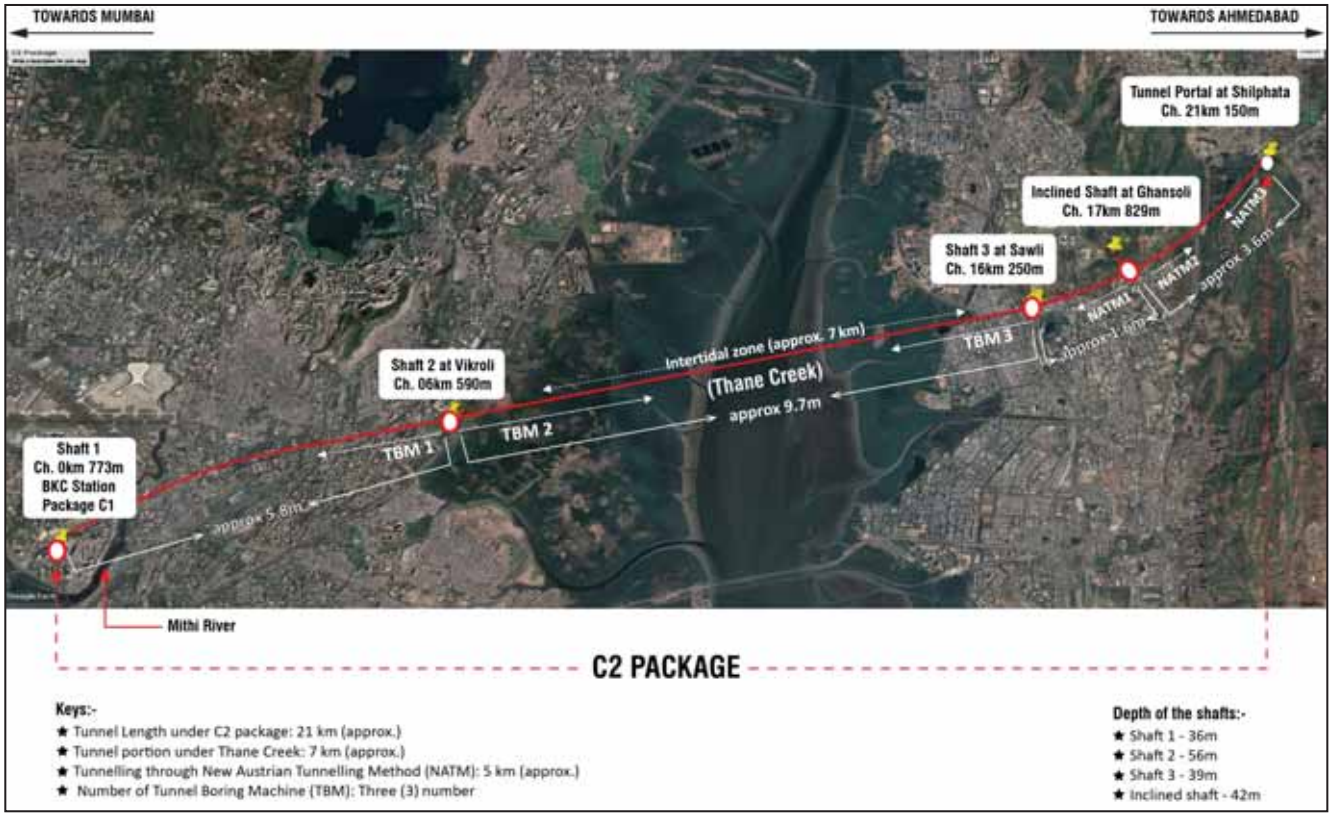
गुजरात में निर्माणाधीन परियोजना

- वायाडक्ट का 4 किमी कार्य पूरा हो गया है, जिसमें नवसारी के पास 1.5 किमी वायाडक्ट और विभिन्न स्थानों पर 2.5 किमी का निर्माण शामिल है।
- गुजरात के 8 जिलों और डीएनएच से गुजरने वाले सरेखण के साथ-साथ निर्माण कार्य शुरू हो गया है।
- वापी से साबरमती तक 8 एच.एस.आर. स्टेशनों का निर्माण विभिन्न चरणों में हैं।
- 174.25 किमी की लंबाई में पाइल, 97.24 किमी से अधिक की नींव एवं 87.32 किमी के खंड पर पियर्स का निर्माण किया गया है।
- गर्डर कास्टिंग-12.92 किमी तक गर्डर डाले जा चुके हैं और 3.96 किमी गर्डर स्थापित किए गए हैं।
- नर्मदा, ताप्ती, माही और साबरमती जैसी महत्त्वपूर्ण नदियों पर पुल का कार्य प्रगति पर है।

महाराष्ट्र में प्रमुख विकास

- पैकेज सी1 (बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में भूमिगत स्टेशन)
- यूजी (UG) स्टेशन के लिए बीकेसी भूमि (स्थायी 4.84 हेक्टेयर + 0.81 हेक्टेयर अस्थायी) एम.एम.आर.डी.ए. (MMRDA) द्वारा सौंपी गई है।
- बी.पी.सी.एल. पेट्रोल पंप की शिफ्टिंग के लिए जमीन एम.एम.आर.डी.ए. द्वारा सौंपी गई है।
- पैकेज सी2 (टनल बोरिंग मशीन, टीबीएम का इस्तेमाल कर डबल लाइन हाई स्पीड रेलवे के लिए परीक्षण एवं कमीशनिंग सहित टनलिंग कार्यों का निर्माण)
- विक्रोली भूमि (3.92 हेक्टेयर) के भूमि उपयोग में परिवर्तन को मंजूरी दी गई है। भूमि के शेष भुगतान की मांग 07 सितंबर, 2022 को प्राप्त हुई है जो प्रक्रियाधीन है।
- चरण II वन मंजूरी (129.71 हेक्टेयर)
- महाराष्ट्र में एम.ए.एच.एस.आर. के पूरे खंड हेतु पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एम.ओ.ई.एफ.सी.सी.) द्वारा मंजूरी दे दी गई है।
- महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में एन.एच.एस.आर.सी.एल. के साथ शेयरधारक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा के लिए संयुक्त कार्यदल की बैठक
- मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा के लिए गठित संयुक्त कार्यदल की छठी बैठक आयोजित की गई। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं कार्यकारी अधिकारी, श्री विनय कुमार त्रिपाठी और जापान के राजदूत श्री सतोशी सुजुकी ने इस बैठक की सह-अध्यक्षता की। बैठक के दौरान इस परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने के साथ-साथ परियोजना से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर लिए गए निर्णयों का अनुमोदन किया गया। इसके अलावा कार्यदल ने हाई स्पीड प्रोजेक्ट से संबंधित सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में आगे की राह पर भी चर्चा की।

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर : भारत की पहली 7 किमी लंबी समुद्र के नीचे सुरंग के निर्माण के लिए बोलियां आमंत्रित



एनएचएसआरसीएल ने टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) का उपयोग करते हुए 7 किमी समुद्र के नीचे सुरंग और मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (एनएटीएम) सहित 21 किमी (लगभग) लंबी सुरंग के लिए सुरंग निर्माण कार्यों के लिए बोलियां आमंत्रित की हैं। (पैकेज संख्या एमएएचएसआर-सी-2)

सुरंग महाराष्ट्र राज्य में बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स और शिलफाटा में भूमिगत स्टेशन के बीच होगी। ठाणे क्रीक (इंटरडिडल जोन) में समुद्र के नीचे 7 किमी (लगभग) सुरंग देश में बनने वाली पहली समुद्र सुरंग होगी।

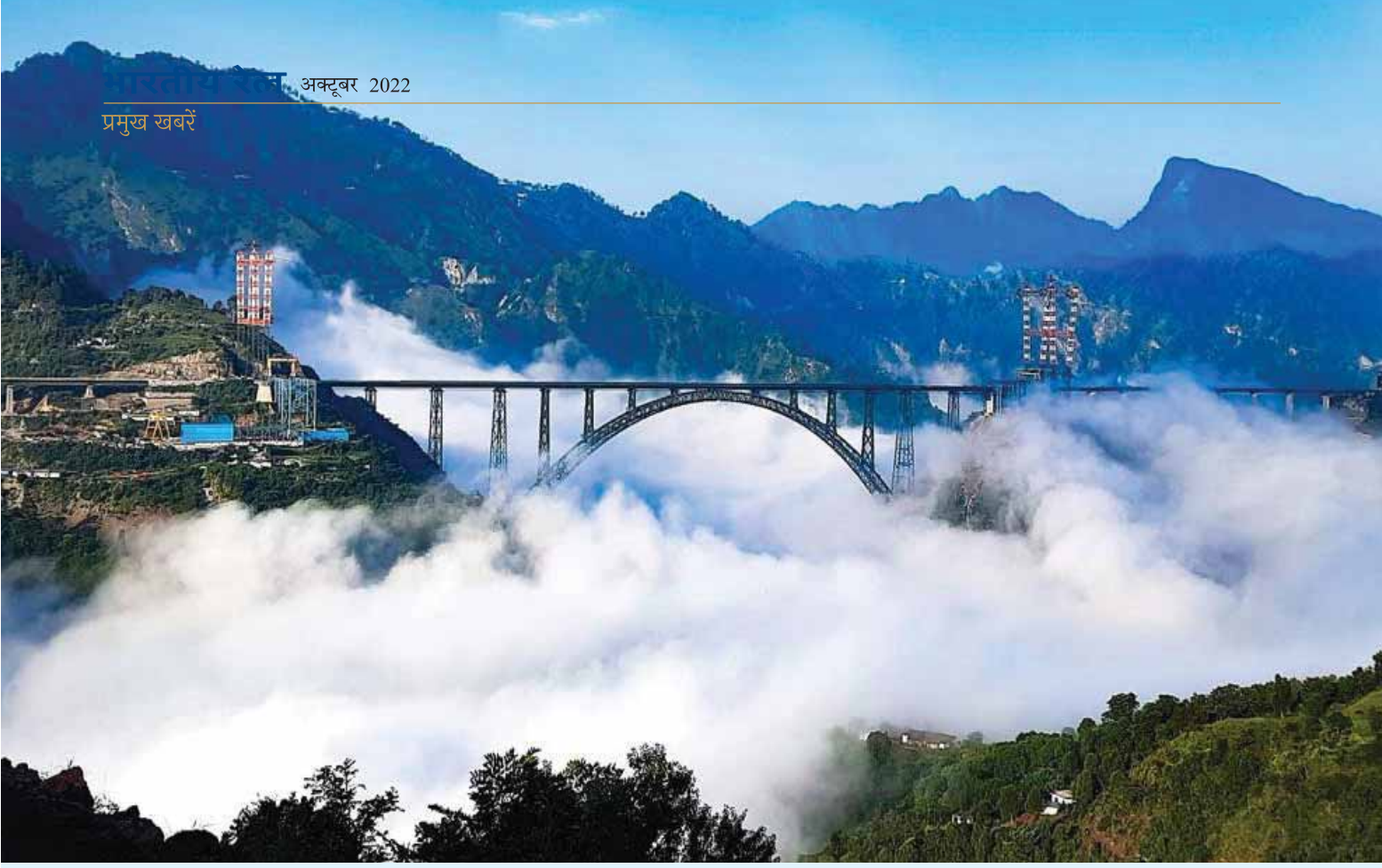
सुरंग एक एकल ट्यूब सुरंग होगी जो अप और डाउन ट्रैक दोनों के लिए ट्विन ट्रैक को समायोजित करेगी। पैकेज के हिस्से के रूप में सुरंग स्थान के आसपास 37 स्थानों पर 39 उपकरण कमरों का भी निर्माण किया जाएगा। इस सुरंग के निर्माण के लिए 13.1 मीटर व्यास के कटर हेड वाले टीबीएम का इस्तेमाल किया जाएगा। आमतौर पर एमआरटीएस - मेट्रो प्रणाली में उपयोग की जाने वाली शहरी सुरंगों के लिए 5-6 मीटर व्यास कटर हेड का उपयोग किया जाता है।

सुरंग के लगभग 16 किमी हिस्से को बनाने के लिए तीन टनल बोरिंग मशीनों का उपयोग किया जाएगा और शेष 5 किमी न्यू ऑस्ट्रियाई टनलिंग विधि (एनएटीएम) के माध्यम से किया जाएगा। यह सुरंग जमीनी स्तर से लगभग 25 से 65 मीटर गहरी होगी और सबसे गहरा निर्माण बिंदु शिल्फाटा के पास पारसिक पहाड़ी से 114 मीटर नीचे होगा।

बीकेसी (पैकेज सी 1 के तहत), विक्रोली और सावली में क्रमशः 36, 56 और 39 मीटर गहराई की अनुमानित गहराई पर तीन शाफ्ट निर्माण की सुविधा प्रदान करेंगे। घनसोली में 42 मीटर का झुका हुआ शाफ्ट और शिल्फाटा में टनल पोर्टल एनएटीएम टनलिंग विधि के माध्यम से लगभग 5 किमी सुरंग के निर्माण की सुविधा प्रदान करेंगे। (अनुलग्नक 1 में योजना देखें)

C2 पैकेज के लिए बोली जमा करने की अंतिम तिथि 19 जनवरी 2023 है।

सी1 पैकेज के तहत मुंबई, महाराष्ट्र में 467 मीटर की कट और कवर लंबाई और 66 मीटर के वेंटिलेशन शाफ्ट सहित भूमिगत बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स हाई स्पीड रेल स्टेशन के डिजाइन और निर्माण के लिए बोलियां 22 जुलाई 2022 को आमन्त्रित की गई थीं और बोलियां जमा करने की अंतिम तिथि 20 अक्टूबर 2022 रखी गई है।



उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना ने लोगों को रोजगार, समृद्धि और संपर्क प्रदान किया

उधमपुर श्रीनगर बारामूला रेल लिंक परियोजना (यूएसबीआरएल) हिमालय क्षेत्र में से ब्रॉड-गेज रेल लाइन के निर्माण के लिए भारतीय रेल द्वारा शुरू की गई एक राष्ट्रीय परियोजना है, जिसका मकसद कश्मीर क्षेत्र को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ना है। यह हर मौसम वाली, आरामदायक, सुविधाजनक और लागत प्रभावी जन परिवहन प्रणाली देश के सबसे उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए उत्प्रेरक का काम करेगी।

इस परियोजना के पहले तीन चरणों का निर्माण पूरा हो चुका है और कश्मीर घाटी में बारामूला-बनिहाल और जम्मू क्षेत्र में जम्मू-उधमपुर-कटरा के बीच ट्रेनों के संचालन के लिए यह लाइन चालू हो चुकी है। कटरा-बनिहाल के बीच के 111 किमी के खंड पर काम चल रहा है, जोकि अपने भू-भाग और गहरी घाटियों से भरी नदियों की विस्तृत व्यवस्था के कारण सबसे कठिन और खतरनाक हिस्सा है। इस खंड में कई उत्कृष्ट पुल और सुरंगें बन रही हैं। इस खंड में ज्यादा रेल ट्रैक, सुरंगों में से या पुलों पर बनाए जाने हैं।

इस परियोजना ने लोगों को रोजगार, समृद्धि और कनेक्टिविटी प्रदान की है। इस परियोजना से रियासी और रामबन के पिछड़े जिलों को विशेष रूप से लाभ हुआ है। अब तक दुर्गम रहे क्षेत्रों में अब सड़क संपर्क बन चुका है। चिकित्सा, शिक्षा, बाजार से जुड़ी और व्यावसायिक गतिविधियां लोगों के लिए आसानी से उपलब्ध हो गई हैं। 111 किमी लंबे कटरा-बनिहाल खंड के निर्माण की लागत अब तक ₹30,672.34 करोड़ रही है। 2014 के बाद से इस परियोजना के लिए बजट आवंटन में कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है, जिससे निर्माण गतिविधियों में तेजी आई है।

रोजगार सृजन

- भूमि मालिकों को रेलवे में नौकरी, जिन मामलों में उनकी 75% से ज्यादा जमीन का अधिग्रहण किया गया।
- 1,833.92 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया गया और जमीन देने वाले 799 पात्र लोगों को नौकरी दी गई।
- ठेकेदारों के माध्यम से रोजगार: 14,069 (स्थानीय लोगों को लगभग 65% रोजगार)
- अब तक 500 लाख से ज्यादा श्रम दिवस के रोजगार सृजित किए जा चुके हैं।
- इसके अलावा कारीगरों का कौशल विकास किया गया, जिनमें से कई अब कहीं और काम कर रहे हैं।

संपर्क सड़कों का निर्माण

- 205 किमी से ज्यादा लंबी संपर्क सड़कों का निर्माण किया गया जिसमें 1

सुरंग और 320 पुल शामिल हैं।

- इससे दूर-दराज के क्षेत्रों के 73 गांवों (करीब 1.5 लाख लोग लाभान्वित) को कनेक्टिविटी प्रदान हुई।
- पहले यहां सिर्फ पैदल या नावों द्वारा ही पहुंचा जा सकता था लेकिन अब चौपहिया वाहनों से भी पहुंचा जा सकता है।
- पीएमजीएसवाई की सड़कें अब इन अप्रोच सड़कों से निकल रही हैं।
- इसलिए परियोजना के पूरे होने का तत्काल लाभ स्थानीय आबादी तक पहुंच रहा है।

कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत विभिन्न गतिविधियां

- रामबन जिले में 9 एंबुलेंस उपलब्ध कराई गई।
- 15 मोटराइज्ड व्हील चेयर।
- बनिहाल, रामबन और रियासी में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित।
- कोविड क्वारंटीन केंद्र।
- अस्पतालों को चिकित्सा उपकरण दिए गए: ईसीजी मशीन, अल्ट्रा साउंड मशीन एक्स-रे प्लांट और सी-आर्म टेबल उपलब्ध कराए जाने से बनिहाल के सरकारी अस्पताल में चिकित्सा सुविधा का उन्नयन।
- शैक्षिक बुनियादी ढांचे में सुधार : रामबन में स्कूल निर्मित और सुंबर में निर्माणाधीन। रियासी में दो सरकारी स्कूलों में पुस्तकालय को अपग्रेड किया गया, रामबन जिले के दस स्कूलों में पोर्टकेबिन शौचालय ब्लॉक का निर्माण।
- महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केन्द्र: बनिहाल में सिलाई एवं कढ़ाई के लिए एक महिला प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया।
- गांवों में जलापूर्ति।
- गांवों में पक्की सड़कें।

चालू वित्त वर्ष के दौरान, अगस्त, 2022 तक 216 मानवयुक्त समपारों को हटाया गया

भारतीय रेल में समपारों को हटाए का कार्य मिशन मोड में किया जा रहा है। अब तक भारतीय रेल ब्रॉड गेज नेटवर्क पर सभी मानव रहित समपारों को हटा दिया गया है। मानव रहित समपारों को हटाने की गति 2009-14 के दौरान प्रति वर्ष 1,137 से बढ़कर 2014-19 के दौरान अब औसतन 1,884 प्रति वर्ष हो गई है।

वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, 1,000 के लक्ष्य के मुकाबले अगस्त-22 के अंत तक 216 मानवयुक्त समपारों को हटा दिया गया है, जोकि इसी अवधि में वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान हासिल प्रगति की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक है।

वर्ष 2009-14 की अवधि के दौरान 199 मानवयुक्त समपारों को बंद कर दिया गया जिनकी संख्या 2014-22 के दौरान प्रति वर्ष 676 हो गई।

मानवयुक्त समपारों को समाप्त करने के कार्य में तेजी लाने के उद्देश्य से पुलों के ऊपर/नीचे सड़कों का निर्माण और रेलवे के संचालन (विशेषकर स्वर्णिम चतुर्भुज/ डायगनल मार्गों और पहचाने गए मार्गों पर 160 किमी प्रति घंटे) में सुधार के लिए प्राथमिकताएं तय करके उन्मूलन कार्यों के 100 प्रतिशत निधियन के लिए नीति में



परिवर्तन जैसे उपाय किए गए हैं। हालांकि आरओबी/आरयूबी के निर्माण की लागत रेलवे और संबंधित राज्य सरकार द्वारा समान रूप से साझा की जा रही थी, हाल ही में वित्त पोषण प्रतिमान में बदलाव ने किसी भी पक्ष को अपनी आवश्यकता के आधार पर निर्माण की पूरी लागत वहन करने की अनुमति दे दी है।

प्रगति में तेजी लाने के लिए राशि का आबंटन पिछले वित्त वर्ष 2021-22 के ₹4,500 करोड़ से बढ़ाकर ₹6,500 करोड़ (44% की वृद्धि) कर दिया गया है।

पुलों के ऊपर/नीचे सड़कों का निर्माण (आरओबी/आरयूबी):

समपारों को हटाने के तहत समपारों के स्थान पर पुलों के ऊपर/नीचे सड़कों का निर्माण किया जा रहा है। 2014-22 की अवधि के दौरान पुलों के ऊपर/नीचे सड़कों के निर्माण की प्रगति 1,225 संख्या प्रति वर्ष है जो कि 2009-14 के दौरान 763 की तुलना में 61 प्रतिशत अधिक है। वर्तमान वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, अगस्त 2022 तक 250 सड़कों का पुल के ऊपर/नीचे निर्माण किया गया है जो इसी अवधि के लिए वित्त वर्ष 2021-22 की तुलना में 5 प्रतिशत अधिक है।

डिजिटल इंडिया पहल को बढ़ावा देती भारतीय रेल

भारतीय रेल में 'डिजिटल इंडिया' पहल को बढ़ावा देने के लिए रेलवे स्टेशनों पर खानपान इकाइयों के माध्यम से खाद्य पदार्थों की खरीद के लिए डिजिटल लेन-देन को प्रोत्साहित किया जा रहा है और 8,878 स्थिर इकाइयों में डिजिटल भुगतान की सुविधा है। इसके अलावा, खानपान इकाइयों में हैंडहेल्ड पीओएस मशीनें मुद्रित बिल और रसीदें बनाने के लिए प्रदान की जा रही हैं जो किए गए लेन-देन के सभी विवरणों को दर्शाती हैं और ओवरचार्जिंग की शिकायतों को दूर करती हैं। वर्तमान में 596 ट्रेनों में 3,081 पीओएस मशीनें उपलब्ध हैं। 4,316 स्थिर इकाइयां पीओएस मशीन के साथ उपलब्ध हैं। ट्रेनों में यात्रियों के लिए उपलब्ध विकल्पों की सीमा को बढ़ाने के लिए, भारतीय रेल पर ई-खानपान सेवाएं शुरू की गई हैं। ई-खानपान सेवाओं का प्रबंधन आईआरसीटीसी द्वारा किया जाता है। यात्री ई-टिकट की बुकिंग के समय या ट्रेन में यात्रा करते समय ऐप/कॉल सेंटर/वेबसाइट/1323 पर कॉल करके अपनी पसंद के भोजन का प्री-ऑर्डर दे सकते हैं। ई-कैटरिंग सेवा वर्तमान में 1,755 सेवा प्रदाताओं और 14 फूड एग्रीगेटर्स के माध्यम से 310 रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध है, जो प्रतिदिन औसतन 41,844 भोजन की आपूर्ति करती है।











भारती
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यत

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

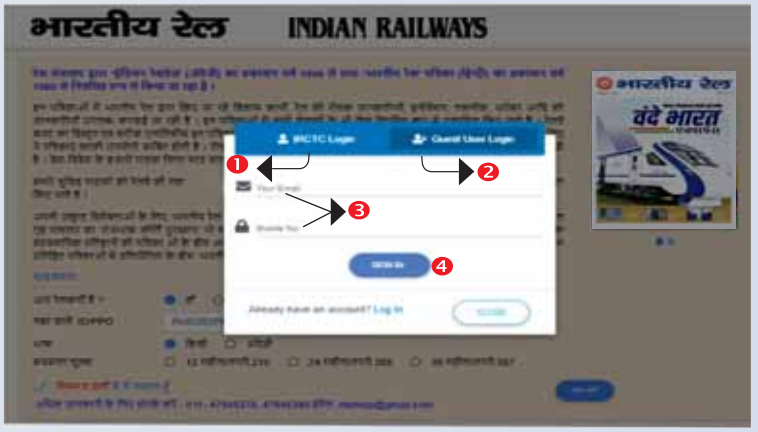
आप सीधे www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग–इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

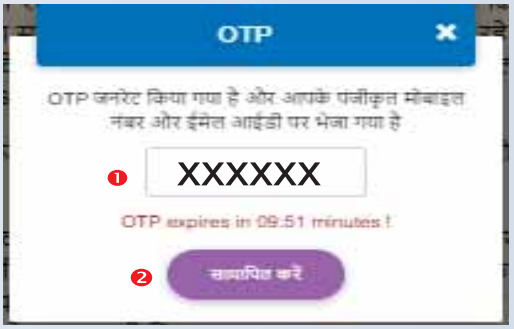


❷ लॉग–इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग–इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई–मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई–मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट–वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

ीय रेल
ना प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

❶ यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।

❷ यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।

❸ 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।

❹ एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



❺ नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

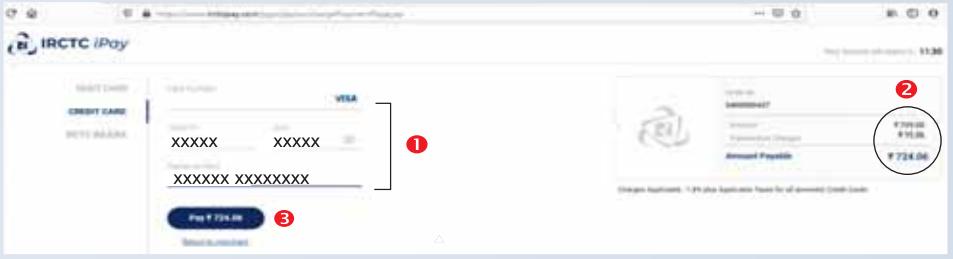
STEP 4

❶ अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें



❷ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7



❶ पेमेंट मोड की डीटेल भरें ❷ पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
❸ संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।
➲ बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

भारतीय रेल की अगस्त, 2022 तक पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कुल राजस्व में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई



इस वर्ष अगस्त तक माल ढुलाई से प्राप्त राजस्व ₹65,505.02 करोड़ था और पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में ₹10,780.03 करोड़ (20 प्रतिशत) की वृद्धि हुई है। यह इस अवधि के दौरान 58 एमटी से अधिक की इंक्रीमेंटल लोडिंग और एनटीकेएम में 18 प्रतिशत की वृद्धि के बल पर प्राप्त किया गया है। इस वृद्धि में कोयला परिवहन के अलावा खाद्यान्न, उर्वरक, सीमेंट, खनिज तेल, कंटेनर यातायात और शेष अन्य सामानों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विविध राजस्व ₹2,267.60 करोड़ था, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में ₹1,105 करोड़ (95 प्रतिशत) की वृद्धि दर्शाता है। अगस्त 2022 के अंत में रेलवे राजस्व की स्थिति नीचे संक्षेप में दी गई है:

अगस्त, 2022 के अंत में भारतीय रेल का कुल राजस्व ₹95,486.58 करोड़ था, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में ₹26,271.29 करोड़ (38 प्रतिशत) की वृद्धि दर्शाता है। यात्री यातायात से राजस्व पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 13,574.44 करोड़ रुपये(116%) की वृद्धि के साथ ₹25,276.54 करोड़ था। आरक्षित और अनारक्षित दोनों खंडों में पिछले वर्ष की तुलना में यात्री यातायात में भी वृद्धि हुई है। लंबी दूरी की आरक्षित मेल एक्सप्रेस ट्रेनों की तुलना में यात्री और उपनगरीय ट्रेनों में अधिक वृद्धि हुई है।

अन्य कोचिंग राजस्व ₹2,437.42 करोड़ था, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में ₹811.82 करोड़ (50 प्रतिशत) की वृद्धि दर्शाता है। भारतीय रेल के पार्सल खंड में मजबूत वृद्धि से इस बढ़त में तेजी आई है।



करोड़ रुपये

श्रेणी	वास्तविक 2021-22	वास्तविक अगस्त 2021 तक	वास्तविक अगस्त 2022 तक	पिछले वर्ष की तुलना में अंतर धनराशि	%
यात्रियों से प्राप्त राजस्व	39214.38	11702.10	25276.54	13574.44	116%
अन्य कोचिंग राजस्व	4899.55	1625.60	2437.42	811.82	50%
माल ढुलाई से प्राप्त राजस्व	141096.39	54724.99	65505.02	10780.03	20%
विविध राजस्व	6067.97	1162.60	2267.60	1105.00	95%
कुल राजस्व	191278.29	69215.29	95486.58	26271.29	38%

भारतीय रेल ने
ऑटोमोबाइल यातायात में वृद्धि दर्ज की

परिवहन का एक स्वच्छ माध्यम होने के कारण रेलवे न केवल ऑटोमोबाइल उद्योग को बड़ी संख्या में वाहनों को लंबी दूरी तक के परिवहन में मदद करता है, बल्कि इन्हें कार्बन फुटप्रिंट को कम करने का भी अवसर देता है। हाल के दिनों में भारतीय रेल में ऑटोमोबाइल यातायात में तेज वृद्धि देखी गई है। ऑटोमोबाइल यातायात में यह वृद्धि विभिन्न पहलों का परिणाम है, जैसे निजी स्वामित्व वाले विशेष वैगनों की उपलब्धता। सोसाइटी फॉर इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (एसआईएएम) सहित ऑटोमोबाइल उद्योग से जुड़े हितधारकों द्वारा उठाए गए मुद्दों के आधार पर, वाहन किराया ट्रेन संचालक (एएफटीओ) नीति को समय-समय पर उदार बनाया गया है। यह ऑटोमोबाइल निर्माताओं को उनकी जरूरतों के अनुरूप विशेष वैगनों के मालिक होने की अनुमति देता है।

एसयूवी कारों के परिवहन की सुविधा के लिए, मौजूदा बीसीएसीबीएम वैगनों के अलावा आरडीएसओ में ऑटो-कैरियर वैगनों के नए डिजाइन को अंतिम रूप दिया जा रहा है। ऑटोमोबाइल की लोडिंग/अनलोडिंग की सुविधा के लिए निवेशकों/लॉजिस्टिक्स प्रदाताओं से प्राप्त सुझावों के आधार पर मौजूदा एनएमजी वैगनों में डिजाइन-संशोधन भी (एनएमजीएच और एनएमजीएचएस) किया जा रहा है।

साथ ही, शॉर्ट लीड ट्रैफिक बढ़ाने के लिए, एनएमजी/बीसीसीएनआर और बीसीएसीएम वैगनों के लिए -1,200 किमी तक माल किराया दर को संशोधित किया गया है। उद्योग जगत की मांग के अनुसार ऑटोमोबाइल यातायात के लिए और अधिक टर्मिनल खोले जा रहे हैं।

इसलिए चालू वित्त वर्ष के पहले पांच महीनों के दौरान रेलवे द्वारा छोटे यात्री वाहनों (कारों) के परिवहन की मात्रा में सालाना 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।



'यात्री वाहनों (कारों)' के घरेलू परिवहन में मॉडल हिस्सेदारी :

अनुमान केवल कारों के परिवहन पर आधारित हैं। दोपहिया और वाणिज्यिक वाहनों के घरेलू यातायात को शामिल नहीं किया गया है।

2013-14	1.50 प्रतिशत
2014-15	2.08 प्रतिशत
2015-16	3.62 प्रतिशत
2016-17	4.13 प्रतिशत
2017-18	4.50 प्रतिशत
2018-19	7.06 प्रतिशत
2019-20	11.17 प्रतिशत
2020-21	14.71 प्रतिशत
2021-22	16.00 प्रतिशत

लदान किए गए रेक की संख्या	
2019-20	1,599
2020-21	2,681
2021-22	3,344
2022-23 (अगस्त तक)	2,206

पिछले वर्ष से तुलना

लदान किए गए रेक की संख्या		
	2021-22	2022-23
अप्रैल	270	369
मई	123	392
जून	284	443
जुलाई	317	494
अगस्त	320	508

भारतीय रेल ने अगस्त 2022 में रिकार्ड 119.32 एमटी माल ढुलाई की



भारतीय रेल ने अगस्त 2022 में 119.32 एमटी मासिक माल ढुलाई करके माल ढुलाई के मामले में अब तक के सर्वश्रेष्ठ अगस्त माह के रूप में दर्ज किया है। अगस्त 2022 में वर्ष 2021 के सर्वश्रेष्ठ अगस्त माह में की गई माल ढुलाई के आंकड़ों की तुलना में 8.69 एमटी यानी 7.86 प्रतिशत अधिक माल ढुलाई की गई है। इसके साथ, भारतीय रेल ने माल ढुलाई के मामले में लगातार 24 महीने को सर्वश्रेष्ठ महीनों के रूप में दर्ज किया है।

भारतीय रेल ने कोयले की ढुलाई में 9.2 एमटी की वृद्धि दर्ज की है, इसके बाद उर्वरक में 0.71 एमटी, शेष अन्य सामानों में 0.68 एमटी और 0.62 एमटी कंटेनर शामिल हैं। वित्त वर्ष 2022-23 में ऑटोमोबाइल लोडिंग में वृद्धि माल ढुलाई व्यवसाय का एक और आकर्षण रहा है और वित्त वर्ष 2022-23 में अगस्त तक 2206 रेक लोड किए गए हैं, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 1314 रेक यानी 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

1 अप्रैल, 2022 से 31 अगस्त, 2022 तक कुल मिलाकर माल लदान 620.87 एमटी रहा है, जबकि 2021-22 में 562.75 एमटी हासिल किया गया था, यानी पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में 10.32 प्रतिशत की वृद्धि के साथ माल ढुलाई में 58.11 एमटी की वृद्धि दर्ज की गई।

माल ढुलाई एनटीकेएम (नेट टन किमी) अगस्त 2021 में 63 बिलियन से बढ़कर अगस्त 2022 में 73 बिलियन हो गई है, जिसमें 16 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। पहले पांच महीनों में संचयी एनटीकेएम में भी 18.29 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

बिजली और कोयला मंत्रालय के साथ निकट समन्वय में बिजली घरों को कोयले की आपूर्ति बढ़ाने के लिए भारतीय रेल के निरंतर प्रयास अगस्त के महीने में माल ढुलाई के प्रदर्शन की प्रमुख विशेषताओं में से एक रहा है। बिजली घरों में कोयले की लदान (घरेलू और आयातित दोनों) अगस्त में 10.46 एमटी की वृद्धि हुई है, जिसमें 44.64 एमटी कोयले को पिछले वर्ष 34.18 एमटी के मुकाबले बिजली घरों में ले जाया गया था यानी 31 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। कुल मिलाकर वर्ष के पहले पांच महीनों में भारतीय रेल ने पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 32 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि के साथ 58.41 एमटी से अधिक अतिरिक्त कोयला बिजली घरों के लिए ढुलाई की है।

सामग्री के अनुसार वृद्धि की संख्या यह दर्शाती है कि भारतीय रेल ने लगभग सभी सामग्री खंडों में निम्नलिखित वृद्धि दर के साथ प्रभावशाली वृद्धि हासिल की है:

सामग्री	वृद्धि (एमटी)	प्रतिशत वृद्धि
कोयला	9.20	19.26
उर्वरक	0.71	17.10
शेष अन्य सामग्री	0.68	7.69
कंटेनर	0.62	9.39
पीओएल	0.28	7.80

रेलवे ट्रैक परियोजनाओं को जल्द पूरा करने को प्राथमिकता दे रही है भारतीय रेल

- *चालू वित्त वर्ष में अब तक पहले ही 1,352 रूट किमी (नई लाइनों/आमान परिवर्तन/मल्टी ट्रैकिंग) को पूरा कर लिया गया है*
- *पिछले वित्त वर्ष के दौरान इसी अवधि में पूरे किए गए कार्यों का तीन गुना पूरा कर लिया गया है*



भारतीय रेल लॉजिस्टिक्स की इकाई लागत को घटाकर न्यूनतम करने के लिए निरंतर प्रयासरत रही है। हाल ही में रेलवे पटरियों से संबंधित रेल अवसंरचना परियोजनाओं को काफी बढ़ावा दिया गया है और इसके परिणामस्वरूप एक प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। पिछले वर्ष की तुलना में अप्रैल-सितंबर (अब तक) की अवधि में रेलवे ट्रैक परियोजनाओं यानी नई लाइनों, आमान परिवर्तन और मल्टी-ट्रैकिंग (दोहरीकरण/तिहरीकरण) की प्रगति में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई है।

चालू वित्त वर्ष के दौरान 21 सितंबर, 2022 तक रेलवे ने नई लाइनों, आमान परिवर्तन और मल्टी ट्रैकिंग परियोजनाओं के 1,353 ट्रैक किमी (टीकेएम) का काम पूरा कर लिया है। सितंबर महीने में ही इसमें 150 टीकेएम को और जोड़े जाने की संभावना है। यह संयुक्त आंकड़ा पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के पिछले आंकड़े के तीन गुना से भी अधिक है। पिछले साल 30 सितंबर, 2021 तक 482 टीकेएम का काम पूरा किया गया था।

चालू वित्त वर्ष के दौरान अब तक 42 टीकेएम नई लाइनों, 28 टीकेएम आमान परिवर्तन और 1,283 टीकेएम मल्टी ट्रैकिंग का काम पूरा किया जा चुका है। हालांकि, पिछले वित्त वर्ष के दौरान (सितंबर 2021 तक) केवल 4 टीकेएम आमान परिवर्तन और 478 टीकेएम मल्टी ट्रैकिंग का काम पूरा किया गया था। इसी अवधि के दौरान नई लाइनों में कोई प्रगति हासिल नहीं की गई थी।

चालू किए गए प्रमुख अनुभाग ये हैं:

दोहरीकरण/मल्टी ट्रैकिंग : दौंड-गुलबर्गा (225 किमी)-मुंबई-चेन्नई का स्वर्णिम चतुर्भुज मार्ग, विजयवाड़ा-गुडीवाड़ा-भीमावरम (221 किमी) दोहरीकरण-आंध्र प्रदेश, सिकंदराबाद-महबूबनगर दोहरीकरण (85 किमी)-तेलंगाना।

आमान परिवर्तन: मानसी-सहरसा-पूर्णिया (169 किमी)-बिहार, मावली-बड़ी सादड़ी (82 किमी)-राजस्थान।

नई लाइन : भद्राचलम-सत्तुपल्ली (56 किमी)-तेलंगाना। वर्ष 2022-23 के दौरान नई लाइन/दोहरीकरण/आमान परिवर्तन के लिए आवंटित कुल पूंजीगत व्यय ₹67,000 करोड़ (बीई) है। अगस्त 2022 तक का वास्तविक व्यय ₹20,075 करोड़ है।

2021-22 में नई लाइन/दोहरीकरण/आमान परिवर्तन के लिए आवंटित कुल पूंजीगत व्यय ₹45,465 करोड़ (बीई) था। अगस्त 2021 तक वास्तविक व्यय ₹15,281 करोड़ था।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021-22 के दौरान नई लाइन/दोहरीकरण/आमान परिवर्तन में 2,400 किमी के लक्ष्य के मुकाबले 2,904 किमी हासिल किया गया था जो कि अब तक की सर्वाधिक शुरुआत (डीएफसी को छोड़कर) थी। चालू वर्ष के लिए लक्ष्य 2,500 टीकेएम है।

रेल परियोजनाओं के प्रभावकारी और त्वरित कार्यान्वयन के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे विभिन्न कदमों में ये शामिल हैं-
(i) प्राथमिकता वाली परियोजनाओं के लिए निधि या फंड के आवंटन में व्यापक वृद्धि
(ii) फील्ड स्तर पर अधिकारों को सौंपना
(iii) विभिन्न स्तरों पर परियोजना की प्रगति की बारीकी से निगरानी, और
(iv) शीघ्र भूमि अधिग्रहण, वानिकी एवं वन्यजीव मंजूरी और परियोजनाओं से संबंधित अन्य मुद्दों को हल करने के लिए राज्य सरकारों और संबंधित अधिकारियों के साथ मिलकर नियमित तौर पर आगे की कार्रवाई।

भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयों की 2022-23 में रिकॉर्ड उत्पादन हासिल करने की प्रक्रिया में तेजी



भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयां यानी इंटीग्रल कोच फैक्टरी (आईसीएफ), चेन्नई, रेल कोच फैक्टरी कपूरथला (आरसीएफ), रायबरेली स्थित मॉडर्न कोच फैक्टरी (एमसीएफ), चित्तरंजन स्थित चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स (सीएलडब्ल्यू), वाराणसी स्थित बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू), पटियाला स्थित पटियाला लोकोमोटिव वर्क्स (पीएलडब्ल्यू), बेंगलुरु स्थित रेल व्हील फैक्टरी (आरडब्ल्यूएफ) और बेला स्थित रेल व्हील प्लांट 2022-23 में रिकॉर्ड उत्पादन हासिल करने की प्रक्रिया में तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

रेलवे की सभी उत्पादन इकाइयाँ भारतीय रेल की इंजन और सवारी डिब्बों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए आपूर्ति कर रही हैं। उत्पादन इकाइयों को नवीनतम एम एंड पी, शेड और सुविधाओं के रूप में आधुनिकीकरण के लिए निवेश मिलना जारी है। यहां तक कि कोविड के दौरान भी रेलवे उत्पादन इकाइयों ने कोविड के लिए निर्धारित मानदंडों का पालन करते हुए कोचों का उत्पादन करके रेलवे क्षेत्र को सहयोग देना जारी रखा। आईसीएफ, आरसीएफ और एमसीएफ कोच निर्माण इकाइयाँ हैं जो वंदे भारत, एलएचबी, ईएमयू, एमईएमयू, विस्टाडोम और अन्य कोच बना रही हैं। आईसीएफ ने पहला स्वदेशी ट्रेनसेट केवल 18 महीनों में डिजाइन और निर्मित किया था और इसे टी18 कहा जाता है। ऐसी दो ट्रेनें पहले से ही दिल्ली-वाराणसी और दिल्ली-कटरा के बीच चल रही हैं। प्रधानमंत्री की परिकल्पना के मुताबिक भारतीय रेल 23 अगस्त तक 75 अन्य वंदे भारत ट्रेनों को शामिल करने की योजना बना रही है। सीएलडब्ल्यू, बीएलडब्ल्यू और पीएलडब्ल्यू लोकोमोटिव निर्माण इकाइयाँ हैं। वे उन्नत इलेक्ट्रिक इंजन यानी डब्ल्यूएजी9 और डब्ल्यूएपी7 का निर्माण कर रही हैं। इन इकाइयों में जल्द ही आधुनिक ऊर्जा कुशल 12,000 हॉर्सपावर और 9,000 हॉर्सपावर के बनाए जाएंगे। इसके अलावा आरडब्ल्यूएफ और आरडब्ल्यूपी पहियों का उत्पादन करने वाली इकाइयाँ हैं, जो हर प्रकार के इंजन और सवारी डिब्बों की आपूर्ति कर रही हैं। रेल व्हील प्लांट, बेलापुर और रेल व्हील फैक्टरी, येहलांका ने मिलकर इस वित्तीय वर्ष (अगस्त तक) में 92118 पहियों का उत्पादन किया है, जो पिछले साल इसी अवधि के दौरान उत्पादन किए गए पहियों की तुलना में 6.5 गुना अधिक है। इसी प्रकार इसी अवधि के दौरान रेल एक्सल का उत्पादन 7 प्रतिशत बढ़ा है।

पिछले वर्ष 2021-22 में सभी उत्पादन इकाइयों ने रिकॉर्ड उत्पादन हासिल किया। पिछले साल एलएचबी में कोच उत्पादन में 45 प्रतिशत और लोको उत्पादन में 34 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। इस वर्ष 22-23 में उत्पादन इकाइयों को अधिक उत्पादन का लक्ष्य दिया गया है। कुछ आपूर्ति शृंखला बाधाओं के बावजूद सभी इसे हासिल करने के लिए तैयार हैं।

अगले 10 वर्षों में रेलवे की मालभाड़ा बाजार हिस्सेदारी को वर्तमान के 28 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक ले जाने की योजना है। इसके लिए, क्षमता वृद्धि, इंजन और सवारी डिब्बों का आधुनिकीकरण, विश्व स्तरीय स्टेशनों और पटरियों आदि के लिए धन उपलब्ध कराया गया है। तदनुसार उत्पादन इकाइयों द्वारा बड़ी संख्या में वंदे भारत और 3-फेज ईएमयू और एमईएमयू जैसे आधुनिक इंजन और सवारी डिब्बों का उत्पादन किया जाएगा।



आरपीएफ द्वारा रेलवे टिकटों की दलाली करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई

- *पश्चिम रेलवे की आरपीएफ टीम ने रेलवे टिकटों के अवैध धंधे में लिप्त दलालों के विरुद्ध सख्त कदम उठाए*
- *6 व्यक्तियों की गिरफ्तारी से ₹43 लाख मूल्य के रेलवे टिकट जब्त किए गए*



130 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश की मांग को पूरा करने के लिए भारतीय रेल के यात्री परिवहन में सीटों और बर्थ की बहुत अधिक मांग है। भारतीय रेल द्वारा क्षमता वृद्धि के बावजूद मांग आपूर्ति के अंतर में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है। इस मांग और आपूर्ति के अंतर के कारण दलालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है जो आरक्षित सीटों का अलग-अलग तरीकों से उपयोग करते हैं और उन्हें जरूरतमंदों को अधिक मूल्य पर बेचते हैं। ऑनलाइन कन्फर्म रेलवे आरक्षण करने के लिए अवैध सॉफ्टवेयर के उपयोग से आम आदमी के लिए कन्फर्म टिकटों की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। आरपीएफ दलाली (रेलवे टिकटों की खरीद और आपूर्ति के व्यापार को अनधिकृत रूप से चलाने) में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कोडनेम (ऑपरेशन उपलब्ध) के तहत मिशन मोड में गहन और निरंतर कार्रवाई कर रहा है।

हाल ही में ह्यूमन इंटेलिजेंस द्वारा डिजिटल इनपुट के आधार पर दी गई जानकारी के आधार पर आरपीएफ की टीम ने 8 मई, 2022 को राजकोट के मन्नान वाघेला (ट्रैवल एजेंट) को पकड़ने में सफलता हासिल की, जो बड़ी मात्रा में रेलवे टिकटों को हथियाने के लिए अवैध सॉफ्टवेयर यानी कोविड-19 का उपयोग कर रहा था। इसके अलावा, एक अन्य व्यक्ति कन्हैया गिरि (अवैध सॉफ्टवेयर कोविड-एक्स, एएनएमएसबीएसीके, ब्लैक टाइगर आदि के सुपर विक्रेता) को वाघेला द्वारा प्रदान की गई जानकारी के आधार पर 17 जुलाई, 2022 को मुंबई से गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ के दौरान गिरि ने अन्य सहयोगियों और वापी के एडमिन/डेवलपर अभिषेक शर्मा के नामों का खुलासा किया, जिन्हें 20 जुलाई, 2022 को गिरफ्तार किया गया था। अभिषेक शर्मा ने इन सभी अवैध सॉफ्टवेयर्स के एडमिन होने की बात कबूल की है। गिरफ्तार आरोपी व्यक्तियों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के आधार पर, 3 और आरोपी व्यक्तियों- अमन कुमार शर्मा, वीरेंद्र गुप्ता और अभिषेक तिवारी को क्रमशः मुंबई, वलसाड (गुजरात) और सुल्तानपुर (यूपी) से गिरफ्तार किया गया। आरपीएफ इस मामले में शामिल कुछ और संदिग्धों की तलाश कर रही है।

ये आरोपी व्यक्ति आईआरसीटीसी के फर्जी वर्चुअल नंबर और फर्जी यूजर आईडी प्रदान करने के साथ-साथ सोशल मीडिया यानी टेलीग्राम, व्हाट्सएप आदि का उपयोग करके इन अवैध सॉफ्टवेयरों के विकास और बिक्री में शामिल थे। इन आरोपियों के पास नकली आईपी पते बनाने वाले सॉफ्टवेयर थे, जिनका इस्तेमाल ग्राहकों पर प्रति आईपी पते की सीमित संख्या में टिकट प्राप्त करने के लिए लगाए गए प्रतिबंध को दूर करने के लिए किया जाता था। उन्होंने डिस्पोजेबल मोबाइल नंबर और डिस्पोजेबल ईमेल भी बेचे हैं, जिनका उपयोग आईआरसीटीसी की फर्जी यूजर आईडी बनाने के लिए ओटीपी सत्यापन के लिए किया जाता है।

इस मामले में आरोपित सभी व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने से ₹43,42,750/- मूल्य के 1,688 टिकटों को भी जब्त किया गया, जिन पर यात्रा शुरू नहीं की जा सकी थी। विगत में, इन आरोपियों ने ₹28.14 करोड़ मूल्य के टिकट खरीदे और बेचे थे, जिसमें उन्हें भारी कमीशन मिला। यह काले धन की उत्पत्ति की सीमा को दर्शाता है जो अन्य गैर-कानूनी गतिविधियों को वित्तपोषित करते हैं।

आरोपियों द्वारा दी गई जानकारी की एक टीम द्वारा जांच की जा रही है ताकि खामियों को दूर किया जा सके और इस तरह की गलत प्रथा को रोकने के उपाय किए जा सकें। इस तरह का ऑपरेशन भविष्य में भी जारी रहेगा।

ट्रेनों को ट्रैक करने के लिए भारतीय रेल द्वारा नई तकनीकों का उपयोग



इसरो के सहयोग से विकसित रीयल टाइम ट्रेन इंफॉर्मेशन सिस्टम (आरटीआईएस) को ट्रेनों के आगमन और प्रस्थान या पूर्वाभ्यास सहित स्टेशनों पर ट्रेन की आवाजाही के समय की स्वत: जानकारी प्राप्त करने के लिए इंजनों में लगाया जा रहा है। कंट्रोल ऑफिस एप्लीकेशन (सीओए) सिस्टम में ये अपने आप उन ट्रेनों के कंट्रोल चार्ट पर स्वत: सारणी तैयार कर लेते हैं। आरटीआईएस 30 सेकंड के अंतराल पर मिड- सेक्शन अपडेट प्रदान करता है। ट्रेन नियंत्रण अब बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के आरटीआईएस सक्षम इंजनों/ट्रेन के स्थान और गति पर अधिक बारीकी से नजर रख सकता है।

21 इलेक्ट्रिक लोको शेड में 2,700 इंजनों के लिए आरटीआईएस उपकरण स्थापित किए गए हैं। दूसरे चरण के रोल आउट के हिस्से के रूप में, इसरो के सैटकॉम हब का उपयोग करके 50 लोको शेड में 6,000 और इंजनों को शामिल किया जाएगा। वर्तमान में, लगभग 6,500 लोकोमोटिव (आरटीआईएस और आरईएमएमएलओटी) को सीधे कंट्रोल ऑफिस एप्लिकेशन (सीओए) में डाला जा रहा है। इसने सीओए और एनटीईएस एकीकरण के माध्यम से यात्रियों को ट्रेनों की स्वचालित चार्टिंग और नवीनतम जानकारी के सूचना प्रवाह को सक्षम किया है।

भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी द्वारा नर्सिंग कर्मचारियों के लिए प्रथम राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन



भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी, वडोदरा द्वारा क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में रेलवे नर्सिंग कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रथम राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन महानिदेशक, रेलवे स्वास्थ्य सेवा, डॉ. प्रसन्ना कुमार द्वारा 12 सितंबर, 2022 को किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन इकाईयों एवं आरडीएसओ के लगभग 166 नर्सिंग कर्मचारियों ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह में डॉ. पी. के. सामंतराय, प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक, उत्तर पश्चिम रेलवे, डॉ. गिरीश कलमाडी, प्रोफेसर (स्वास्थ्य प्रबंधन) भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी डॉ. पी. सी. मीणा, चिकित्सा निदेशक/केंद्रीय अस्पताल जयपुर एवं डॉ. अरूणांगशु सरकार, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक-अजमेर एवं श्रीमती मैत्रेयी चारण प्रिंसिपल क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर सहित रेलवे के अन्य अधिकारीगण व कर्मचारी उपस्थित थे।

कर्मचारियों को विभिन्न विषयों पर जैसे: सामग्री प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, चिकित्सा परीक्षा की प्रासंगिकता, व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य देखभाल, कामगार का स्वास्थ्य, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अस्पताल प्रबंधन में नर्सिंग स्टाफ की भूमिका आदि विषयों पर नर्सिंग कर्मियों को रेलवे स्वास्थ्य सेवा के अधिकारियों एवं प्रशिक्षण कर्ताओं द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

मध्य रेल के अलर्ट मोटरमैन-सच्चे जीवन रक्षक- रेलवे ट्रैक पर 12 लोगों की बचाई जान



मध्य रेल पर कार्यरत विभिन्न अलर्ट मोटरमैनों की वजह से अप्रैल से अगस्त, 2022 की अवधि के दौरान 12 लोगों की जान बचाई जा सकी। इनमें से 4 केस अगस्त में, 2 जुलाई में, 3 जून में, 2 मई में और 1 केस अप्रैल में हुआ। 31 अगस्त को श्री संजय कुमार चौहान, मुंबई मंडल ने ठाणे-अंबरनाथ लोकल पर काम करते हुए देखा कि एक व्यक्ति ट्रेन के सामने ट्रैक पर पड़ा है, उन्होंने तुरंत आपातकालीन ब्रेक लगाकर ट्रेन रोक दिया। 28 अगस्त को श्री जी एस बिष्ट ने टिटवाला- सीएसएमटी लोकल पर काम करते हुए देखा कि एक महिला ट्रैक के बीच में आ जाती है। उन्होंने तुरंत इमरजेंसी ब्रेक लगाकर महिला की जान बचा ली। श्री एस वी जाधव, मुंबई मंडल ने सीएसएमटी- ठाणे पर काम करते हुए देखा कि एक लड़की चिंचपोकली-भायखला अप लाइन के बीच आ रही है। उसने लड़की से कुछ फीट पहले तुरंत ट्रेन रोक दी और उसकी जान बचा ली।

इसी प्रकार श्री राम शब्द ने अंबरनाथ-सीएसएमटी ट्रेन में काम करते हुए एक लड़के की जान बचाई, जो पटरी के बीच में कूदकर ट्रेन के सामने खड़ा हो गया था।

महाप्रबंधक, दक्षिण पश्चिम रेलवे ने संभावित दुर्घटना से बचाने हेतु कर्मचारी को किया सम्मानित

दिनांक 07 सितंबर, 2022 को दक्षिण पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय, रेल सौधा में श्री संजीव किशोर, महाप्रबंधक ने अनुकरणीय सुरक्षा चेतावनी एवं सजगता के लिए 4 कर्मचारियों को सम्मानित किया और सभी कर्मचारियों को सतर्क एवं सुरक्षित ट्रेन परिचालन को बनाए रखने की प्रेरणा दी। दिनांक 02 जुलाई, 2022 को श्री देवेंद्र भगत, स्टेशन मास्टर, येडमंगला ने गुजरते हुए माल ट्रेन के वैगन में ब्रेक बाइंडिंग और व्हील की कर्कश ध्वनि पर ध्यान दिया और उन्होंने तुरंत इसकी सूचना



नरीमोगारू स्टेशन मास्टर को दिया जिसके फलस्वरूप इस ट्रेन को रोका गया। ट्रेन के चालक दल ने वैगन की जांच की और उपचारात्मक उपाय किए। उनकी सचेतता और त्वरित कार्यवाई के कारण ट्रेन को संभावित दुर्घटना से बचाया गया।

केंद्रीय चिकित्सालय में हुआ ऑर्थोस्कोप, हार्मोनिक नाइफ बाल चिकित्सा आईसीयू और पार्ट सेल काउंटर की सुविधा का शुभारंभ



उत्तर मध्य रेलवे अपने स्वास्थ्य संबंधित आधारभूत संरचना के विस्तार पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। अपनी प्रतिबद्धता को और पुष्ट करते हुए केंद्रीय चिकित्सालय प्रयागराज में ऑर्थोस्कोप, हार्मोनिक नाइफ बाल चिकित्सा आईसीयू और 05 पार्ट सेल काउंटर की सुविधा का महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार एवं उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती पूनम कुमार द्वारा उद्घाटन किया गया। ऑर्थोस्कोप शरीर में जोड़ों के अंदर के दृश्य को उपलब्ध कराएगा। यह न्यूनतम इनवेसिव प्रक्रिया में और रोगियों के जल्दी ठीक होने में मददगार होगा।

महाप्रबंधक ने उत्तर मध्य रेलवे की 100वीं ट्रैक मशीन को हरी झंडी दिखा कर किया रवाना

उत्तर मध्य रेलवे की 100वीं आधुनिक ट्रैक मशीन के ट्रायल व कार्ययुक्त कमीशिनिंग का उद्घाटन महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे श्री प्रमोद कुमार ने किया।



भारतीय रेल में पहली आयातित ट्रैक मशीन का पदार्पण 1965 में हुआ था। पूर्व के लकड़ी के स्लीपरयुक्त रेलवे पथ के बदले प्रयोग में आ रहे कंक्रीट स्लीपरयुक्त ट्रैक का अनुरक्षण बिना ट्रैक मशीन के सम्भव नहीं है। वर्तमान में भारतीय रेल में 1,000 से ज्यादा विभिन्न प्रकार की ट्रैक मशीनें रेलपथ का रखरखाव एवं मरम्मत कर रही हैं। यह 100वीं मशीन यूनिमैट 4x4/45 टर्नआउट के टैम्पिंग एवं लाइनिंग लेवलिंग के लिए प्रयुक्त की जाती है। इससे एक साथ 04 रेलो की टैम्पिंग एक साथ की जा सकती है। इस मशीन में आधुनिक कम्प्यूटरीकृत कार्य प्रणाली (CWS) ऑटोमैटिक गाइडिंग कम्प्यूटर (ALC) तथा इलेक्ट्रानिक माइको कंट्रोलर कार्यप्रणाली प्रयुक्त किया गया है। इस मशीन के द्वारा ट्रैक की माप एवं सुधार आटोमैटिक मेजरिंग के द्वारा करना सम्भव हो सकेगा

केन्द्रीय रेलवे अस्पताल, मालीगांव में कैंसर जांच शिविर का आयोजन

दिनांक 30 अगस्त, 2022 को डॉ बी. बरुआ कैंसर संस्थान और लायंस क्लब के सहयोग से केंद्रीय अस्पताल, मालीगांव में 30 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं के लिए कैंसर जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक/पू.सी. रेल ने किया। जांच के दौरान तीन मामलों को संदिग्ध पाया गया और आगे की जांच के लिए भेज दिया गया।



पश्चिम रेलवे के डॉ. अंबेडकर नगर एवं इंदौर कोचिंग डिपो को मिला ग्रीनको सिल्वर रेटिंग प्रमाणन

पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल के डॉ. अम्बेडकर नगर और इंदौर स्थित कोचिंग डिपो को सीआईआई ग्रीनको, हैदराबाद द्वारा सिल्वर रेटिंग प्रदान की गई है। इसके साथ ही ये कोचिंग डिपो भारतीय रेल पर CII ग्रीनको द्वारा सिल्वर रेटिंग प्राप्त करने वाले पहले डिपो बन गए हैं। सीआईआई ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल टीम के सदस्यों द्वारा दोनों कोचिंग डिपो का निरीक्षण किया गया और ग्रीनको के सभी मानकों की जाँच की गई। सौर संयंत्र, ईटीपी संयंत्र, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी, प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था, टर्बो वेंटीलेटर, वर्षा जल संचयन, अपशिष्ट प्रबंधन, बिजली और पानी की बचत, हरित शिक्षा साइनेज आदि जैसे सभी मानक सीआईआई ग्रीनको के मानकों के अनुसार पाए गए। डॉ. अम्बेडकर नगर स्थित कोच केयर कॉम्प्लेक्स और इंदौर स्थित कोचिंग डिपो, सीआईआई ग्रीनको द्वारा सिल्वर रेटिंग प्राप्त करने वाले भारतीय रेल के पहले कोचिंग डिपो हैं।



दपरे ने एसएसएस हुब्बल्लि स्टेशन पर अपना पहला नर्सिंग पॉड लॉन्च किया



दक्षिण पश्चिम रेलवे के अंतर्गत पहली बार दिनांक 16 सितंबर, 2022 को एसएसएस हुब्बल्लि स्टेशन पर नर्सिंग पॉड्स का उद्घाटन किया गया। इस प्रकार रेलवे स्टेशन पर स्तनपान कराने वाली मां के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाया गया है। इन नर्सिंग पॉड्स में हवाई अड्डे या फाइव स्टार होटल की तरह डायपर चेंजिंग स्टेशन के अतिरिक्त प्रकाश और वेंटिलेशन के साथ बैठने के लिए आरामदायक कुशन की सुविधाएं हैं।

चिरेका निर्मित प्रगति का प्रतीक दौड़ते घोड़े का महाप्रबंधक द्वारा लोकार्पण

श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक ने चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना(चिरेका) द्वारा वित्त वर्ष 2021-22 में सबसे अधिक 486 लोको उत्पादन को चिह्नित करने के लिए स्क्रैप सामग्री से चिरेका कारखाना में निर्मित विकास का प्रतीक दौड़ते घोड़े का अनावरण किया, जो लोको उत्पादन में वर्षों से निरंतर प्रगति का प्रतीक है। श्री कश्यप ने 'टीम चिरेका' को बधाई दी। इस मौके पर वरिष्ठ अधिकारी गण और अन्य कर्मचारी गण उपस्थित थे.



चिरेका में विशेष सफाई एवं स्क्रैप रिमूवल अभियान का आयोजन



चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) स्थित इलेक्ट्रिक लोको बॉगी असेंबली वर्कशॉप में 27 अगस्त, 2022 को एक 'विशेष सफाई एवं स्क्रैप रिमूवल अभियान' का आयोजन किया गया। श्री सतीश कुमार कश्यप, महाप्रबंधक ने इस अभियान के दौरान वहां के स्वच्छता कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने 'स्वच्छता अभियान' का जायजा लेते हुए ईको फ्रेंडली और स्वच्छता का ध्यान रखने की बात सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक सुझाव दिए। संबंधित शॉप के विभागीय प्रमुख, अधिकारी, पर्यवेक्षक और कर्मचारीगण ने इस अभियान में सक्रिय योगदान दिया।

महाप्रबंधक महोदय ने निरीक्षण के क्रम में संबंधित वर्कशॉप के अधिकारियों, कर्मचारियों और पर्यवेक्षकों के साथ स्वच्छता की आवश्यकता पर बातचीत की तथा इस संदर्भ में आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

आरडीएसओ में 70वीं प्रबंधन समीक्षा बैठक का आयोजन



अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन (आरडीएसओ), लखनऊ रेल मंत्रालय का एकमात्र अनुसंधान एवं विकास विंग है। आरडीएसओ की प्रबंधन प्रणाली 1997 से आईएसओ 9001 मानक के निम्न दायरों के लिए प्रमाणित है: 'रेलवे उपकरण और उनके उप प्रणालियों के अनुसंधान, डिजाइन, विकास और मानकीकरण, रेलवे और अन्य के लिए विक्रेता विकास, निरीक्षण और तकनीकी परामर्श; और सभी आरडीएसओ निदेशालयों और साइट कार्यालयों को सहायता सेवाए'। डीजी/आरडीएसओ श्री संजीव भुटानी की अध्यक्षता में आरडीएसओ की 70वीं प्रबंधन समीक्षा बैठक (एमआरएम) 29 अगस्त, 2022 को आयोजित की गई, जिसमें उनके द्वारा आईएसओ 9001:2015 आवश्यकताओं के प्रभावी कार्यान्वयन की समीक्षा की गयी। इस बैठक में श्री बी.पी. अवस्थी, पीईडी/इन्फ्रा-II, श्री एस.सी. श्रीवास्तव, पीईडी/इंफ्रा-I, श्री राजेंद्र धंबेल, पीईडी/एस एंड टी उपस्थित थे।

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला में 'आत्मनिर्भर भारत' पर वेंडर मीट का आयोजन

रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला (आरसीएफ) ने 02 सितम्बर, 2022 को एक वेंडर मीट का आयोजन किया, जिसमें 120 उद्यमियों ने भाग लिया, जिनमें से अधिकांश नए विक्रेता थे। देश के विभिन्न हिस्सों से 30 से अधिक विक्रेता वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए बैठक में शामिल हुए। इसमें 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' नीतियों के तहत उच्च टेक्नोलॉजी कोच वस्तुओं के सप्लायर आधार के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया गया। बैठक में मीडियम स्केल उद्यम क्षेत्र के विकास पर जोर दिया गया। बैठक में श्री अशेष अग्रवाल



महाप्रबंधक, आर सी एफ ने कहा कि यह वेंडर मीट देश के विकास हेतु बेहतर वातावरण बनाने के भारतीय रेल के दृष्टिकोण का हिस्सा है। इस अवसर पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जहां कोच में लगने वाले स्वदेश में निर्मित सामान को प्रदर्शित किया गया।

कोलकाता मेट्रो में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का प्रतीक चिह्न युक्त स्मार्ट कार्ड उपलब्ध



'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत मेट्रो प्रशासन ने 15 अगस्त, 2022 से उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम मेट्रो के सभी बुकिंग काउंटरों से 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के प्रतीक चिह्न (लोगो) युक्त नए स्मार्ट कार्ड की बिक्री प्रारंभ कर दी है। 76वें स्वतंत्रता दिवस पर आरंभ किए गए इस नए रंग-रूप वाले स्मार्ट कार्ड की उपलब्धता से यात्री बेहद खुश हैं। इस प्रकार के 2.30 लाख नए स्मार्ट कार्ड 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की स्मृति में यात्रियों को बेचे जाएंगे। यात्रीगण इस नए कार्ड को पाकर खुश हैं जो उनके लिए एक संग्रह की वस्तु भी है।

उल्लेखनीय है कि महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे श्री अरुन अरोरा ने 13 अगस्त, 2022 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' प्रतीक चिह्न (लोगो) वाले इस नए लुक वाले स्मार्ट कार्ड का लोकार्पण किया।

उत्तर पश्चिम रेलवे भारत स्काउट्स व गाइड्स की वार्षिक राज्य परिषद् बैठक का आयोजन

उत्तर पश्चिम रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की वार्षिक राज्य परिषद् बैठक 24 अगस्त 2022 को मंडल कार्यालय, अजमेर सभा कक्ष में आयोजित की गई। अध्यक्षता श्री पुनीत चावला, प्रमुख मुख्य संकेत व दूर संचार इंजीनियर- उत्तर पश्चिम रेलवे तथा अध्यक्ष, उत्तर पश्चिम रेलवे भारत स्काउट्स एव गाइड्स द्वारा की गई। बैठक में अजमेर मंडल से श्री नवीन परसुरामका मण्डल रेल प्रबंधक व अध्यक्ष उत्तर पश्चिम रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स अजमेर मण्डल ने भी भाग लिया। बैठक



में राज्य मुख्यालय जयपुर से श्री नरेन्द्र कुमार, मुख्य बिजली इंजीनियर उत्तर पश्चिम रेलवे तथा स्टेट चीफ कमिश्नर भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, कैप्टन शशि किरण मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी व स्टेट कमिश्नर (स्काउट) द्वारा भी बैठक को संबोधित किया गया। जिसमें सभी मण्डल इकाइयों को स्काउट व गाइड से संबधित गतिविधियों में अच्छा कार्य करने की सराहना करते हुए और बेहतर प्रदर्शन हेतु प्रेरित किया गया।

जिम्बाब्वे के परिवहन एवं ढांचागत विकास उप मंत्री का बनारस रेल इंजन कारखाना दौरा



दिनांक 31 अगस्त, 2022 को जिम्बाब्वे के परिवहन एवं ढांचागत विकास उपमंत्री श्री एम. मदीरो के नेतृत्व में तीन सदस्यीय उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने बनारस रेल इंजन कारखाने का दौरा किया। 'राइट्स' के जीजीएम/एक्सपोटेक श्री राकेश बहल के साथ श्री एलेश कुमार पटेल एनआरजेड बोर्ड के सदस्य और श्री एड्वर्ड नदुमियाना परिवहन और ढांचागत विकास उप मंत्री, जिम्बाब्वे एवं अन्य सदस्य इस प्रतिनिधि मंडल में शामिल थे। इस अवसर पर प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अमिताभ, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर श्री एम.के.गुप्ता, मुख्य अभिकल्प इंजीनियर/ डीजल लोको श्री आर.आर. प्रसाद, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/उत्पादन एवं विपणन श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री विजय ने जिम्बांब्वे प्रतिनिधियों के साथ महत्त्वपूर्ण बैठक की।



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

विश्व सीनियर कुश्ती चैंपियनशिप 2022 में
भारतीय रेल की विनेश फौगाट और बजरंग पूनिया को कांस्य



सर्विया के बेलग्रेड में 8 से 18 सितंबर, 2022 तक चली विश्व सीनियर कुश्ती चैंपियनशिप 2022 में भारतीय रेल की विनेश फौगट ने 53 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक जीतकर भारत और भारतीय रेल का नाम रौशन किया। उन्होंने स्वीडन की जोआना मामग्रेन को 8-0 से हराकर कांस्य पदक जीता। इस बहुप्रतिष्ठित प्रतियोगिता में 2 पदक हासिल करने वाली वे पहली भारतीय हैं।

बेलग्रेड में जारी विश्व सीनियर कुश्ती चैंपियनशिप 2022 में भारतीय स्टार पहलवान बजरंग पूनिया ने इतिहास रच दिया है। पूनिया ने पुरुषों के 65 किलो फ्रीस्टाइल भारवर्ग में कांस्य पदक जीता। इसी के साथ बजरंग पूनिया विश्व सीनियर कुश्ती चैंपियनशिप में चार मैडल जीतने पहले भारतीय पहलवान बने। उन्होंने कांस्य पदक के मैच में पुएर्टो रिको के सेबस्टियन रिवेरा को 11-9 से मात दी।

यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि पहले ही दौर में बजरंग का सिर प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी के सिर से टकरा गया था, जिससे काफी बड़ा कट लग गया था। चूंकि इस खेल में सिर बार-बार प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी के शरीर से टकराता है, इसलिए उनके सिर से मैच के दौरान खून बहना शुरू हो जाता था। बावजूद इसके उनका यह प्रदर्शन काबिले तारीफ है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि टोक्यो ओलंपिक 2020 में बजरंग पूनिया ने कांस्य पदक और हाल ही में 2022 कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक हासिल किया था। इस मैच में बजरंग पूनिया 0-6 से पीछे चल रहे थे, लेकिन उन्होंने जबरदस्त वापसी की और कांस्य पदक अपने नाम किया। रेल मंत्रालय में कार्यरत श्री आनंद दुबे ने फीजियो के रूप में बजरंग पूनिया का बखूबी साथ दिया।



अंतरमंत्रालय कैरम टूर्नामेंट 2022-23 में
रेल मंत्रालय का शानदार प्रदर्शन







30 अगस्त से 7 सितंबर, 2022 तक नई दिल्ली में आयोजित अंतरमंत्रालय कैरम टूर्नामेंट 2022-23 में कप्तान संजीव भटनागर के नेतृत्व में रेल मंत्रालय ने शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने पहले तो विपिन कुमार राव के साथ पुरुष युगल में रक्षा मंत्रालय के विजयेन्द्र कुमार और जितेन्द्र कुमार की जोड़ी को हराकर स्वर्ण हासिल किया फिर पुरुष एकल वर्ग में रजत पदक हासिल किया। पुरुष एकल का खिताब ऑडिट के मो. नासिर ने जीता। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सैयद मो. अली तीसरे स्थान पर रहे। रक्षा मंत्रालय की देबजानी तामुली ने ऑडिट की गीता आर. शंकर को हराकर महिला वर्ग का खिताब जीता। ऑडिट की राधिका तीसरे स्थान पर रहीं। टीम वर्ग का खिताब गृह मंत्रालय ने हाउसिंग एवं अर्बन अफेयर मंत्रालय को हराकर जीता। रक्षा मंत्रालय तीसरे स्थान पर रहा। वेटरन वर्ग में हेल्थ के विजेंद्र सिंह प्रथम, पॉवर के परितोष द्वितीय एवं गृह मंत्रालय के एच.सी. खन्ना तीसरे स्थान पर रहे। महिला युगल में ऑडिट की गीता एवं राधिका की जोड़ी ने रक्षा मंत्रालय की देबजानी तामुली और प्रतिभा शुक्ला की जोड़ी को हराकर खिताब हासिल किया। रक्षा मंत्रालय की ही गायत्री एवं निवेदिता की जोड़ी ने तीसरा स्थान हासिल किया।

31वीं अखिल भारतीय रेल सुरश्रा बल वॉलीबॉल प्रतियोगिता

पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर में 05 सितंबर, 2022 से 09 सितंबर, 2022 तक 31 वीं अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन 09 सितंबर, 2022 को पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि पश्चिम मध्य रेलवे महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता तथा पमरे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती संध्या गुप्ता ने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किए। प्रतियोगिता का शुभारम्भ अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी द्वारा किया गया था। इस प्रतियोगिता में पूरे भारतीय रेल के अलग-अलग जोनल रेलवे से पुरुष वर्ग में 17 तथा महिला वर्ग में 8 टीमों ने भाग लिया। पुरुष वर्ग में रेलवे सुरक्षा विशेष बल ने खिताब अपने नाम किया वहीं दक्षिण रेलवे की टीम को उप विजेता का खिताब मिला, जबकि तीसरे स्थान पर दक्षिण पश्चिम रेलवे की टीम रही। इसी तरह महिला वर्ग में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की टीम विजेता रही एवं उप विजेता पूर्व रेलवे की टीम रही। महानिरीक्षक रेलवे सुरक्षा बल श्री प्रदीप कुमार गुप्ता ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।



75वीं सीनियर राष्ट्रीय महिला एवं पुरुष एक्वेटिक प्रतियोगिता में भारतीय रेल का दमदार प्रदर्शन



75वीं सीनियर राष्ट्रीय एक्वेटिक प्रतियोगिता का आयोजन 6 से 10 सितंबर, 2022 तक गुवाहाटी, असम में किया गया, जिसमें तैराकी, गोताखोरी और वॉटरपोलो की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अखिल भारतीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भारतीय रेल की महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। भारतीय रेल की पुरुष वॉटर पोलो टीम ने चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष भी यह ट्राफी भारतीय रेल ने ही जीती थी। गोताखोरी में महिलाओं ने गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शानदार प्रदर्शन करते हुए चैंपियनशिप ट्रॉफी पर कब्जा बरकरार रखा, साथ ही महिलाओं ने 3 व्यक्तिगत स्वर्ण पदक भी हासिल किए। पुरुष गोताखोरी में भी रेलवे ने एक व्यक्तिगत स्वर्ण हासिल किया।

तैराकी प्रतियोगिता के विभिन्न वर्गों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने 15 पदक हासिल किए जिसमें 3 स्वर्ण, 5 रजत और 7 कांस्य पदक शामिल हैं।

इनडोर क्रिकेट अभ्यास और हाई जंप के लिए अतिरिक्त सुविधाएं

दिनांक 23 अगस्त, 2022 को श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक/पू.सी. रेल ने एनएफआरएसए परिसर, मालीगांव में इंडोर क्रिकेट प्रैक्टिस और हाई जंप के लिए मुहैया कराई गई अतिरिक्त सुविधाओं का उद्घाटन किया। यह इस क्षेत्र के उदीयमान खिलाड़ियों के लिए बहुत मददगार होगा।





रायबरेली में 87वीं अखिल भारतीय रेल एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन



श्री अमलान बरगोहाइं

रायबरेली में दिनांक 29 अगस्त से 31 अगस्त, 2022 तक आयोजित 87वीं 'अखिल भारतीय रेल एथलेटिक चैंपियनशिप' का आयोजन किया गया।

पू.सी. रेल के खिलाड़ी ने 29 अगस्त, 2022 को उत्तर प्रदेश के रायबरेली में आयोजित 87वीं एआईआर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उपलब्धि हासिल करने का रिकॉर्ड बनाया।

पू.सी. रेल के श्री अमलान बरगोहाइं ने 87वीं एआईआर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 100 मीटर दौड़ स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने 10.25 सेकेंड में यह दौड़ पूरी करके 2016 में बनाए गए 10.26 सेकेंड के राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया। पू.सी. रेल की स्वप्ना बर्मन ने उत्तर प्रदेश के रायबरेली में आयोजित 87 वीं एआईआर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में



स्वप्ना बर्मन

हेप्टाथलॉन स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया। उसने 5,717 अंक अर्जित करके मीट रिकॉर्ड भी तोड़ा (1999 में बनाया मीट रिकॉर्ड 5,657 था)।

प्रतियोगिता में उत्तर मध्य रेलवे ने 3 रजत और 3 कांस्य सहित कुल 6 पदक जीते। इसमें सुश्री कविता यादव ने 10,000 मीटर में रजत, 1,500 मीटर में अजीत कुमार ने रजत, 35 किमी वॉक में सुश्री रमनदीप कौर ने रजत, 10,000 मीटर पुरुष वर्ग में वासुदेव निषाद ने कांस्य, 800 मीटर में अजीत कुमार ने कांस्य और पोल वॉल्ट में धीरेंद्र यादव ने कांस्य जीता।



महाप्रबंधक के साथ उत्तर मध्य रेलवे की पदक विजेता टीम



भारतीय रेल
पत्रिका अब
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली
में भी उपलब्ध है

उत्तर रेलवे ने कौल गोल्ड कप 2021-2022 जीता

उत्तर रेलवे ने खेल गतिविधियों में शानदार प्रदर्शन करते हुए कौल गोल्ड कप 2021–2022 जीत लिया है। इसने पश्चिम रेलवे को 174 अंकों के बड़े अंतर से हराकर यह जीत हासिल की है।

उल्लेखनीय है कि पूरे वित्तीय वर्ष में विभिन्न खेल आयोजनों में सभी जोनल रेलों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के बाद प्रत्येक वर्ष सर्वश्रेष्ठ जोनल रेलवे को कौल गोल्ड कप प्रदान किया जाता है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय आयोजनों और अखिल भारतीय रेल चैम्पियनशिप में अपने खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर क्षेत्रीय रेलों को अंक प्रदान किए जाते हैं।

उत्तर रेलवे ने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्पर्धाओं में अन्य सभी क्षेत्रीय रेलों को पीछे छोड़ते हुए 532 अंक हासिल किए। पश्चित रेलवे 360 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रही। इसके अलावा, उत्तर रेलवे ने विभिन्न अंतर्रेलवे स्पर्धाओं में भी उच्चतम अंक (300) हासिल किए।



पश्चिम रेलवे 298 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रही। रेलवे की खेल-कूद गतिविधियों के इतिहास में उत्तर रेलवे ने 29 बार के चैम्पियनशिप पश्चिम रेलवे को हराकर पहली बार कौल गोल्ड कप जीता है।

उत्तर रेलवे के खिलाड़ियों को सम्मानित करने के लिए आयोजित एक समारोह में उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री आशुतोष गंगल ने उत्तर रेलवे खेल-कूद संघ और विभिन्न खिलाड़ियों को विभिन्न स्पर्धाओं में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी और भविष्य में भी इस प्रदर्शन को बनाए रखने और इसे और बेहतर करने की उम्मीद जताई।

राष्ट्रमण्डल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सुश्री साक्षी मलिक, श्री सागर, श्री रोहित टोकस तथा अन्य खिलाड़ी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

रेल पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 60 सालों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home



Indian Railways
(English)

शर्तें एवं दरें लागू

भारतीय रेल में राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन

समग्र भारतीय रेल में हॉकी के दिग्गज मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष राष्ट्रीय खेल दिवस, 'समावेशी और फिट समाज के लिए एक सक्षम के रूप में खेल' की थीम के साथ मनाया जा रहा है। पेश है, विभिन्न क्षेत्रीय रेलों पर आयोजित समारोहों की एक झलक

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

'राष्ट्रीय खेलकूद दिवस' के अवसर पर 29 अगस्त, 2022 को श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक/पू.सी. रेल ने मालीगांव में भारोत्तोलन कक्ष, एनएफआर के प्रसिद्ध खेलों की एक फोटो गैलरी और एनएफआरएसए की वेबसाइट का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मालीगांव में अंतरविभागीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक ने अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में गोल्फ ग्रीन, अमीनगांव में एक नये उन्नत रेस्तरां का उद्घाटन किया। यह नई सुविधा गोल्फरों को अभ्यास के लिए और साथ ही स्थानीय लोगों के लिए मददगार साबित होगी।



दक्षिण पूर्व रेलवे



दक्षिण पूर्व रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन ने रेलवे खिलाड़ियों के साथ-साथ उनके वार्डों और परिवार के सदस्यों को शामिल करते हुए मुख्यालय और मंडलों में फुटबॉल, बॉडी बिल्डिंग, पॉवर लिफ्टिंग, टेनिस और टेबल टेनिस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। दक्षिण पूर्व रेलवे सुश्री अर्चना जोशी, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्द्धन किया।

पश्चिम रेलवे



पश्चिम रेलवे पर 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर पश्चिम रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा विभिन्न आयोजन किए गए। पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों में भी खेलकूद के कार्यक्रम बड़े जोश और उत्साह के साथ आयोजित किए गए। पश्चिम रेलवे के ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों ने मेजर ध्यानचंद को पुष्पांजलि अर्पित की।

पश्चिम मध्य रेलवे



'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर पमरे में एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें 125 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। पमरे के महाप्रबन्धक ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेता खिलाड़ियों को मेडल देकर पुरस्कृत किया साथ ही, विभिन्न विभागों की विजेता टीमों को ट्रॉफी प्रदान की। खेल प्रतियोगिताओं में ओवर ऑल चैम्पियन की ट्रॉफी इलेक्ट्रिकल विभाग तथा रनर-अप ओवर ऑल चैम्पियन स्टोर विभाग ने जीती। इन प्रतियोगिताओं में महिला कल्याण संगठन की सदस्य महिलाओं ने भी हिस्सा लिया।

उत्तर मध्य रेलवे

'राष्ट्रीय खेल दिवस' पर उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय, मंडलों एवं अन्य इकाइयों मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों के सम्मान समारोहों का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार ने अंतर्राष्ट्रीय जिम्नास्ट श्री आशीष कुमार एवं सिद्धार्थ वर्मा, बॉक्सर श्री कुलदीप, बैडमिंटन खिलाड़ी सुश्री सोम्या सिंह एवं कुश्ती कोच श्री संदीप सिंह को सम्मानित किया।



उत्तर पश्चिम रेलवे



श्री विजय शर्मा, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे की पहल पर 29 अगस्त 2022 को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर उत्तर पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय में रेलकर्मियों के लिये खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रधान कार्यालय में रेलकर्मियों के लिए शूटिंग बॉल, बॉलीबॉल, क्रिकेट व रस्साकशी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें रेलकर्मियों ने बढ़-चढ़कर उत्साह के साथ भाग लिया।

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना

'राष्ट्रीय खेलकूद दिवस' के अवसर पर चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना में तीन दिवसीय खेल समागम का आयोजन किया गया। इस मौके पर 'रन फॉर यूनिटी' और तीरंदाजी, कबड्डी, खो-खो और फुटबॉल मैच जैसी खेल प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया।



आरडीएसओ

आरडीएसओ में 29 अगस्त, 2022 से 31 अगस्त, 2022 तक विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया।

इस दौरान 29 अगस्त, 2022 को क्रिकेट मैच तथा 30 अगस्त, 2022 को फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया कार्यक्रम के अंतिम दिन 31 अगस्त, 2022 को आरडीएसओ में डीजी एलेवन और एडीजी एलेवन के मध्य मैत्री क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। महानिदेशक महोदय श्री संजीव भुटानी ने सभी विजयी टीमों को पुरुस्कृत किया



रेल कोच फैक्टरी



रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर तीन दिवसीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में आरसीएफ के मौजूदा और भूतपूर्व खिलाड़ियों के साथ-साथ आरसीएफ के कर्मचारियों व उनके पारिवारिक सदस्यों को भी सम्मिलित किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में लैंगिक समानता को बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया गया। एथलेटिक्स, हॉकी, वॉलीबॉल, क्रिकेट बास्केटबॉल और आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पूर्व रेलवे

पूर्व रेलवे स्पोर्ट्स एसोसियेशन द्वारा रेलवे बोर्ड स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के सहयोग से एवं स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के ''खेलो इंडिया खेलो'' अभियान के तहत जेम्स लॉन्ग सरानी, बेहाला, कोलकाता में 29 अगस्त, 2022 से 2 सितंबर, 2022 तक सीनियर महिला वालीबॉल चैंपियनशिप का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन 29 अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण अरोड़ा द्वारा किया गया।



जब महारानी सडिका में आईं ...

श्री जी. वी. वेंकटेसन
वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी, सवारी डिब्बा कारखाना

8 सितंबर, 2022 को एलिजाबेथ द्वितीय यानि एलिजाबेथ ऐलेक्सैंड्र मैरी के निधन के साथ ही विश्व इतिहास के एक युग का भी देहावसान हो गया। भारत सरकार ने उनके सम्मान में न सिर्फ एक दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया बल्कि उनके अंतिम संस्कार में भारत की राष्ट्रपति ने स्वयं शिरकत की।

21 अप्रैल, 1926 को जन्मीं एलिजाबेथ द्वितीय 6 फरवरी, 1952 से 2022 में अपनी मृत्यु तक यूनाइटेड किंगडम और अन्य राष्ट्रमण्डल प्रजाभूमियों की महारानी थीं। 70 वर्ष और 214 दिनों तक चला उनका शासन किसी भी ब्रिटिश सम्राट की तुलना में सबसे लंबा शासनकाल है। इस दौरान वे 32 विभिन्न संप्रभु राज्यों की रानी थीं, और उनके मृत्यु समय तक उनमें से 15 के सम्राज्ञी के रूप में राज किया।

भारतीय रेल के इतिहास में युं तो हजारों स्वर्णिम पन्ने जुड़े हुए हैं, लेकिन आज हम याद करेंगे उन पलों को जो महारानी एलिजाबेथ के संग जुड़े हुए हैं। भारतीय रेल के बहुप्रतिष्ठित सवारी डिब्बा कारखाना (सडिका) के इतिहास के अविस्मरणीय दिनों में 20 फरवरी 1961 भी एक है।

इसी दिन महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के रूप में लोकप्रिय इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ एलेक्जेंड्रा मेरी ने सवारी डिब्बा कारखाना का दौरा किया था। उन्होंने राजमुकुट धारण करने के लगभग आठ साल बाद भारत का दौरा किया और उस समय उन्होंने सवारी डिब्बा कारखाना का भी दौरा किया। महारानी पहली बार 1961 में और दूसरी बार 1997 में चेन्नै आईं थीं।

महारानी के सवारी डिब्बा कारखाना के दौरे के समय उनके साथ तत्कालीन केंद्रीय परिवहन और रेल मंत्री श्री जगजीवन राम और तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री के. कामराज भी थे। उन्हें एक खुली कार से सडिका के शापों में ले जाया गया और



तत्कालीन केंद्रीय परिवहन और रेल मंत्री श्री जगजीवन राम और तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री के. कामराज के साथ सवारी डिब्बा कारखाना का अवलोकन करती हुईं एलिजाबेथ द्वितीय

कोच उत्पादन के लिए की गई व्यवस्थाओं और सुविधाओं की जानकारी दी गई। महारानी ने कारखाने के कर्मचारियों से बातचीत की और पूर्णत: विनिर्मित एक कोच का निरीक्षण भी किया था। महारानी सडिका में विनिर्माणाधीन रेल कोच के स्केल मॉडल के विवरण को अधिकारियों से अत्यंत रूचि लेकर उत्सुकता से सुन रही थीं। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने सडिका की कॉलोनियों का भी दौरा किया। वे कॉलोनियों में पैदल ही गईं जहां उनका अत्यंत उत्साह और हर्षोल्लास से स्वागत किया गया। महारानी सडिका कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों से भी मिलीं।

सडिका के सेवानिवृत्त कर्मचारी अभी भी उस स्वर्णिम पल को याद करते हैं कि महारानी किस प्रकार सडिका के कर्मचारियों की पत्नियों की पहनी हुई आठ गज की कांचीपुरम की और रेशमी साड़ी से आकर्षित और मोहित हुई थीं और उन महिलाओं से उस कांजीवरम साड़ी के बारे में पूछ रही थीं।

सडिका से निकलने के पहले, महारानी ने विजिटर्स बुक पर एलिजाबेथ आर लिखकर अपनी यात्रा की तारीख सहित हस्ताक्षर किए जो एक अविस्मरणीय और मधुर पल है। वर्ष 2014 में जब सडिका का स्वर्ण जयंती समारोह शुरू हुआ था तब बकिंघम पैलेस से एक बधाई पत्र मिला था जिसमें सडिका के उज्जवल भविष्य और महोत्सव की सफलता की कामना की गई थी और 1961 में सडिका के उनके दौरा को याद भी किया गया था।



नागपुर के रेल डायमंड क्रॉसिंग का रहस्य

श्री विमलेश चन्द्र

बहुचर्चित नागपुर रेलवे की डायमंड क्रॉसिंग के बारे में तो आपने सुना ही होगा। कुछ इसे देश की रेलवे का सेंटर पॉइंट मानते हैं, तो कुछ नहीं। इस लेख में हम इसी के बारे में चर्चा करेंगे।

डायमंड क्रॉसिंग की परिभाषा व इतिहास–

डायमंड क्रॉसिंग उसे कहते हैं जब एक रेलवे लाइन दूसरे रेलवे लाइन को क्रॉस करते हुए निकल जाती है चाहे वह समान प्रकार क गेज हो या किसी और प्रकार के गेज वाली लाइन हो। यह 6 प्रकार की होती हैं। यदि 90 डिग्री पर क्रॉस करते हैं तो स्वाभाविक रूप से उसे स्क्वायर डायमंड क्रॉसिंग कहते हैं। वर्ष 1887 में नागपुर में कुल 27 डायमंड क्रॉसिंग थे। जो अब कम होकर केवल 7 रह गए हैं। वर्ष 1867 में नागपुर में मीटर गेज लाइन बनाई गयी थी, जिसे वर्ष 1888 में गेज परिवर्तन करके बड़ी लाइन बना दी गयी। अभी के डायमंड क्रॉसिंग्स को वर्ष 1924 में बनाया गया था। यह अंग्रेजों के समय की यह डायमंड क्रॉसिंग बिना मतलब नहीं है। आज के समय के बहुत सारे लोग कहते और मानते हैं कि इसकी कोई जरूरत नहीं है और यह ट्रेन संचालन में रुकावट डालती है! जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। वर्ष 1989 में इसका बिद्युतीकरण हुआ। इसके क्रॉसिंग के ऊपर बिजली तारों को विशेष रूप से बनाया गया है, जिससे कि ये आपस में शॉर्ट न करें। हालांकि इसकी नियमित देख-रेख की जरूरत है, लेकिन यह ट्रेन संचालन में किसी तरह की कोई रुकावट नहीं है।

डायमंड क्रॉसिंग के रेलवे लाइन की संरचना–

दिल्ली से आने वाली और चेन्नई जाने वाली डबल लाइन को नागपुर स्टेशन पर प्रवेश करने से एक किमी. पहले दो पार्ट में कर दिया जाता है। मतलब, इस दो लाइन को 4 लाइन में बना दिया जाता है, जिसमें से एक डबल लाइन वाला पार्ट एक कर्वनुमा रेल मार्ग या लूप लाइन बनाते हुए नागपुर स्टेशन चला जाता है। यह एक कर्व या लूप लाइन जैसा बना है लेकिन यह है डबल लाइन वाली मेन लाइन ही। दिल्ली से आने वाली या जाने वाली यात्री ट्रेनें इसी लूप लाइन का उपयोग करती हैं, जबकि दूसरा डबल लाइन वाला पार्ट, डायमंड क्रॉसिंग बनाता हुआ नागपुर गुड्स यार्ड में चला जाता है। यह लाइन यार्ड में जा रही है तो स्वभाविक रूप से इस पर केवल मालगाड़ी ही चलती है, क्योंकि यह लाइन यार्ड में जाती है। यही मालगाड़ी वाली डबल लाईन, मुम्बई से हावड़ा जाने वाली ट्रंक रुट वाली डबल लाइन को क्रॉस करती है, जिसके कारण यहाँ एक साथ 4 डायमंड क्रॉसिंग्स बनते हैं। सिम्पल बात यह हुई कि हावड़ा-मुम्बई मेन लाइन को यार्ड में जाने वाली रेल लाइन क्रॉस करके 4 डायमंड क्रॉसिंग बनाती है। एक तरह से फिर से क्लियर कर दूं कि यह डायमंड क्रॉसिंग रेलवे लाइन को मतलब नागपुर के पूरे रेलवे एरिया को + नहीं बल्कि Y तरह का रूट बनाती हैं। Y इसलिए कि नागपुर से एक लाइन हावड़ा जा रही और दूसरी नई दिल्ली और तीसरी लाइन सेवाग्राम की ओर जा रही है।



नई दिल्ली वाली मेन लाइन के बाद अब अगली लाइन ह– हावड़ा वाली मेन लाइन जो नागपुर स्टेशन से सीधे सीधे हावड़ा की तरफ चली जाती है, जिससे यह डायमंड क्रॉसिंग बनती है। अब अगली लाइन है नागपुर यार्ड वाली लाइन। अब जो लाइन यार्ड में गयी है। ऐसा तो है नहीं कि यार्ड में जाकर खत्म हो जाएगी। स्वाभाविक रूप से मालगाड़ी वाली दोनों लाइन नागपुर गुड्स यार्ड में जाती हैं और फिर सिंगल लाइन हो कर यार्ड से होते हुए आगे जाकर अजनी में मेन लाइन में जुड़ जाती है। एक तरह से कह सकते हैं कि नागपुर से अजनी के लिए कुल 3 लाइनें जा रही हैं– दो मेन लाइन और एक यार्ड से जाने वाली मालगाड़ी लाइन।

अब हावड़ा वाली लाइन पर फिर से चर्चा करते हैं। हावड़ा वाली लाइन आगे 4-5 किमी. तक कॉमन रहती है। मतलब, दोनों लाइन को अप और डाउन के हिसाब से उपयोग करते है, लेकिन उसके आगे अप और डाउन लाइन अलग-अलग हो जाती

हैं। हावड़ा वाली इसी मेन लाइन से एक लाइन निकल कर मोतीबाग रेलवे कारखाना में चली जाती है। यह सिंगल लाइन ही है।

हावड़ा से यदि कोई मालगाड़ी आती है या नागपुर यार्ड से किसी मालगाड़ी को हावड़ा की तरफ जाना है तो कैसे जाएगी? ऐसा तो है नहीं कि डायमंड क्रॉसिंग पर आएगी और फिर हावड़ा की तरफ मुड़ जाएगी। इसलिए नागपुर यार्ड को हावड़ा की मेन लाइन से कनेक्टिंग डबल लाइन से जोड़ दिया गया है। ऊपर बने डायग्राम से यह क्लियर हो जाएगा।

अब आते हैं चेन्नई रूट पर, तो मैं अपने पाठकों को साफ कर दूँ कि नागपुर से कोई रेल लाइन सीधे-सीधे चेन्नई नहीं जाती है। बल्कि नागपुर से 76 किमी. आगे सेवाग्राम रेलवे स्टेशन और उसके 2 किमी. आगे वर्धा स्टेशन पड़ता है। इन दोनों स्टेशनों से एक-एक रेलवे लाइन निकलती है, जो चितोड़ा नाम के एक छोटे-से स्टेशन पर जाकर मिलती हैं और फिर इस छोटे-से स्टेशन से ही मेन लाइन चेन्नई के लिए चली जाती है। जाहिर है कि सेवाग्राम से चितोड़ा तक की और वर्धा से चितोड़ा तक की लाइन को बाई पास रेलवे लाइन कह सकते हैं। जैसा कि बहुत सारे स्टेशनों के बाहर बाई पास रेलवे लाइन होती है।

डायमंड क्रॉसिंग को भारतीय रेल का केंद्र बिंदु माना जाय या न माना जाय-

इस डायमंड क्रॉसिंग को भारतीय रेल का केंद्र बिंदु माना जाय या न माना जाय। इस विषय पर दो प्रकार के मत हैं। यहां हम दोनों प्रकार के मतों की चर्चा करेंगे और यह फैसला आपके विवेक पर छोड़ देंगे।

नागपुर से मुम्बई की तरफ वाली मेन लाइन पर नजर डालें तो नागपुर से सेवाग्राम के 1 किमी. आगे तक चेन्नई मेन लाइन और फिर आगे वर्धा होते हुए मुम्बई वाली मेन लाइन चली जाती है। कह सकते हैं कि सेवाग्राम और वर्धा स्टेशन के बीच तक मुम्बई और चेन्नई कामन रेलवे लाइन है। स्वभाविक रूप से मुम्बई वाली रेल लाइन वर्धा से आगे भुसावल होते हुए मुम्बई चली जाती है जबकि चेन्नई वाली लाइन सेवाग्राम से निकल कर चितोड़ा और विजयवाड़ा होते हुए चेन्नई चली जाती है।

स्टेशन के आधार पर डायमंड क्रॉसिंग को केंद्र बिंदु मानने के तर्क-

जैसेकि पहला रुट मतलब उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत के रूट मतलब, दिल्ली-चेन्नई रूट में देखें तो इस रूट में मेन स्टेशन में दिल्ली-इटारसी-नागपुर-सेवाग्राम-विजयवाड़ा-चेन्नई स्टेशन पड़ता है। मतलब, नागपुर इस रूट का मेन और कॉमन स्टेशन हुआ। इसी तरह दूसरी तरफ पूर्वी भारत (हावड़ा) से पश्चिमी भारत (मुम्बई) की रेल लाइन मतलब पश्चिम में मुंबई से होते हुए मुम्बई-जलगाँव-वर्धा-नागपुर-गोंडिया-बिलासपुर-हावड़ा रूट है। इसमें भी नागपुर स्टेशन पड़ रहा है तो स्वाभाविक रूप से नागपुर रेलवे स्टेशन दोनों रूट में कॉमन आ रहा है। इसलिए स्टेशन के हिसाब से इसे सेंटर पॉइंट मान सकते हैं। नो डाउट सेवाग्राम स्टेशन भी दोनों में आता है। यह केवल स्टेशन के हिसाब से बता रहा हूँ कि नागपुर दोनों रुटों में पड़ रहा है न कि रेल लाइन के या डायमंड क्रॉसिंग के हिसाब से। नागपुर स्टेशन यह दोनों रुटों में आ रहा है तो नागपुर को केंद्र मानने में कोई इशु नहीं है।

रेल लाइन के आधार पर अब डायमंड क्रॉसिंग का केंद्र बिंदु न मानने का तर्क-

यदि हम नागपुर डायमंड क्रॉसिंग को देश की रेलवे का सेंटर प्वाइंट नहीं मानना चाहें तो कारण है क्योंकि यहां पर चारों दिशा में रेलवे लाइन नहीं जाती है बल्कि डायमंड क्रॉसिंग वाला एरिया या कह सकते हैं कि नागपुर स्टेशन वाला एरिया, अंग्रेजी के Y आकर का बना हुआ है। इसलिए यह तीन दिशाओं में जाने वाली रेलवे लाइन हुई है न कि चार दिशाओं में। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह सेंटर पॉइंट नहीं है।

तो यह है नागपुर के रेलवे डायमंड क्रॉसिंग का रहस्य। अब मेरी समझ से किसी को भी इससे जुड़ा गलत वीडियो या उल्टा-पुल्टा जानकारी वाली पोस्ट देखने की जरूरत नहीं पड़ेगी। डायग्राम को ध्यान से देखने पर सब कुछ अपने आप क्लियर हो जाएगा।

नोट-हम इसे केंद्र मानें या न मानें, लेकिन अंग्रेज लोग नागपुर को अविभाजित भारत का केंद्र मानते थे। इसलिए नागपुर शहर में अंग्रेज 'जीरो माइल्स' नाम का खूबसूरत पिलर बनवाकर गए हैं, जहां से देश के बड़े शहरों की सड़क से दूरी की शुरुआत होती है।

आखिर कैसे बिजली आपूर्ति मिलती है नागपुर डायमंड क्रॉसिंग के ऊपर लगे चारों बिजली लाइन (OHE) को-

बिजली रेल इंजनों के लिए 25 KV/AC प्रणाली बिजली आपूर्ति दी जाती है। यहाँ नागपुर के डायमंड क्रॉसिंग के ऊपर भी बिजली लाइनें बनी हुई हैं और सभी बिजली लाइन एक दूसरे के पास में हैं, लेकिन इन्हें आईसोलेटर से अलग कर दिया गया है। लेकिन बिजली सप्लाई सभी चार लाइनों में है। मुम्बई-हावड़ा रूट के लाइन में जाने वाली ट्रेनों का इस सेक्शन में आने पर इंजन का पेंटोग्राफ डाउन कर दिया जाता है जबकि गुड्स यार्ड वाली लाइन पर इंजन नॉर्मल रूप से पेंटोग्राफ और बिजली वायर आपस में टच करके चलते हैं। हावड़ा वाले रूट में मालगाड़ी सहित अनेकों रेलगाड़ियाँ चलती हैं जबकि गुड्स यार्ड वाली लाइन में 24 घंटे में 3 या 4 मालगाड़ियां चलती हैं। लेकिन अब इसमें सुधार किया जा रहा है। जिससे हावड़ा वाली लाइन पर इंजन का पेंटोग्राफ डाउन नहीं करना पड़ेगा बल्कि यार्ड वाली लाइन से जाने वाले बिजली इंजन का पैंटोग्राफ डाउन करना पड़ेगा। फोटो को ध्यान से देखिये तो इसका सिस्टम समझ में आ सकता है। उच्च वोल्टेज (25 KV/AC) के वायर एक दम पास-पास में हैं और किनारे पर एक दम नजदीक हैं फिर भी इनके बीच स्पार्किंग या कोई अनहोनी नहीं होती। दूसरी बात यह कि जब पेंटोग्राफ नीचे कर देते हैं तो स्वाभाविक रूप से इंजन को बिजली सप्लाई नहीं मिलती है और रेलगाड़ी चलती रहती है। वास्तव में बिजली आपूर्ति का यह सिस्टम इंट्रेस्टिंग है।



कुरुक्षेत्र

श्री मनीष बाजपेई
वरिष्ठ पत्रकार, दूरदर्शन समाचार

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवा।
मामकाः पांडवश्चौव किमकुर्वत संजय॥

'श्रीमद्भागवत गीता' के प्रथम श्लोक में ही जिस क्षेत्र को धर्मक्षेत्र के बारे में वर्णित किया गया है, वो कुरुक्षेत्र है और जब 'क्षेत्र' के आगे 'कुरु' शब्द जुड़ा हुआ हो तो यह समझना सहजा आसान हो जाता है कि महाभारतकाल से पहले भी 'कुरुक्षेत्र' नाम प्रचलित रहा होगा। दरअसल, पांडवों और कौरवों के पूर्वज राजा कुरु थे और उनके नाम से यह क्षेत्र 'कुरुक्षेत्र' कहलाया। राजा कुरु ने कठोर तपस्या की और उन्होंने अपने हाथ से हल चलाया। इस कारण इसका नाम 'कुरुक्षेत्र' पड़ा। यह पवित्र स्थान सरस्वती नदी तथा दृषदती नदी का मध्यवर्ती क्षेत्र है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का कारवां कुरुक्षेत्र पहुंचा और इसकी सबसे बड़ी वजह थी इस भूमि से निकला हुआ वह विचार, जिसने सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को अपने आप में आबद्ध कर लिया। कुरुक्षेत्र में ही भगवान के श्रीमुख से 'गीता' का ज्ञान इस ब्रहमांड के समस्त चराचर जगत् को प्राप्त हुआ। जब भी भारतीय संस्कृति और ज्ञान की चर्चा होती है, 'श्रीमद्भागवत गीता' न केवल भारतीय संस्कृति के परिचायक के रुप में सामने आती है बल्कि आदि से लेकर आधुनिक काल तक 'गीता' एक ऐसे ग्रंथ के रुप में हमारे सामने आती है जिसमें भारतीय मूल्यों, परम्पराओं और विचारों के सारे सूत्र मिलते हैं।

कुरुक्षेत्र अम्बाला से दक्षिण और दिल्ली से उत्तर की ओर है और यहां पर ऐसे कई ऐतिहासिक स्थल हैं, जिसका सीधा जुड़ाव महाभारत काल से है या फिर उससे भी प्राचीन। माना जाता है कि पितामह ब्रह्मा की उत्तरवेदी भई कही जाती है। कहते हैं कि इसकी लम्बाई-चौड़ाई पांच पांच योजन थी। पांडवों और कौरवों के मध्य महाभारत का युद्ध यहीं पर हुआ था और सबसे बड़ी बात कि भगवान श्रीकृष्ण ने क्षत्रिय वीर अर्जुन को निमित्त बनाकर विश्व के

कल्याण के लिए 'भगवद्गीता' का उपदेश यहीं पर दिया था। भीष्म पितामह और परशुराम के मध्य घोर संग्राम भी यहीं पर हुआ था। प्राचीन कुरुक्षेत्र न केवल एक पवित्र सरोवर था, न ही एक शहर था बल्कि यह अनेकानेक गांवों और तीर्थों से परिपूर्ण एक भूक्षेत्र था। दक्षिण में वर्तमान पानीपत तथा जींद तक पश्चिम में पटियाला तक, पूर्व में यमुना व सरस्वती नदी तक यह फैला हुआ था। सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन ने थानेसर को अपने राज्य की राजधानी बनाया था। हर्षवर्धन के बाद अनेकों विदेशी आक्रमण हुए और यहां की सभ्यता का नाश भी हुआ लेकिन कुरुक्षेत्र फिर भी अमर रहा।

वैसे तो यह पूरा कुरुक्षेत्र तीर्थ क्षेत्र माना गया है और इसको लेकर 'वामन पुराण' में कहा गया है–

गंगाया तु जले मुक्ति वाराणस्यां जले स्थले।
कुरुक्षेत्रे त्रिधा मुक्ति अन्तरिक्षे जले स्थले॥

अर्थात गंगा के जल में मुक्ति है, वाराणसी के जल तथा स्थल दोनों में मुक्ति हैं। परन्तु कुरुक्षेत्र के आकाश, जल और स्थल तीनों मुक्तिदायक हैं। इसलिए कुरुक्षेत्र में तीर्थों की संख्या 360 मानी गई है, लेकिन सम्पूर्ण स्थानों पर दर्शन मुश्किल भी होता है और जानकारी के अभाव में यात्री वहां तक पहुंच भी नहीं पाते, लेकिन फिर भी कुछ मन्दिरों, सरोवरों और ऐतिहासिक स्थानों के बारे में जानना आवश्यक होता है।

- सन्निहित सरोवर – 'नारद पुराण' के अनुसार, इस सरोवर का निर्माण ब्रह्मा जी ने किया था। यहां पर श्री ध्रुव नारायण के मन्दिर के मध्य में भगवान चतुर्भुज नारायण एवं ध्रुव की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित हैं। यह सरोवर अपने पूर्वजों के लिए पिंडदान जैसे कर्मकांड के लिए खासा महत्त्वपूर्ण है। इस स्थान पर वामन द्वादशी को भारी मेला लगता है।



- ब्रह्मसरोवर–यह एक प्राचीन विशाल सरोवर है, और वर्तमान समय में सरोवर की लम्बाई 3,600 फुट और चौड़ाई 1,200 फुट है। इसमें 15 फुट पानी सदा ही बना रहता है। चारों ओर यात्रियों के विश्राम के लिए बरामदे बने हैं। इस सरोवर के मध्य में सर्वेश्वर महादेव मंदिर बना हुआ है। वैसे तो ब्रह्मसरोवर को लेकर अनेक किंवदंतियां हैं, लेकिन ब्रह्म सरोवर में कुछ ऐसे साक्ष्य हैं जो इसकी प्राचीनता और ऐतिहासिकता की कहानी बयां करते हैं। जैसे चन्द्र कूप के बारे में माना जाता है कि धर्मराज युद्धिष्ठिर ने महाभारत युद्ध के पश्चात् यहां पर एक विजय स्तम्भ बनवाया था जो कालांतर में लुप्त हो गया, लेकिन आज भी समस्त तीर्थ यात्री यहां आज भी आकर गुप्तदान करते हैं।
- ज्योतिसर तीर्थ–कुरुक्षेत्र से पेहवा जाने वाली पक्की सड़क पर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 8 किमी की दूरी पर सरस्वती नदी के किनारे पर ज्योतिसर ग्राम बसा हुआ है। शास्त्रानुसार यह स्थान ज्योतिश्वर महादेव का है। उन्हीं के नाम पर तीर्थ व ग्राम का नाम है। ऐसी भी मान्यता है कि यही वह पावन भूमि है जहां पर भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से गीता रूपी ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को अमृतपान करवाया। इस स्थान पर अति प्राचीन सरोवर तथा वटवृक्ष के सिवा अन्य कोई प्राचीन स्मारक नहीं है। सरोवर के तट पर एक वृक्ष है, जो 'अक्षय वटवृक्ष' के नाम से प्रसिद्ध है जो भगवान श्रीकृष्ण के गीता उपदेश की घटना का एकमात्र साक्षी माना जाता है।
- बाण गंगा–कुरुक्षेत्र में बाण गंगा नामक दो स्थान हैं। एक कुरुक्षेत्र में दयालपुर गांव के पास व दूसरा नरकातारी गांव में हैं। कहते हैं कि नरकातारी में अर्जुन ने शरशैया पर लेटे हुए पितामह भीष्म की प्यास बुझाई थी और दयालपुर के पास बाण गंगा में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने घोड़ों को पानी पिलाया था। बैसाखी और गंगा दशहरे पर यहां मेला लगता है।



कुरुक्षेत्र में बाबा श्रवणनाथ की हवेली, सर्वेश्वर महादेव मंदिर, गोरक्षनाथ मंदिर, जयराम विद्यापीठ, गीता भवन, बिरला मंदिर, स्थाणीश्वर महादेव मंदिर, भद्रकाली मंदिर, नाभिकमल मंदिर, कर्ण का खेड़ा जैसे अनेक तीर्थ स्थल हैं, जहां पर जाना भारत की संस्कृति के दर्शन करने के समान है।

कुरुक्षेत्र का एक नया परिचय 'गीता महोत्सव' के कारण हो रहा है क्योंकि अब गीता महोत्सव न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन बन चुका है जो प्रतिवर्ष नवम्बर–दिसम्बर माह में लगता है।

राष्ट्रीय विकास और भारतीय भाषाएं

श्री प्रेमपाल शर्मा
पूर्व संयुक्त सचिव, रेल मंत्रालय

आज़ादी के वक्त महात्मा गांधी और कुछ अन्य नेताओं की निष्ठा और ईमानदारी की बदौलत हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति जो उम्मीद जगी थी, 1950 के बाद वह धीरे-धीरे विलीन होती गई। इसका मुख्य कारण राजनीतिक रहा, जिसका इस देश की भाषा संस्कृति को भारी नुकसान हुआ। दूसरे शब्दों में भारतीय भाषाओं और हिंदी का रथ धीरे-धीरे अंग्रेजी के गड्ढे में धंसता गया, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में स्थिति बदली है। भारतीय भाषाओं के पक्ष में माहौल बदल रहा है। अभी उस गड्ढे से बाहर तो नहीं निकले लेकिन निकलने की प्रक्रिया में जरूर हैं और इसमें योगदान मौजूदा केंद्रीय सत्ता का तो है ही तकनीक का भी उतना ही है।

भारत सरकार में अरबों रुपए हिंदी विभाग पर खर्च किया गया, मगर परिणाम बहुत अच्छे नहीं रहे। बजाए कि हिंदी को लोकमानस की चेतना में उतारते कुछ लोग पदों के पीछे भागते रहे। अपनी भाषा, विशेषकर हिंदी के प्रति जितनी उदासीनता उत्तर भारत में है उतनी दक्षिण भारत में अपनी भाषाओं के प्रति नहीं है। शिक्षा, विज्ञान या मनोविज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो अपनी भाषा से जो समझ पैदा होती है उसे हासिल करने के बाद किसी भी विदेशी भाषा को सीखना समझना और भी आसान होता है और यही कारण है कि दक्षिण भारत की अंग्रेजी भी उत्तर भारत के मुकाबले में कई गुना बेहतर है। और उसका श्रेय इस तथ्य को जाता है कि वे अपनी मातृभाषाओं का बेहतर ज्ञान रखते हैं जबकि उत्तर भारत का अमीर वर्ग सिर्फ अंग्रेजी ही सीखना चाह रहा है। पिछले दिनों बोर्ड की परीक्षाओं में हिंदी में फेल होना इस बात की गवाही देता है कि उत्तर भारतीय समाज कितने आडंबर में रहता है। हिंदी के नाम पर गाते-बजाते तो खूब हैं, लेकिन अंदर से अंग्रेजी के प्रति गुलामी ज्यादा है। इसका असर हमारे प्रशासनिक-सामाजिक विकास पर भी पड़ा है।



हाल के एक अनुभव से इसे आसानी से समझा जा सकता है। पश्चिम उत्तर प्रदेश का बुलंदशहर जिला दिल्ली से मात्र 70 किमी दूर है। नोएडा ग्रेटर नोएडा में बड़े-बड़े आवास, कॉलोनी रोड के नाम बता देते हैं कि अंग्रेजी एक एक ईंट पर लिखी जा रही है, लेकिन समाज की भाषा तो अभी वही खड़ी बोली, ब्रज, हरियाणवी बनी हुई है। क्षेत्र के खुर्जा के पास के गांव दीघी में कौशल विकास के काम की शुरुआत के बारे में कुछ लोगों ने शुरुआत करनी चाही। दिल्ली से कुछ दोस्त पूरे उत्साह के साथ वहां पहुंचे। सभी नौजवान। ज्यादातर इंजीनियरिंग पढ़कर एमबीए किए हुए, लेकिन महानगरों में पले-बढ़े होने के कारण उनका अनुभव सीमित था। गांव के लोग विशेषकर स्त्रियां, नौजवान और बच्चे पूरे उत्साह के साथ इकट्ठे हुए क्योंकि वे भी चाहते हैं कि वे अपने गांव घर में ही कुछ रोजगार का जुगाड़ कर सकें। और देखा जाए तो इसी जुगाड़ को यह कौशल विकास के नौजवान गति देना चाहते थे यानी सब की मंशा पवित्र और साफ थी।

लेकिन भाषा अवरोध का जो अनुभव हुआ, उसकी कल्पना नहीं की थी। दिल्ली के डिग्रीधारी दोस्तों ने बात शुरू की। दीवार पर सफेद बोर्ड लगाया गया। तरह-तरह की कलर की सामग्री से लिखा, लेकिन जो उनके मुंह से बातें निकल रही थीं, उसका कोई शब्द उस ग्रामीण जनता को पल्ले नहीं पड़ रहा था। वे बता रहे थे कि हम आपको 'इंटरप्रेन्योर' बनाना चाहते हैं। यह आपका 'डोमेन' है। हम आपको 'ग्लोबल मार्केट' से जोड़ देंगे। आपका स्किल चीन की टेक्नोलॉजी से जुड़ जाएगा यानी कि जो कुछ बातें थीं, उसमें अंग्रेजी के शब्द, मैनेजमेंट के खोखले नारे इतने ज्यादा थे कि एक घंटे की कवायद के बाद भी किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। जाहिर है भाषा अंग्रेजी से इतनी लदी हुई थी कि वह ग्रामीण हिस्से में नहीं समझी जा सकती थी। इन नौजवानों की मजबूरी कि दिल्ली के जिन पब्लिक स्कूलों में निकले हैं। जिन लाखों की फीस देकर इन्होंने एमबीए किया है, विदेश यात्राएं की हैं या वातानुकूल कक्ष में सेमिनार किए हैं वहां अंग्रेजी के यही जुमले और शब्दावली होती हैं और यह भारत के गांव से उतनी ही दूर होती है जो जितना धरती से आसमान।

उनको सरल भाषा में समझाने के लिए क्या भाषा में ऐसा परिवर्तन रातों-रात संभव है? जिन्होंने अपनी भाषा में पढ़ाई की है, जो उस क्षेत्र को समझते हैं, उन्होंने हस्तक्षेप करके जैसे ही एक-एक बात सरल हिंदी में उस जनता को समझाई। चेहरे खिलने लगे। सभी को रोजगार, धंधे की बातें समझ में आने लगीं। दिल्ली ने न जाने कितने ऐसे नारे जुमले अंग्रेजी में

बनाए हुए हैं लेकिन जब तक आप उस देश की भाषा के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते तब तक न आपकी कोई योजना उन तक पहुंचती, ना आपका कोई संदेश। भाषा की दूरी ने हमारे समग्र विकास को अवरुद्ध कई स्थानो में कर रखा है।

देश में लगभग बत्तीस लाख एनजीओ बताते हैं और इसमें सबसे ज्यादा उत्तर भारत में हैं। और ये सभी शिक्षा, जेंडर जैसे बैनर के अंदर चल रहे हैं। करोड़ों रुपए इनको विदेशों से भी मिलता है और भारत सरकार से भी, लेकिन इसका फायदा ग्रामीण जनता तक नहीं पहुंचता। उसका कुछ कारण है कि वे अंग्रेजी शब्दों को लेकर जनता के बीच जाते हैं। बस इतना होता है कि इनके फोटो खूब छपते हैं अखबारों में। जनता वहीं खड़ी है। गरीबी वहीं है और गांव का पलायन शहरों की तरफ जारी है। वहां पहुंचकर यह गरीब लोग भी अपने मालिकों की तरह अंग्रेजी बोलने की कोशिश करते हैं। दिल्ली की कामवाली की लड़कियां भले ही सरकारी स्कूल में पढ़ती हों, उनके पुत्र रत्न महंगी महंगी फीस देकर उनकी हैसियत के हिसाब से अंग्रेजी के स्कूल में ही जाते हैं और महंगे से महंगा ट्यूशन करने के बावजूद कहीं न पहुंचने के मकड़जाल में फंसने को अभिशप्त।

जो पक्ष यहां बयान किया गया है, वैसा ही हमारी प्रशासनिक मशीनरी में है। पिछले 20 साल के आंकड़े बताते हैं कि संघ लोक सेवा आयोग से चुने हुए आईएएस आईपीएस, अधिकारी सिर्फ अंग्रेजी माध्यम से चुने जाते हैं। यदि अंग्रेजी माध्यम से चुने जाएंगे तो क्या बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ के लोगों से उतनी सहजता से बात कर सकते हैं? आप चाहे कितने भी ईमानदार, पारदर्शी हों, लेकिन यदि अपनी बात जनता तक नहीं पहुंचा पाते, तो क्या फायदा। प्रशासन की मशीनरी में दिक्कत और भी है कि इनके बीच कोई हस्तक्षेप भी नहीं कर सकता क्योंकि वरिष्ठ अधिकारियों की हैसियत के आगे सभी मूक बने रहते हैं यानी भाषा ने भी हमारी सामंत शाही को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। यदि देश का सेवक उन ग्रामीणों की भाषा में बात नहीं कर सकता जिनकी सेवा के लिए उसे सरकार ने सारी सुविधाएं दे रखी है, तो इस पर हमें गंभीरता पूर्वक सोचना होगा। देश की शिक्षा की बुनियाद भी धीरे-धीरे इसी ने इतनी खोखली कर रखी है कि हमारे नौजवान रटी हुई भाषा में ही बात कर सकते हैं। उनका मौलिक चिंतन गायब हो गया है। दुनिया के परदे पर शोध पत्रों में और मौलिक खोजों में हमारा देश सबसे पीछे है। नई तकनीक, नई दवाएं नई खोजें पिछले 200 वर्षों से यूरोप, अमेरिका, जापान से आयात हो रही हैं। पहले चीन भी वहीं खड़ा था, लेकिन चीन ने अपनी भाषा के बूते जो प्रगति हासिल की है, उससे अमेरिका भी डरने लगा है। इंटरनेट की दुनिया में कंप्यूटर की दुनिया में जो सामग्री सबसे ज्यादा है अंग्रेजी की है 25 प्रतिशत और उसके बाद चीनी भाषा में लगभग प्रतिशत। भारत की किसी भी भाषा की गिनती तो कहीं आती ही नहीं है।

यह तो हुआ आत्मनिरीक्षण, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने अनूठे कदम उठाए हैं। देश के कुछ इंजीनियरिंग कॉलेज अपनी अपनी भाषाओं, जैसे मराठी, बांग्ला, हिंदी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू करने के लिए सहमत हो गए हैं। इसी वर्ष प्रधानमंत्री ने गुजरात के मेडिकल कॉलेज के उद्घाटन करते वक्त घोषणा की कि अब मेडिकल की पढ़ाई भी अपनी भाषाओं में शुरू की जाएगी और उसकी शुरुआत हो चुकी है। मध्य प्रदेश में सबसे पहले मेडिकल शिक्षा के लिए इस ओर कदम बढ़ाए हैं और पाठ्य सामग्री को हिंदी में अनूदित किया जा रहा है। शिक्षा मंत्रालय ने भी अनुवाद के लिए 'भाषिनी' नाम से एक प्रोजेक्ट बनाया है और उस पर तेजी से काम हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट के महत्त्वपूर्ण निर्णय को भी भारतीय भाषाओं में लाने के लिए टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट नाम से शुरुआत की है। सामाजिक न्याय और महत्त्वपूर्ण निर्णय वाले हजारों पृष्ठ का अनुवाद भी लगभग 10-12 भारत की भाषा में उपलब्ध है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण है-शिक्षा। भारतीय भाषाओं में शिक्षा की शुरुआत की घोषणा तो नई शिक्षा नीति में की गई है, लेकिन काम बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। आपको पता ही है मेडिकल परीक्षा 13 भाषाओं में शुरू हो चुकी है और ऐसा ही नौकरी की दूसरी परीक्षाओं में शुरुआत करने की कोशिश की जा रही है, लेकिन भारतीय भाषाओं के लिए दिल्ली अभी दूर है। कुछ कदम बहुत तेजी से बढ़ाने होंगे और उसमें सबसे पहला है-नौकरी में हिंदी समेत भारतीय भाषाओं को प्रमुखता देना और इसकी शुरुआत संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं से होगी तो संदेश पूरे देश की तरफ जाएगा। अखिल भारतीय सेवा परीक्षाओं में केवल सिविल सेवा परीक्षा में ही भारतीय भाषाओं में लिखने की छूट दी गई है। कोठारी कमीशन ने जब यह सिफारिश वर्ष 1979 में की थी तो पहले 15 वर्षों में लगभग 20% भारतीय भाषाओं में चुने जाते थे, लेकिन अंग्रेजी का रथ बहुत आगे बढ़ता चला गया और अब मुश्किल से 3 से 4% भारतीय भाषाओं के बच्चे चुने जाते हैं। हिंदी के लिए यह स्थिति बहुत दुखद है और इसे केवल सितंबर के महीने में भजन करने से हासिल नहीं किया जा सकता। यही हाल उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं का है। दिल्ली स्थित विभिन्न विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों में हिंदी ढूंढ़े भी नहीं मिलेगी। जिस जनता का टैक्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की पगार में जाता है, सुविधाओं में जाता है, उन्हें क्या हक है विद्यार्थियों पर अपनी बनावटी अंग्रेजी लादें। यह कमी हिन्दी प्रदेश के नौजवानों की भी है, राजनेताओं की भी जो बार-बार संविधान की दुहाई देते हैं, लेकिन भाषा के मसले पर चुप्पी साध लेते हैं। यहां तक की भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, राजस्थानी ब्रिज की बातें उठाकर लड़ाई को और कमजोर कर देते हैं। वे भूल जाते हैं जिस संविधान में हिंदी पूरे देश के लिए स्वीकृत हुई है, उससे हटना संविधान का उल्लंघन होगा। जब विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले 80 प्रतिशत हिंदी जानते हैं फिर अंग्रेजी के साथ-साथ यहां हिंदी माध्यम की सुविधा देने में कौन सा आसमान टूट जाएगा?

'आज़ादी के अमृत काल' में हम गुलामी की निशानी अंग्रेजी जितना जल्दी छोड़ दें, उतना ही अच्छा है। कोई भी आजाद देश अपनी भाषा 'अपनी संस्कृति' अपने शोध अपनी मौलिकता के आधार पर आगे बढ़ता है, दूसरों से बटोरे हुई भाषा और ज्ञान से नहीं! उम्मीद है, यह सरकार तकनीकी मदद, भारतीय भाषाओं में सामंजस्य और अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से इस मिशन को पाने में सफल होगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

बाजीगर

श्री संदीप शर्मा

शादी में आरती के बाद अभी दो-तीन गीत ही उन्होंने सुनाए थे कि बस डीजे के बटन दब गए। उनके सुर कोने में दुबक गए थे। उस्ताद ने सबको इशारा कर दिया था। बाजे वालों के ढोल एक कोने पर रखे बेंच पर अपने स्वरों को सुलाकर खुद भी सोने की तैयारी करने लगे थे। डीजे के शोर में जैसे उनके कान दुखने लगे। बाजीगर टोली के लोग इधर-उधर बिखर गए। वे दूर से शुरू हो चुके तमाशे का आनंद लेने के लिए तैयार हो रहे थे। मस्तराम और मुरलीधर मक्की के खाली खेत के एक कोने तक निकल गए। वहाँ तक डीजे की मामूली आवाज़ ही आ रही थी। मस्तराम ने बीड़ी का बंडल निकाला और एक बीड़ी मुरलीधर को पकड़ाते ही अपनी बीड़ी सुलगाकर धुएँ का छोटा-सा बादल बनाया और लंबी साँस ली, ''लो भाई, हमारा काम निपट गया।''

मुरलीधर बोला, ''अभी कहाँ निपटा? जब शराब इनके गले में उतरेगी तो दो-चार पुराने जमाने के लोगों को हम याद आ ही जाएँगे, इसलिए चिंता न कर। वैसे भी चिंता हर शादी के बाद अपना नया रूप धारण कर रही है, भाई।''

पल में ही वहाँ का दृश्य पागलपन में बदल गया था। शराब के इर्द-गिर्द सभी सभ्य मेहमान बैठ गए थे। मुरलीधर बोला, ''अब तो इसकी आदत हो गई है यह डीजे का शोर हमारे ही सामने हमारे शरीर को काट रहा हो।''

मस्तराम बोला, ''अच्छा हमें क्या फर्क है? पैसे तो हमने उतने ही लेने हैं तो फिर कोई हमारे बाजे के गीत सुने या फिर न सुने।''

''पर मेरे भाई, बात इज्ज़त की है, जहाँ इज्ज़त ही न मिले तो फिर हमारा होना न होना किसलिए''

''तू भी पागलों-सी बात करता है और क्या चाहिए तुझे? यह तो लोकगीत हमारा पुराना उस्ताद याद करवा गया और धुनें सिखा गया वरना कहीं...। अच्छा, तू चिंता न कर, तेरे लोकगीत कल सुन लेंगे। अब तू अपनी धाक तो जमाएगा, तभी तुझे चैन मिलेगा। तेरे साथ मैं तो हूँ जुगलबंदी के लिए।''

अभी उनकी बातें चल ही रही थीं कि यजमान ने एक बोतल पकड़ा दी। दोनों कोने में आ गए। दो गिलास कब घटक गए और फिर खेत के एक कोने में आ गए। वैसे भी अब यही किस्सा हर शादी में होता है। गाँव में हो या फिर शहर के किसी मैरिज पैलेस में शादी, उनका स्थान तो बस कोने में ही होता है। मस्तराम बोला, ''वैसे भी मुरलीधर, हम तो जवानी के समय से बाजे बजा रहे हैं, कोई तीस वर्ष हो गए। उन दिनों की बात तो निराली ही थी। बारात की शान हम ही होते थे। आधी रात तक माइने वाले लोग नाचते, सब बस हमारी ही बातें करते। तारीफ़ होती। तू जब सुर छेड़ता तो सब आसपास इकट्ठे हो जाते। एक के बाद एक लोक-गीत तेरे सुरीले सुरों से टपकने लगते।

कुतु ते आया रुनछुनुआ
कुतु ते आइयां दो जनीया

''याद है न तुझे, गाँव की शादियों में सजधज बरामदे में लड़कियाँ चोरी-छिपे तुझ पर नज़रें गढ़ाए रखतीं। हर कोई तेरी ही तारीफ के कसीदे कसता।''

''बस, इसी नशे ने तो अब तक डुबोया है मेरे यार। उन दिनों को याद करके अब रोना आता है। कहाँ वो दिन और कहाँ अब दुनिया को इतनी तेज़ी से बदलने की पता नहीं क्या बीमारी पड़ी है''

''भई, सब समय ने कुचल डाला है। तब हमें अपने हुनर दिखाने का शौक था। एक मस्ती थी, ईमानदारी थी और अब केवल खानापूर्ति। हमारे यजमान भी हमें भुलाकर खानापूर्ति कर रहे हैं और हम भी दो-चार गीत बजाकर खानापूर्ति। शुक्र है, हमारे बुजुर्गों ने कुछ परम्पराएँ शुरू की थीं, वरना हम यहाँ तक नहीं पहुँच पाते।''

''बस, चिंता न कर। बड़े शहरों से हमारा काम निपट गया है, अब डीजे वाले ही पूरी शादी में धुनें बजाते हैं या फिर बड़े सिंगर। ये तो इन पहाड़ों की मेहरबानी है कि यहाँ तक पहुँचने में नए जमाने को समय लगेगा।''

शादी खत्म होते ही मुरलीधर ने गले में अपना बाजा लटकाया और तेज़ कदमों से सड़क नापता भागा जा रहा था। वह भाग इसलिए रहा था कि वह अपने गाँव की ओर जाती आख़िरी बस में नहीं बैठ पाया था। बैठता कैसे? शादी ख़त्म होते ही ईनाम या शगुन में मिली दो बोतलें जो उसकी पार्टी ने ख़त्म की थीं, भला उनको ख़त्म किए बिना वे अपने-अपने घर थोड़े जा सकते थे? ढाबे पर उन सभी ने पहले इसी का तो हिसाब किया। पैसों का हिसाब तो शादी में यजमान के पैसे उनके हाथ में पकड़ाते ही उनके बुजुर्ग उस्ताद नंदू ने फट से कर दिया जो शगुनों के पैसे थे उनका भी। बस, बोतलों का हिसाब तो पीकर ही ख़त्म करना चाहिए, पर नंदू उस्ताद अपना हिस्सा सोडे की खाली बोतल में ले गया था।

जैसे ही मुरलीधर के सिर पर छा रहे अंधेरे ने उसकी आंखों की रोशनी को मध्यम किया नहीं कि उसके टाँगों ने तेज़ झोंका खाया, उसके अर्द्ध चेतन दिमाग के एक कोने में लटकी लालटेन हिंडोले की तरह झूलने लगी। वह गिरते-गिरते बचा। उसके मुँह से गाली निकल गई। कम्बख्त प्यारू ने चलते-चलते एक और डाल ही

दिया था और खाली बोतल को परे फेंक दिया था। फिर बोला था, ''भई, अब तो हम बाजे वालों की अंतिम पीढ़ी बची है। मेरे घर वाले तो कब से मना कर रहे हैं कि बस इस काम को छोड़ो, पर अब यह भी छोड़ दिया तो फिर तुम्हें पीपणी बजाने वाला कौन मिलेगा? हाँ, मर-खप गया तो फिर नरक में ही राग छिड़ेगा।''

शंभू ने भी रोना रोया -उसका बेटा कहता है कि बापू, कॉलेज में सब उसका मज़ाक उड़ाते हैं कि वह बाजे वाले का बेटा है।

मुरलीधार को याद है। समय के साथ वह भी बदल गया जब वह कोई 18 वर्ष का था तब पहली बार उसको अपने ही गांव का बैजनाथ उस्ताद किसी शादी में बाजा बजाने ले गया था, उसी ने सिखाया था। क्या बैंड पार्टी थी बैजनाथ उस्ताद की! सब नियम के पक्के जब बैजू और नंदू उस्ताद लोक गीत पर राग छेड़ते थे तो सुनने वाले मदमस्त हो जाते थे। बैजनाथ उस्ताद तो दुनिया छोड़ कर चले गए, बस नंदू उस्ताद ने पार्टी संभाली हुई है। शराब बदलते ज़माने ने बांट दी, वरना पहले सिर्फ मेहमानों के नसीब में ही होती थी। बाजे वाले तो संगीत के सच्चे भक्त होते। वे शराब को हाथ भी न लगाते, लेकिन अब वे मदमस्त संगीत को भूलकर औरों की भीड़ में शामिल हो गए हैं।

आगे चढ़ाई थी, न ट्रेन और न रास्ते में घर, स्याह अंधेरा और पहाड़ की ठंड। बाजे को कंधों पर लटकाए वह तेज़ दौड़े जा रहा है। टॉर्च जो वह हमेशा अपने थैले में रखता आया, इस बार भूल गया था। उसकी आँखें दो लट्टुओं, की तरह अंधेरे को चीर रही थीं। बस घर पहुँचते ही ये आँखें फिर से साधारण आँखे बन जाएँगी क्योंकि घर में इससे घना अंधेरा फैला होगा। दमे की मरीज़ पत्नी बिस्तर पर फैली होगी। बेटी ने सब्जी और चपातियाँ बनाकर रसोई में रख दी होंगी और छोटा बेटा अपनी किताबों में सर खपाकर उसको देखते ही सीधा मुंह करके बोलेगा कि बापू तुम फिर से पी आए?

परिवार की ख़्वाइशों का बोझा दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था और उसके लिए दो फाड़ ज़िंदगी के पुल बना रहा था जहाँ दूसरी ओर बेटी की शादी, बेटे की पढ़ाई का खर्चा और बीमार पत्नी और एक तरफ उसको मिलने वाला काम निरंतर खत्म होता जा रहा है। उनके उस्ताद ने सलाह दी थी, बोला था, ''हम ड्रेस सिलवाएँगे, इससे पंजाबियों या बाहर के बाजे वालों को टक्कर देंगे। सो ड्रेस भी बनवा ली पूरे पाँच हज़ार की बनी। रेट भी बढ़ा लिया पार्टी ने। पर फिर भी पार्टी को साइयाँ उतनी ही मिलीं जितनी मिलती रही हैं। जब ये ड्रेस डालते तो ऐसे लगता जैसे सूखे शरीरों, थुलथुल शरीरों को जबरदस्ती ढाँप दिया हो पैरों में साधारण जूते डाले, वे बड़े नाटकीय लगते पर क्या करें जिंदगी नाटक ही तो करवाती है। 4 एक साई शहर की मिल गई, शायद उनको जल्दी में चाहिए थी। अपनी ड्रेस डाल कर बारात के साथ पहुँच गए। बस मिलनी में कुछ धुनें छेड़ी कि उसके बाद डीजे ने आधी रात तक अपना शासन बनाए रखा। बस सारी बैंड पार्टी ने पैलेस की दीवारों से टकराकर पूरी रात बिताई। कई तरह के अनुभवों और समय के बदलाव की लहरों में गोते खाते मुरलीधर के छप्पर में ज़िंदगी ने नया राग छेड़ दिया।

बेटी का रिश्ता आया है। शाम को जैसे ही वह घर पहुँचा, उसको निम्मो ने यह शुभ



संदेश दे दिया, लेकिन साथ में एक और चेतावनी कि हम किसी बाजे वाले के यहाँ शादी नहीं कर पाएँगे। हमारा समधी लोगों की शादियों में बाजा न बजाए तो ही बात आगे बढ़ेगी, यह तो लड़की के संस्कार हमें आपसे जोड़ने के लिए बाध्य कर रहे हैं जो आपके ही गाँव की किसी बेटी ने हमें बताए हैं।

जब मुरलीधर को यह बात सुनिश्चित हो गई कि अब उसे उसकी मंडली के साथ जाने में परिवार का कोई भी सदस्य साथ नहीं देगा तो फिर उसने अपने गुरू की शरण ले ली। वह बोला, ''गुरू जी, अब या तो कोई और मेरी जगह ढूँढ लो, या फिर कोई मंत्र बताओ कि मैं अपना यह कीता चला सकूँ।''

गुरू ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और बोला, ''रास्ता एक ही बचा है। चोरी छिप्पे यह कार्य करना होगा, घर वालों को पता न चले, बाजा मेरे पास छोड़ दिया करो और कह दो कि तुमने अब बोटचारी का काम पकड़ लिया है, भई अब तुम दिहाड़ी भी न लगा पाओगे तो फिर क्या करोगे।''

चलते-चलते नंदू उस्ताद बोला, ''मुझसे एक वादा करो कि तुम आखिरी साँस तक अपना पेशा नहीं छोड़ोगे।''

कुछ दिन मुरली ने निकाल दिए। बाजा उस्ताद के पास छोड़कर वह चुपचाप शादियों में धुनें छेड़ रहा था। मुरली शाम को लड़खड़ाते हुए पहुँचा। आज वह दूसरे गाँव के मस्तु के पास गया था। उधर उसके घर में घमासान फैला था। बेटी आते ही बोली, ''बापू आप फिर साई पर बाजा बजाने गए थे। जब आपको मना किया है तो क्यों नही मानते, रबारनी आई थी, उसने तुम्हे शादी में बाजा बजाते देखा, वहाँ लड़के के पिता भी आए थे। हमने तो उस रबारनी को बड़ी मुश्किल से समझाया कि तुम बस आखिरी बार गए थे क्योंकि तुम्हारे बाजे वाले किसी साथी को उस वक्त गंभीर बीमारी थी''

मुरली के पास अब कोई जवाब नहीं था। सबकी बेइज्जती हो रही है। लड़के वाले उससे यह काम छुड़वाना चाहते हैं। उनका मान मेरे इस काम से घटता है। वैसे भी तो वह मिस्त्री ही है। खेती-बाड़ी से कमाई होती तो पूरा गाँव ही अमीरों का हो जाना है। ये कोई पंजाब के खेत नहीं। पहाड़ की माटी नई उम्मीदों के बहकावे के हिसाब से अन्न नहीं पैदा करती। आखिर अब उसका बाजा लंबे आराम के लिए चला गया था। बेटी की शादी हो गई, कुछ उधार भी लिया, पत्नी ने अपने आधे गहने भी बेटी के नाम कर दिए। बेटी की शादी के बाद मुरलीधर के शरीर की तहों में दुबके स्वर एक शाम फिर उभर आए, ''पड़ोसी गाँव से देखो तो माइने बजाने आए बाजे वालों की क्या जुगलबंदी है, यहाँ तक सुर साफ़ सुने जा रहे हैं भई कोई अच्छी पार्टी होगी।''

पत्नी ने हूँ में जवाब दिया और बोली, ''वैसे आपकी पार्टी में अब आपकी जगह पर कौन है?'' बस मुरलीधर को पुरानी पगडंडी ने पुकार लिया था। दूसरी सुबह मुरलीधर एक बार फिर नंदू उस्ताद के पास था।

मुरलीधर के हाथों में एक बार फिर बाजा लटक रहा था। उसे ऐसे लग रहा था जैसे उसके पूरे शरीर में खुशी की तरंगें फूट पड़ी थीं। ब्रास का बाजा वह पूरे दिन चमकाता रहा था। उसके मुँह से जैसे सुर फूटने को बेकरार हो रहे थे।

आप सबका भारतीय रेल के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

ईमेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री लेख की जानकारी ईमेल से दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

शर्तें लागू



एक शाम अकेली–सी

सुश्री कल्पना मनोरमा

अभी दीवाली के दिन आये नहीं थे, हवा में ठंडक आ गयी थी। लोगों को कहते सुना था कि ये बदलाव प्रकृति के समृद्धशाली होने का सूचक ही कहा जाएगा। मतलब कोविड–19 महामारी दुनिया जहान को तहस–नहस करने पर तुली थी, वह प्रकृति पर मेहरबान है? मेरा मन मानने को राजी नहीं था लेकिन मेरी मान्यताओं से क्या होता है? क्या सच में कुछ अच्छा हो रहा था तब? हमारे इर्दगिर्द जिसे हम देख नहीं पा रहे थे। वैसे अभी तो ये आते हुए सितम्बर की शामें थीं और बहती हुई सर्दीली हवा में झुरझुरी उठाने वाली खुनक दौड़ पड़ी थी। मैंने अपने उम्र के प्रथम पड़ाव में लोगों को खूब कहते सुना था कि मौसम में अचानक बदलाव आना चिंताजनक होता है। अचानक बदालव चाहे प्रकृति में हो या मनुष्य के स्वभाव में सच में हजम नहीं होता।

पुराने लोग जानते थे कि प्रकृति कभी भी अपनी चाल में जल्दी–जल्दी बदलाव नहीं करती और जब करती है तो निश्चित ही कुछ अघटित घटता है। अभी मैं सोच ही रही थी कि एक ठंडे झकोरे ने मेरे मन को छुआ और मेरा मन हुआ कि एक मोटा खादी का दुपट्टा ओढ़ लें। चाय का कप बाउंड्री वाल पर टिकाकर मैं अंदर गयी और झटपट दुपट्टा लेकर कंधों पर लपेट लिया। उस दिन बहुत दिनों के बाद बेमतलब बालकनी में आने का मन हो गया था। चारों ओर नहाए–धोये से पेड़–पौधे खुशी में झूम रहे थे। सड़कें काली नागिन–सी सोई पड़ी थीं। एक निर्मोही मौन अपनी आगोश में समस्त वातावरण को समेटे हुए लगा। वृक्षों को झूमते देखकर लग रहा था मानो कोई प्रकृति प्रेमी गायक संगीतमय स्वर आलाप रहा हो। कोरोना महामारी ने आदमी को कितना ही दुःख क्यों न दिया हो लेकिन प्रकृति को बड़ा संतोष प्रदान किया था क्योंकि मदमाते हरे–भरे वृक्ष और उनकी शाखों पर चहकते पंछियों का कलरव सुनकर लगने लगा था कि वे अपने खुशहाल जीवन की कहानी सुना रहे थे।

बालकनी की एक दीवार पर चढ़ी इतराती मधुमालती की बेल की हौंस देखकर भला कौन कहता कि ये दुख और बंधन का समय था। गुलाबी और भूरी आभा लिए फूलों से अपना आँचल भरे मधुमालती हमारे घर का एक कोना सौन्दर्य से भर चुकी थी। उस दिन मुझे दीवार के पास देखकर मालती की एक लतर ने मेरे काँधे पर धप्पा मारा। मुड़कर मैंने उसे छूने को हाथ बढ़ाया तो हरी–हरी किलकारी मारकर दूर भाग गयी। जैसे कोई अबोध बालक माँ की पीठ को छू कर खेल रहा हो। अभी उसकी महकती मनुहार से मन रोमांचित हो ही रहा था कि आसमान की ओर दृष्टि चली गयी। महानगरीय आसमान पर पंछियों की कतारें तो नहीं फिर भी काफी पंछी अपने नीड़ों की ओर उड़ान भर रहे थे। इक्का–दुक्का गौरैयाँ अभी भी घरों के इर्दगिर्द फुदक–फुदक कर खेल में मगन थीं। शायद उनके घोंसले वहीं कहीं आसपास के घरों में ही होगें। तभी उनके खेलों में इतनी निश्चिंतता दिख रही थी।

खैर, सांझ का लाल मुखमंडल देखकर लग रहा था कि सूरज अस्ताचल की ओर मुखातिब हो चला था। पश्चिम की ओर

क्षितिज पर देखकर लगा किसी स्त्री ने चूल्हे में एक साथ ढेर सारी लकड़ियाँ जला दी थीं। जिनमें मानो कोई किसान बाला भुट्टे भून रही थी और लालिमायुक्त रेशमी गुनगुनाहट के साथ धरती तक सुनहरी परत पसरती जा रही थी। आकाशमार्गी जीव पश्चिम की ओर उड़ान पर थे। पक्षी हमेशा सूरज के इशारों पर सोते और जागते हैं। जहाँ पश्चिम दिशा गुलजार होती जा रही थी वहीं पूरब की ओर सन्नाटा पसरता जा रहा था। संध्यारानी ने अपने स्लेटी आँचल को कंधे से गिरा दिया था। लहराता हुआ आँचल कब रात्रि में बदल गया पता न चला। हवा वृक्षों की फुनगियों से उलझ-उलझ कर बहनापा दिखा रही थी। माथे पर पड़ी लटें उड़कर चेहरे को थपक रही थीं।

अभी मन साँझ की मनोरम झांकी में निमग्न ही था कि इतने में हवा के एक कोमल झोंके पर सवार होकर मेरा मन छुटपन वालीं छलाँगें मारता हुआ महानगर से दूर उत्तर प्रदेश की औरैया तहसील में बसा एक हरा-भरा कमल पत्ते-से गाँव अटा जा पहुँचा। वहाँ यह समय मक्की की आखिरी खेप आने का होता था। बरसात, कांस को बूढ़ा बनाकर विदा हो चुकी होती थी। बम्बा और कूलों पर फूल-फूलकर लम्बी घास सहर्ष मौसम के बदलाव को स्वीकार कर चुकी होती थी। लेकिन खेतों की मिट्टी में वर्षा की नमी वैसे ही बची रहती थी जैसे बचत खोर स्त्री की मुट्ठी में पैसे। जिसके साथ मिलकर पवन मौसम में ठंडक घोलने लगती थी।

बरसात के दिनों में चूने से पुती दीवारों पर जमी काई धूप लगने से चटकने लगती थी। दिन सुनहरे और रातें ओस से भरीं होने लगती थीं। दिनभर गुनगुनाहट में घर की चीज-सामान सुखाये जाते और रात में चंद्रमा की झरती चाँदनी में प्रकृति का मन ओसीले मोतियों से भर जाता था। गाँव में इन दिनों की शामों में कुछ लोग भोजन करते और कुछ भुट्टे भुनवाकर खाते थे और चौपालों में बैठकर मनमानी बतकही का रस लिया करते थे। हम कितना भी गाँव को भूल जाएँ लेकिन हमारी जड़ों में वह कुंडली मार कर हमेशा बैठा रहेगा। गाँव में हम कितनी भी भौतिक सामग्री का संग्रह कर लें लेकिन उसके तो अपने ही रँग-रूप होते हैं। कितने भी शहर वाले वहाँ आयें-जायें पर गाँव किसी की नकल नहीं करता। वह तो अपने रंग में सभी को रंगने का माद्दा रखता है। गाँव को शहरी कालीनों में उतनी खुशी नहीं मिलती जितनी कि आम के बागों में गुल्ली-डंडा खेलने में और बरगद की छतानारी छाँव में अपनी तीन पीढ़ियों को कहानियों सुनाने और अपने अनुभवों के लेन-देन में। वह इतने चाव से ये कार्य करता है कि दूर से देखने वालों को लगने लगता है कि गाँव बड़ी जरूरी चर्चा में व्यस्त है।

मेरा बचपन भी एक हरे-भरे समृद्ध गाँव में बीता। हमारी यादों में आम की मिठास, नीम की कडुआहट, उसकी निबौलियों के जेवर और कीकर की जलेबियों के ढेरों ढेर किस्से ज्यों के त्यों बसे हैं। बचपन वाला घर गाँव के बाहरी सिरे पर आम के बड़े-से बाग के पास बना है। बड़े से फाटक के भीतर लान में पड़े तखत पर बैठ कर मैंने भी शाम को खूब भुट्टे खाने का आनन्द लिया था। लान में लगे अशोक, गुलमोहर, अमरूद, हरसिंगार, कनेर और घर के आस-पास नीम-आम के बड़े-बड़े पेड़ जिनकी डालियों पर साँझ होते छोटे-बड़े सभी तरह के पंछी बसेरा लेते थे। वैसे तो छोटे पंछी न के बराबर दिखते थे शायद वे अपने घोंसलों में या शाखों के दुबग्घे में छिपकर सोते होंगे इसीलिए सांझ की स्याही में सिर्फ मोर ही ऊँची डालियों पर निडरता से बैठ कर आकाशीय ऊँचाई का आनन्द लेते दिखाई पड़ते थे। पंछियों के संध्या विश्राम के बाद जितनी देर मटमैला उजाला रहता वे चुपचाप मजबूत डाली पर उछल-कूद करते



रहते और जैसे ही सूरज ने अपनी आँखें मूँदी सभी मौन हो जाते। सिर्फ मोर अपने झबरीले पंखों को हिला-हिलाकर मेहों मेहों की गुहार लगाकर संझाती गाते। जैसे ही मोरों ने अपने श्याम को पुकारा वैसे ही हमारी माँ ने ठाकुर जी के आगे दिया जला दिया और ॐ जय जगदीश हरे... की आरती गाना प्रारम्भ कर मेरे बचपन को सानंद बना दिया।

बचपन में साँझ की आरती और रात्रि भोजन हम सब एक साथ करते थे इसलिए आरती में माँ-बाबूजी, दादी और छोटा भाई सब शामिल होते। मेरा काम गरुण घंटी बजाना था। आखिरी में माँ तुलसी को आरती दिखाकर परिवार के लिए सुख-समृद्धि माँगतीं। वे तुलसी बिरवे के आसपास घूम-घूमकर अपनी सारी थकान वहीं तुलसी चौरे पर छोड़कर रात्रि भोजन की तैयारी में जुट जाती थीं। हाँलाकि त्रिकाल संध्या हम मनुष्यों से ज्यादा तत्परता से अबोले करते हैं। संध्या वंदन सारे पंछियों की आदत होती है लेकिन मोरों की तीखी आवाज में नन्हीं आवाजें दबकर रह जाती हैं। जैसे किसी सबल मानव के आगे निबल की। जब सबलता निबलता के बारे में जानना चाहा तो माँ ने ये बात बताई थी।

निर्मल आकाश के नीचे तुलसी के पास जलता छोटा-सा दीया मेरे मन में अपार श्रद्धा भर जाता था। गाँव के नीम अँधेरे में लघु दीपक की आभा मुझे किसी दूधिया जगमगाते बल्ब से कम नहीं लगती थी। दिन के उस पहर तक आते-आते माँ भी अपने बालों को ठीक से चोटी में गूँथ लेती थीं। माँ के चमकते गोल चेहरे पर लगी कत्थई बिंदी मेरे मन को प्रेमिल सुरक्षा के भाव से भर जाती थी। उस समय मुझे अपनी माँ बेहद खूबसूरत लगती थीं। आरती-भजन के बाद सभी अपने काम में लग जाते लेकिन मैं थोड़ी देर और झुटपुटा होने का इन्तजार करती और वहीं तखते पर जमी रहती क्योंकि उन दिनों मुझे तारों से भरे आसमान और टूटते तारे देखने का चस्का-सा लग गया था। मेरी सहेलियों ने बताया था कि टूटते तारे से जो मांगो वह पूरा हो जाता है इसलिए ये गतिविधि तब और जोर पकड़ती जब मेरे इम्तहान नजदीक आने को होते। मैं घंटों तारा टूटने का इंतजार करती यदि भाग्य से तारा टूटा तो मन्नत माँग भी लेती और पूरी भी हो जायेगी ये संकल्प भी कर लेती। वैसे भी सारा खेल हमारी मान्यताओं का ही तो होता है। हम जिसके बारे में जैसा सोचते हैं हमारा मन उसे वैसा ही मानने लगता है।

खैर, घर के आस-पास विशाल वृक्षों का घेरा और उन्हीं में किनारे-किनारे चुआ हरे रंग के लम्बे-लम्बे बाँसों के बड़े-बड़े झिरे होते थे। लेकिन मैंने बहुत बार सोचा और देखा था कि पक्षी सभी प्रकार के वृक्षों पर अपना घोंसला बनाते हैं लेकिन बाँसों में कभी नहीं। जबकि उनकी लम्बाई बेशुमार होती है। उनपर चढ़कर तो दूर तक देखा जा सकता है। फिर भी उनके बीच बिरला ही पंछी अपना नीड़ सजाता था। बल्कि हवा भी उनके बीच से निकलने की कोशिश करती तो वह भी चीख उठती और शाम की नीरवता में तीखी आवाज वातावरण में फैल जाती। अब बाँस महाशय को ये बात कौन बताये कि आप की ऊँचाई से कोई प्रभावित होने वाला नहीं है क्योंकि जीव ऊँचाई से नहीं अपितु विनम्रता से अपने बनते हैं। सामने वाले को गले मिलने के लिए जब तक आप अपने हाथों को आगे नहीं बढ़ाओगे, कोई आपके पास फटकेगा नहीं। भूलने को क्या! भूले रहो अपने बड़प्पन में अकेले-अकेले। चाहे पेड़ और पंछियों का रिश्ता हो या मानवीय, सभी को कुछ अलग-सा चाहिए। कुछ प्रेमिल-सा क्योंकि स्नेहिल बातें दूसरे मन को बतानी नहीं पड़तीं। बल्कि उन बातों को दूसरा मन बिना बोले ही महसूस कर लेता है लेकिन ये बात बाँस महाशय नहीं समझते वे तो बस ऊँचे उठने की होड़ में अपने अगल-बगल किसी की ओर देखते तक नहीं। पादप की इस जाति से जुड़ी बातों ने मेरे बचपन के मन को खूब मथा था लेकिन समझ अब सकीं।

ग्रामीण जीवन की नीरव रातों के शांत वातावरण में तीखी आवाज के रूप में यदि कुछ सुनाई पड़ता है तो पंछियों के कंठ की कोरी और निर्लिप्त पुकारें या गायों का बछेरुओं के लिए भावुक होकर रंभाना। गाँव की रातें इतनी काली होती हैं जैसे नौसिखिया माँ ने अपने बच्चे की आँखें काजल से भर दी हों और वह बच्चा जिधर देखता है उसे सब काला-काला ही दिख रहा होता है। मुझे रात के गहरे सन्नाटे हमेशा ही डरावने लगते आये हैं। कृष्णपक्ष की रातों में माँ एक लैम्प, लालटेन या एक मिट्टी के तेल का दीपक देहरी पर जलाकर हमेशा रखती थीं। फिर भी मुझे घर अँधेरे से भरा-भरा ही लगता रहता था। और इस लगने में मुझे डर के साथ-साथ थरथराहट भी बहुत होती थी। न जाने भूत का भय मुझे कितना सताता था। वहीं गाँव में जब शुक्लपक्ष के चन्द्रमा का आगमन होता तो चाँदनी की अठखेलियाँ किसी भी युवामन को रोमांचित कर जातीं। चाँद की दूधिया रोशनी इतनी तरलता से हमारी छतों पर पसरती कि लड़कियाँ खूब गुटके खेलतीं और यदि कोई करना चाहे तो चावल भी साफ कर सकता था। गाँव की रातों के सन्नाटों में दरवाजों की खुलन और झिंगुरी की झनझनाहट या पेड़ों पर बैठे पखेरूओं की बोली किसी संगीत से कम नहीं लगती। मुझे आज भी गाँव की गहरी काली रातों में जब एकाएक पंछियों की आवाजें सुनाई पड़ती हैं तो मेरा छुटकू-सा मन माँ के आँचल में दुबक जाना चाहता है आज इस महामारी की वजह से गाँव कितना बदला होगा नहीं पता लेकिन नीम सन्नाटे जरूर शहरों के हिस्से आ पड़े हैं। पाँच सितम्बर दो हजार बीस की अकेली-सी शाम में यही कुछ महसूस हुआ।

सूचना

'भारतीय रेल' पत्रिका में लेखक के नाम के साथ प्रकाशित हुए लेख (फोटोग्राफ के साथ) लेखक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटोग्राफ्स से संबंधित कॉपी राइट्स के उल्लंघन तथा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद के लिए लेखक संपूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। रेल मंत्रालय या संपादकीय टीम किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी। लेख में व्यक्त किये गये विचार लेखक के निजी विचार है इससे संपादक मण्डल का सहमत होना जरूरी नहीं है। – *संपादक*

अपना ज्ञान टटोलें

1 **क्या प्रतीक्षा सूची वाले टिकट के साथ यात्रा की जा सकती है?**

(क) हां, स्टेशन मास्टर की अनुमति से (ख) हां (ग) नहीं (घ) हां, टीटीई की अनुमति से

2 **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किस रेलवे स्टेशन से 100वीं किसान रेल का उद्घाटन किया?**

(क) संगोला, महाराष्ट्र (ख) वरेथा, गुजरात (ग) वडनगर, गुजरात (घ) वेरीनाग, जम्मू

3 **भारतीय रेल के कुश्ती खिलाड़ी श्री बजरंग पूनिया को किस वर्ष पद्मश्री अवॉर्ड दिया गया?**

(क) 2020 (ख) 2019 (ग) 2021 (घ) 2018

4 **भारतीय रेल की खिलाड़ी सुश्री विनेश फौगाट को किस वर्ष 'राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार' दिया गया?**

(क) 2020 (ख) 2019 (ग) 2021 (घ) 2018

5 **1855 में बने विश्व के सबसे पुराने भाप के रेल इंजन का नाम बताइए जो अब भी परिचालित है?**

(क) फ्लाइंग स्काट्समैन (ख) डेक्कन फेयरी (ग) डेक्कन क्वीन (घ) फेयरी क्वीन

6 **प्रत्येक आरक्षित टिकट पर एक अनोखा नंबर अंकित होता है, जिसे पीएनआर कहते हैं। यह कितने अंकों का होता है?**

(क) 11 (ख) 10 (ग) 15 (घ) 14

7 **भारतीय रेल के किस क्षेत्रीय रेलवे का मुख्यालय बिलासपुर में स्थित है?**

(क) पश्चिम रेलवे (ख) दक्षिण रेलवे (ग) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (घ) पूर्व रेलवे

8 **उत्पादन की दृष्टि से किस निर्माण इकाई द्वारा विश्व में सर्वाधिक रेल डिब्बों का निर्माण किया जाता है?**

(क) आईसीएफ, चेन्नई (ख) एमसीएफ, रायबरेली (ग) बीएलडब्ल्यू, वाराणसी (घ) आरसीएफ, कपूरथला

9 **डीएफसी का फुल फॉर्म क्या है ?**

(क) डेडीकेटेड फॉरेन कॉरिडोर (ख) डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (ग) डेडीकेटेड फ्रेट कार्पोरेशन (घ) डिवाइडेड फ्रेट कॉरिडोर

10 **भारत हाई स्पीड रेल (बुलेट ट्रेन) का निर्माण किन दो शहरों के बीच कर रही है?**

(क) मुंबई एवं चेन्नई (ख) दिल्ली एवं मुंबई (ग) दिल्ली एवं वाराणसी (घ) मुंबई एवं अहमदाबाद

1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख) 6. (घ) 7. (ग) 8. (क) 9. (घ) 10. (ख)

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



HIGH PERFORMANCE PRODUCTS. ON TIME. EVERY TIME.

IRIS® CERTIFIED



Fluid Controls Private Limited has over 45 years of experience in engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS – ISO/TS 22163:2017), Aerospace AS9100 and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

WE HAVE
PERFORMANCE

45+ YEARS OF EXPERIENCE • IRIS & AS9100 CERTIFIED
IN-HOUSE R&D • OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोय
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विज़िट करें
www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यूआर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद देय - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (यदि हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में) नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथबा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें :

व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,

टेलिफोन : 011-233822531, 23303665, 23304456

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

आई.एस.एस.एन. 2457-0001

INCREASE PRODUCTIVITY THROUGH OUR PORTAL WHEEL LATHE



UNIQUE FEATURES

1. Automatic Roll through arrangement to increase productivity.
2. Electronic wear measurement System
3. Rigid Portal frame
4. CNC system with operator- friendly Screen
5. Fully Enclosed with Enhanced Fume Extraction
6. Equipped with Industry 4.0 Features.

hyt

HYT ENGINEERING CO. PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg, I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad, Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**